मारवाड़ के ग्राम-गीत

...म. आर. ए. एस.

...जपूत...

...क

...मन्दिर,

...र, जोधपुर

मारवाड़ी म...

दशहरा सं० १९८६ वि० [मूल्य १)

Marwar ke मारवाड़के ग्राम-गीत Gram Git

Folk-Songs of Marwar

(RAJPUTANA)

सम्पादक

मारवाड़ राज्यका इतिहास, भारतीय नरेश, राठोड़ राजवंश,
वीर दुर्गादास राठोड़, भक्त मीरांबाई, महाराजा सर प्रताप
राजस्थानके छत्तीस राजवंश, राजपूत कौन हैं ? क्या
राजपूत अनार्य हैं ?, क्या जयचंद्र देशद्रोही था ?
महात्मा देवीदान संन्यासी, मारवाड़के रीतरस्म
आदि पुस्तकों के रचयिता

विद्याविनोद

श्रीजगदीशसिंहजी गहलोत एम. आर. ए. एस.

जोधपुर-राजपूत...

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य मन्दिर,

घंटाघर, जोधपुर

पहला संस्करण] दशहरा सं० १९८६ वि० [मूल्य १।]

मारवाड़के ग्राम-गीत

Opinions of learned persons of repute about the book.

पुस्तक के विषय में कुछेक भारत विख्यात विद्वानों की सम्मतियाँ

सुप्रसिद्ध मर्मज्ञ ऐतिहासिक विद्वान
महामहोपाध्याय रायबहादुर
श्री गौरीशंकर हीराचन्दजी ओझा
सुपरिन्टेन्डेन्ट, गवर्नमेन्ट म्यूजियम, अजमेर.

महामहोपाध्याय
रायबहादुर गौरीशंकर
हीराचन्द ओझा.

अजमेर.
ता० १२।१०। ।२९

श्रीयुत जगदीशसिंह गहलोत ने 'मारवाड़ के ग्रामगीत' प्रकाशित कर राजपूताने के इस पुराने साहित्य की बड़ी सेवा की है। ग्रामगीत बड़े रोचक होते हैं इतना ही नहीं किन्तु वे वीर रस के शृंगार के तथा सामाजिक रीतिरिवाज आदि के प्रदर्शक होते हैं। ऐसे प्राचीन गीत दिन दिन लुप्त होते जाते हैं इसलिये उनका संग्रह कर प्रकाशित करना परमावश्यक है। उनका संग्रह इतना बड़ा मिलता है कि उनके संग्रह से ऐसी ऐसी कई पुस्तकें बन सकती हैं। मारवाड़ के ही नहीं किंतु राजपूताने के अन्य राज्यों के एवं बाहर के अनेक प्रदेशों के ऐसे गीतों का प्रकाशित होना भी आवश्यक है। श्रीयुत गहलोत ने यह पुस्तक प्रकाशित कर दूसरों के लिये पथदर्शकता का काम किया है। पुस्तक रोचक होने के कारण जनता इसका यथेष्ट आदर करेगी ऐसी आशा की जाती है। संपादक का प्रयत्न सराहनीय है।

अजमेर
ता० १२-१०-१९२९ ई० }

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

Dr. Suniti Kumar Chatterji M. A., D. Litt. (London)
Khaira Professor of Indian Linguistics and Phonetics Lecturer in English & Comparative Philology and Fellow University of Calcutta.

"......I think your collection is conceived in a proper Scientific as well as literary spirit. Their range is quite wide, and from your book a good idea of the songs and ballads that enter so much in the life of people can be formed. The notes and the introductions will be useful. Some of the things in your selection are beautiful... Students of Indian Philology and Indian literature must thank you for giving them this collection, which has a value from various aspects Social, Ethnological, Linguistic, Historical. I hope your book will be well received in scholarly as well as popular circles, aad this will induce you to go on with your collections and publish more of the popular songs and other compositions current in the country side before the changing spirit of the times completely kills them off........."

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी साहित्य और भाषा-विज्ञान के अध्यापक साहित्याचार्य्य श्रीयुत डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी

एम० ए०, डी० लिट्, पी० आर० एस.

"मेरी सम्मति में आपने यह मारवाड़ी गीतों का संग्रह बड़ी सावधानी से तथा समुचित साहित्यिक रीति से किया है। इस संग्रह में जितने गीत हैं उनके विषय काफ़ी व्यापक हैं और उन्हें पढ़ कर मारवाड़ प्रांत के ग्राम-गीतों का अच्छा ज्ञान हो सकता है। यही नहीं उनका वहाँ के ग्राम निवासियों के जीवन में क्या महत्व पूर्ण स्थान है इसका भी पता लग सकता है।

संग्रह तो अच्छा है ही, किन्तु उसमें जो गीतों के परिचय तथा टिप्पणियां हैं उनसे पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है।........ हिन्दुस्थान के भाषा तत्वज्ञों तथा साहित्यज्ञों को यह संग्रह बड़े काम का सिद्ध होगा, क्योंकि यह कई प्रकार से उपयोगी है। समाज शास्त्र, मानव-विज्ञान, भाषा-विज्ञान तथा इतिहास इन सभी दृष्टियों से भारतीय साहित्य का अध्ययन करने वाले इस पुस्तक से लाभ उठावेंगे।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि आपके इस सदुद्योग का विद्वान समुचित आदर करेंगे और साधारण जनता का भी इससे मनोरञ्जन होगा। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार उत्साहित होकर आप इस ढंग के ग्राम जीवन से सम्बन्ध रखने वाले गीतों तथा अन्य इसी प्रकार के प्रचलित साहित्य का सम्पादन करेंगे जिससे आज कल की अवहेलना पूर्ण प्रवृति से ऐसे अमूल्य साहित्यिक-भण्डार की रक्षा होगी।"

G. S. P. No. 1461-36-3-31-10,000 R.

4861

No. J. P. 2. C. 4 8. 1-2.

From

The Vice President

OF STATE COUNCIL,

JODHPUR.

To

Mr. Jagdish Singh Gahlot, M.R.A.S.,

Antiquarian & Research Scholar,

JODHPUR.

Dated Jodhpur, the 17th June 1931

Dear Sir,

With reference to your presentation of a copy of the Folk-songs of Marwar (Marwar-ke-Gram-git), I am to inform you that His Highness the Maharaja Sahib Bahadur has been pleased to approve of the recommendations of the State Donation Committee for the grant of Rs.100/- (Rupees one hundred only) to you in appreciation of the useful contribution your publication makes to the study of folklore - an interesting and important branch of literature, yet almost unexplored so far.

Yours truly,

[signature] M.A., LL.B.
R.B.,
Vice President,
State Council.

M. R. M.

[initials] 17.6.31.

(अनुवाद)

राव बहादुर ठाकुर चैनसिंह एम. ए., एल. एल. बी. आफ़ पोकरन
वाईस प्रेसीडेन्ट स्टेट कोन्सिल, राज मारवाड़ जोधपुर
बनाम मिस्टर जगदीशसिंह गहलोत एम. आर. ए. एस.
इतिहासवेत्ता व अन्वेषक (रिसर्च स्कालर) जोधपुर
चिट्ठी नं० ४८६१ एफ़. पी० ता० १७ जून १९३१ ई०

प्रिय महाशय !

आपने ग्रामगीत नाम की जो पुस्तक भेंट की उसके लिये श्रीमान हिज हाईनेस महाराजा साहब बहादुर ने प्रसन्न हो कर राज्य की पुरस्कार समिति की सिफ़ारस से आपको १००) एक सौ रुपये का पुरस्कार देने की आज्ञा दी है। आपने यह उपयोगी पुस्तक सम्पादन कर मारवाड़ के ग्राम साहित्य के एक ऐसे महत्व पूर्ण व मनोरञ्जक अङ्ग की पूर्ति की है, जिस की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया है और जिस साहित्य क्षेत्र में प्रायः किसी ने अब तक प्रवेश भी नहीं किया है। यह देखते हुए आपका यह कार्य्य प्रशंसनीय है।

——*——

सुप्रसिद्ध देशभक्त कुँवर चांदकरण शारदा
बी. ए., एल एल बी., एडवोकेट, अजमेर

जिस प्रकार जरवाइनस, डाऊडन, डाइटन (Jirvinus, Dowden, Deighten) इत्यादि विद्वानों ने टीका लिखकर शेक्सपीयर के नाटकों का वह रहस्य दिखलाया जिसका किसी को पता तक नहीं था। उसी प्रकार इसके सम्पादक महाशय ने मारवाड़ी के सुन्दर रसीले गीतों की मधुर व्याख्या कर मारवाड़ी साहित्य की शोभा बढ़ाई है। मैं गहलोतजी को बधाई देता हूँ। मारवाड़ी गीतों के रसिक जन इससे अवश्य आनन्द उठावें।

हिन्दी साहित्य के महारथी लेखक, सम्पादकाचार्य प्रसिद्ध समालोचक

श्रीयुत पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी

"...ग्रामगीत साहित्य की मूल्यवान शाखा है जिस को हम क़रीब क़रीब भूल ही से गये थे। और इस विचार से आपकी पुस्तक विशेष रीत से उपयोगी है।......... आपकी इस रचना के लिये मैं आपको बधाई देता हूँ और सफलता चाहता हूँ।..."

गीतों की सूची

विषय पृष्ठ

विषय — पृष्ठ

कुल पृष्ठ २१७

राजिया के सोरठे

राजिया के सोरठे मारवाड़ी भाषा में अपूर्व रत्न हैं इनमें आपको राजनीति, धर्म, समाज-सुधार, शिक्षा आदि अनेक विषयों पर सरस तथा अनेक भावों से पूर्ण सोरठे मिलेंगे। भूतपूर्व रेजीडेन्ट, जोधपुर कर्नल पावलेट ने राजिया के सोरठों पर मुग्ध होकर उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया था। वे कहा करते थे कि "यह मारवाड़ी भाषा में अमूल्य रत्न है।" महाराजा मानसिंह ने राजिया को सम्बोधित करते हुवे कहा है—

सोने री सेजाँह नग कण सूं जड़िया जकै।
कीन्हों कविराजाँह, राजा मालम राजिया॥

अर्थात् हे राजिया! तेरे पद्य मोतियों से जड़े स्वर्णाभूषणों के समान हैं, जिनके प्रताप से चारणों में रईशों में ख्याति पाई है।"

वास्तव में राजिया के सोरठे ऐसे ही अलभ्य रत्न हैं। मारवाड़ में राजा से रङ्क तक इन सोरठों को बोलते पाये जाते हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने उन्हीं विखरे हुये रत्नों को बटोर कर पुस्तकाकार "राजिया के सोरठे" प्रकाशित किये हैं। पुस्तक क्या है, यह आप देखकर ही अनुमान कर सकेंगे। हमने बहुत मेहनत और ख़र्च के पश्चत् इस पुस्तक को तय्यार किया है। पाठकों के समझने के लिये प्रत्येक सोरठे के नीचे सरल हिन्दी भाषा में उसका अर्थ भी लिख दिया है। आशा है आप इनका रसावादन करने का अवसर हाथ से न जाने देंगे। मूल्य केवल ≡)॥ साढ़े तीन आना मात्र प्रचारार्थ रखा गया है।

पता—

हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर।

मारवाड़ के ग्राम गीत

[Folk-songs of Marwar]

(भूमिका)

Let me make the songs of a nation,
I care not who make its laws.

—Fletcher of Saltoun.

क अंगरेज़ी का कवि कहता है कि यदि मुझे किसी भी देश के जातीय गीतों की रचना करने का सौभाग्य मिले तो फिर मैं इस बात की ज़रा भी परवाह न करूँ कि उस देश के राज्य-शासन सम्बन्धी क़ायदे-क़ानून कौन बनाता है। उस कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी देश में लोगों के स्मृति-भण्डार में हर्ष-शोक, प्रेम-द्वेष, संयोग-वियोग आदि भिन्न भिन्न विषयों के जो मार्मिक गीत गड़े रहते हैं और जो अनुकूल अवसर पाकर उनके हृदयों से स्फुरित हो कर गान रूप में निकल उठते हैं उनसे जातीय जीवन की पूरी झलक मिलती है। यही नहीं यदि किसी कवि में विभिन्न भावों की जीती जागती भाषा में प्रकट करने की शक्ति हो तो वह

अपने गीतों के द्वारा अपने देश वालों के दिलों में एक नया जीवन पैदा कर सकता है।

गाँव की साधारण स्त्रियाँ भी शादी, मेले, जन्मोत्सव आदि मंगल अवसरों पर ऐसे गीत गाती हैं, जिनमें मंगल मधुरता भरी पड़ी है और जिनसे स्त्री जाति का पातिव्रत्य धर्म, वियोगिनी की व्यथा आदि का परिचय मिलता है। इसी प्रकार देहात में ग्वाले, धोबी तथा अन्य उस श्रेणी के लोग जिनके प्रति दिन के धन्धों को देख कर हम सहसा उन्हें बिल्कुल ही शुष्क हृदय समझने लगते हैं, उनके दिलों में दिन भर की कठिन मेहनत से थक जाने पर जिस समय मनोवेग उमड़ते हैं उस समय वे अनगढ किन्तु भावपूर्ण भाषा में जो गीत गाते हैं उन्हें यदि हम सुनें तो ग्राम गीतों का असली स्वरूप देख पड़ने लगता है। क्योंकि यह प्रकट हो जाता है कि जिसे पढ़े लिखे लोग साहित्य मानें बैठे हुवे हैं उसमें शाब्दिक सज-धज तथा गहन से गहन विषयों की काट छाँट क्यों न हो पर उससे बहुधा देश के जीवन का तथा देशवासियों के हृदय के भावों का पता नहीं लगता। इन ग्राम्य-गीतों में कृत्रिम नागरिक जीवन का वर्णन नहीं होता, किन्तु गाँव वालों के दिन प्रति दिन की साधारण से साधारण घटनाओं तथा अनुभवों का हृदयग्राही चित्र रहता है।

हमारे देश का अधिकतर भाग गाँव वालों से भरा है और प्राचीन सभ्यता तथा आदर्श के बचे खुचे स्मारक चिन्ह इन्हीं

गीतों में सुरक्षित है। आज कल जब कि पश्चिम से आये हुवे आचार विचार तथा वेष-भूषा के झोंके में यह भय है कि कहीं हमारा पुराना सामाजिक जीवन लुप्त न हो जाय और हम लोग स्वयं एक कृत्रिमता-पूर्ण सभ्यता के वेग में पड़ कर कृत्रिम और नीरस न बन जांय, ये ग्राम गीत अब भी हमारे जातीय जीवन को तथा हमारे दिलों को सरस बनाये रहते हैं।

लोगों का अनुमान है कि मरुस्थल जैसे रूखे सूखे प्रांत में सरस और काव्य के भावों को लिये हुवे गीत कैसे मिल सकते हैं। परन्तु यह विचार असत्य प्रतीत होगा जब कि हम गांवों के गीत जिनकी बानगी इस पुस्तक में दी गई है पढ़ने का प्रयास करेंगे। इनमें शृंगार, प्रेम, करुणा, वीर आदि रसों का आगार मिलेगा। ग्राम जीवन की स्वाभाविकता और लोगों के शुद्ध भावों का चित्र और उपदेश भी इसमें देखने को आयेगा।

ग्राम गीतों से देश या समाज का क्या भला हो सकता है। इस विषय पर लोग प्रश्न कर सकते हैं। इसलिये यह निवेदन करना भी अनुचित नहीं होगा कि बहुधा इन गीतों को स्त्रियें गाती है और उन्हीं के अधिकांश रचे हुवे हैं। इसलिये इनके पढ़ने से स्त्रियों के दिमाग़ की खूबी और कवित्व शक्ति नज़र आयेगी, जिसका अभाव स्त्री जाति में हमने भूल से समझ लिया है। इनसे गांवों के रीति-रस्म और लोगों के रहन सहन का परिचय मिलेगा और गृहस्थ के परस्पर आदर्श व्यवहार की शिक्षा प्राप्त होगी। इसके सिवाय जिस अमूल्य चीज़ को हमारी

लिखी पढ़ी बहिनें अपने घरों में प्रचलित सुन्दर स्वभाविक और उपदेशप्रद गीत भूलती जा रही हैं और उनके स्थान में निकम्मी और प्रायः अश्लील गज़लें आदि अपना रही हैं, उस सुन्दर प्राकृतिक वस्तु की ओर इस संग्रह द्वारा उनका ध्यान जायगा। यह ग्राम गीत एक निरर्थक और किस्से कहानियों की तरह मन बहलाव की ही चीज़ नहीं है। यह बात अंगरेज़ी भाषा में इस विषय पर प्रकाशित पुस्तकों से भली प्रकार प्रकट है। क्योंकि अंग्रेज़ विद्वानों ने भी भारतीय ग्राम गीतों का बड़े परिश्रम और रुचि के साथ संचय किया है, जिनको पढ़कर हृदय गद्गद् हो जाता है। वास्तव में यह कविता है ही ऐसी ही वस्तु। कवि वर्डस्वोर्थ साहब ने कहा है :—

"Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings."

"कविता वो चीज़ है जिससे मनुष्यों के विचार आपसे आप उमड़ते हैं और प्रकट होते हैं।" अर्थात वो कविता ही नहीं जिससे कृत्रिम भाव या शब्दों की ठूंसाठूंस हो।

यही सोच कर मारवाड़ी भाषा के उन भाव पूर्ण गीतों में से–जो आज तक मौखिक रूप से प्रचलित है–थोड़े से वाचकों को भेट किये जाते हैं। ये गीत दिनोंदिन लुप्त होते जा रहे हैं और उनके स्थान में फ़ालतू नयी तर्ज़ के गीत जो किसी मशरफ़ के नहीं होते हैं बहुत गाये जाने लगे हैं। इस प्रकार यदि ये पुस्तक रूप में आ जायँगे तो हिन्दी-साहित्य के एक

रोचक अंग की पूर्ति कुछ न कुछ उनसे अवश्य होगी। इन्हें पढ़कर वाचकों को पता लगेगा कि वे कितने सरस, मधुर, उपदेशप्रद, सजीव और हृदयग्राही हैं। यहाँ मारवाड़ शब्द हमने व्यापक रूप में लिया है। मारवाड़ के गीतों से हमारा तात्पर्य राजस्थानी गीतों से है। पाठक प्रायः कई राज्यों के दो दो चार चार गीत इस संग्रह में पावेंगे। सम्पादन करते समय हमने उन गीतों को सम्मिलित नहीं किया है जिनको अश्लीलता के कारण भाई और बहिन साथ नहीं पढ़ सकते।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने अपनी रुचि इनमें दिखाई तो हम फिर गीतों का बड़ा संग्रह निकालेंगे। जिसमें अनेक विषयों के ग्राम गीत होंगे और साथ ही साथ उनकी आलोचनात्मक व्याख्या भी की जायगी। इस संग्रह में भी दो एक गीतों की संक्षेप में व्याख्या बानगी के रूप में दी गई है। जैसा कि मुख पृष्ठ (टाइटल पेज) पर तीरंगा चित्र है, मारवाड़ी स्त्रियां बिना किसी साज बाज के ही गाया करती हैं। संयुक्त प्रांत की तरह ढोलक पर वे नहीं गाती हैं।

प्रूफों के देखने में जहाँ तहाँ अशुद्धियाँ रह गई हैं वे अन्त में शुद्धिपत्र लगा कर ठीक कर दी गई है। आशा है सहृदय वाचक शुद्धिपत्र को अवलोकन कर उन्हें सुधार लेंगे।

जोधपुर-मारवाड़
ता० १३-१०-१९२९ ई०

जगदीशसिंह गहलोत

राजपूताने के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक

कुँवर जगदीशसिंहजी गहलोत एम. आर. ए. एस

द्वारा प्रणित

कुछ अनमोल ग्रंथ

१—मारवाड़ राज्यका इतिहास (सचित्र) ... ३॥)
२—वीर दुर्गदास राठोड़ (सचित्र) ... १।)
३—भक्त मीरांबाई (सचित्र) ... ॥।=)
४—भारतीय नरेश ... ... १।)
५—महाराजा सर प्रताप (सचित्र) ... ।॥)
६—राणा चन्द्र शमशेर जंग (प्रेस में) इसमें नेपाल का सचित्र इतिहास है ... ।॥)
७—राजस्थान का इतिहास सचित्र (प्रेस में) ... ४।)
८—राजपूत कौन हैं ? ... ... –)
९—क्या राजपूत अनार्य हैं ? ... ... –)।
१०—क्या जयचन्द्र देशद्रोही था ? ... –)।
११—मारवाड़ राज्यका भूगोल (इसमें ताजीमी सरदारों की सूची भी है पृष्ठ १००) ... ।)
१२—राजिया के सोरठे (अर्थ सहित) ... =)॥
१३—मारवाड़का संक्षेप वृतांत (अप्राप्य) ... ॥)
१४—राजस्थानकी कृषि कहावतें (अप्राप्य) ... =)
१५—मारवाड़ के रीतरस्म ... ... ।)
१६—राजस्थानका सामाजिक जीवन ... ।)
१७—दियासलाई का इतिहास (अप्राप्य) ... =)
१८—ढोला मारवण की बात (सचित्र) ... ।)
१९—राजस्थानके वीरों की कहानियां ... ।=)
२०—राजस्थानके छतीस राजवंश ... ॥=)
२१—करौली राज्य का इतिहास (सचित्र) प्रेस में... ।॥)
२२—धोलपुर राज्यका इतिहास (सचित्र) ... ।॥)
२३—जेसलमेर राज्यका इतिहास (सचित्र) ... ।॥)
२४ महात्मा देवीदान संन्यासी (सचित्र) ... =)
२५—मारवाड़ के ग्राम-गीत ... ... १।)

ऐतिहासिक आदि ग्रंथों का बड़ा सूचीपत्र मँगाइये

मैनेजर हिन्दर मन्दिर, जोधपुर (राजपूताना)

ओ३म्

पणिहारी

"पणिहारी" का गीत राजपूताने भर में खूब प्रसिद्ध है और वर्षा ऋतु के आगमन होते ही मारवाड़ी-अलबेली-छबीली नवेलियाँ मधुर तार-स्वर से उमंङ्ग के साथ उसे गाती हुई सुनाई देती हैं। इस गीत का भावार्थ बड़ा सुन्दर है। एक युवती का पति परदेश गया हुआ है। सावन का महीना आ पहुँचा है। नदी तालाब सब भर चुके हैं। बादल घिरे हुवे हैं। उत्तर दिशा से घटा उमड़ी है। उसकी अन्य सहेलियाँ सारे शृङ्गार कर छमाछम करती हुईं, शिर पर गागर रक्खे हुए और महीन झिलमिलाते घूंघट काढ़े हुए, रिमझिम मेंह में पानी भरने जाती हैं। सौभाग्य से अकस्मात उसका पति ऊंट पर सवार घर को लौटता है। दोनों की भेट तालाब के घाट पर होती है। पति तो अपनी स्त्री को कुछ कुछ पहिचानता है परन्तु बहुत समय बीत जाने से नायिका अपने पति को बराबर नहीं पहिचान सकी। युवक उस युवती की उदासीनता से

उसकी ओर आकृष्ट सा हो जाता है और स्वतः उससे बात चीत करने को उसका जी लालायित हो उठता है। उधर स्त्री भी युवक का रूप रंग, परिशान्त मुखमंडल और उसका दूर आगमन तथा उसके मुख का अपने देवर व नणद के मुखों से सदृश्ता देख कर उसकी ओर मुग्धता से देखने लगती है और भूल जाती है पानी भरना। घड़ा और कलश पानी में डूबता ही नहीं है। उसकी ईडाणी सिर से गिर कर पानी में तैरने लगी। उसका ध्यान युवक की ओर है। वह कुछ बेसुधसी है। युवक पूछता है, हे पणिहारी! दूसरी तेरी सहेलियों के तो आंखो में काजल और माथे में टीकी है परन्तु तुम बिना टीकी हो और तुम्हारा नैन क्यों फीका है? वह उत्तर देती है कि हे भ्रमण शील ऊंट के सवार! औरों के पति घर बसते हैं और मेरे परदेश में हैं। मैं किस दिल से शृङ्गार करूं। इस पर युवक कहता है कि तालाब में पटक दो इस घड़े को और मेरे साथ ऊंट के पीछे बैठ कर चलो। इस सांकेतिक निमंत्रण पर उस धर्म-प्राणा पतिव्रता युवती के हृदय में आग जल उठती है। भड़क कर कहती है कि ऐसी तुम्हारी जीभ को आग लगा दूंगी। तुम्हें काला नाग क्यों न डस जाय। जो ऐसा कुप्रस्ताव करते हो। बस! इसके पश्चात युवक ऊंट को दौड़ा कर घर पहुँचता है। और उसके पीछे पानी लेकर युवती भी अपने घर पहुँचती है अपनी सास से सब रिपोर्ट सत्य सत्य कहती है कि "एक ऊंट वाला मुझे ए सासूजी! ऐसा मिला जिसने मेरे मन की

बात पूछी। वो मेरे देवर के जैसा लम्बा व पतला था और उसका मुख नणद के अनुहार था"। तब सास उतर देती है कि हे मेरी वहू! तुम तो बहुत ही भोली हो वो कोई दूसरा नहीं था वह तुम्हारा ही सौभाग्य का सूर्य और भाल का तिलक प्रिय पति था। इस पर पणिहारी प्रसन्न-गद्गद हो जाती है।

अब असली गीत का आनन्द लूटिए:—

(राग मल्हार)

आज धुराऊ[1] धूंधलो[2] ऐ, पणिहारी हे लो।
मोटोड़ी छांटां रो बरसे मेह, बाला[3] जी हो॥ १॥
किणजी खुणाया[4] नाडा नाडियां ए, पणिहारी हेलो।
किणजी खुणायो ऐ तालाब, बाला जी हो॥ २॥
सासूजी खुदायो नाडा नाडीया ऐ, पणिहारी हेलो।
सुसरो जी खुदायो ऐ तलाब, बाला जी ओ॥ ३॥
किणसुं बधावो ऐ नाडा नाडिया ऐ पणिहारी हेलो।
किणसुं बधावो ऐ तलाब, बाला जी ओ॥ ४॥
नारेले बधावो नाडा नाडीया ए, पणिहारी हे लो।
मोतीड़े बधावो समंद तलाव, बाला जी ओ॥ ५॥
सातां रे सहेल्यां रे झूलरो[5] ऐ, पणिहारी हे लो।

१-ध्रुव। २-धुंध = कोहरा। ३-बाला जो ओ = पति का आदर सूचक सम्बोधन। ४-खुणाया = खुदाया। ५-झूलरो = झूंड।

पाणिड़े ने गई रे तलाव, बाला जी ओ ॥ ६ ॥
घड़ो न डूबै बेवड़ो ऐ, पणिहारी हे लो।
ईढाणी रे तिर तिर जाय, बाला जी ओ ॥ ७ ॥
ओरां रे तो काजल टीकियां ऐ, पणिहारी हे लो।
थारोड़ा है फीका सा नैण, बाला जी ओ ॥ ८ ॥
ओरां रा पीवजी घर बसै, लंजा[1] ओठी[2] हे लो।
म्हारोड़ा बसै परदेश, बालाजी ओ ॥ ९ ॥
सातों रे सहेल्यांरे पांणी भर चली रे पणिहारी हेलो।
पणिहारी रे रयोड़ी तलाब, बाला जी ओ ॥ १० ॥
बेवते[3] ओठी ने हेलो[4] मारीयो ए, लंजा ओठी हेलो।
घड़इयो उखणावतो[5] जाव, बाला जी ओ ॥ ११ ॥
घड़ो तो पटक दैनी ताल में, पणिहारी हे लो।
चाले नी ओठीड़े री लार,[6] बाला जी ओ ॥ १२ ॥
बालूँ ने जालूँ थारी जीभड़ी ए, लंजा ओठी हे लो।

१-भटकती चालवाला। ये अरबी शब्द है। २-ओठी= उष्ट्ररोही यानी ऊंट का सवार। ३-जाते हुवे। ४-आवाज़। ५-उठाना। ६-पीछे राजस्थान प्रांत (मारवाड़) में ऊंट पर आगे बनिह बेटी चढ़ती हैं और पीछे व्याहिता स्त्री। इससे यहां का रिवाज बताकर संकेत में नायिका को अपनी पत्नि हो जाने को कहा है।

डसजो थनै कालो नाग, बाला जी ओ ॥ १३ ॥
चाले तो घड़ायदों तनें बाड़लो ए, पणिहारी हे लो।
चाले तो घड़ावों नवसर हार, बाला जी ओ ॥१४॥
एड़ा तो बाड़लिया म्हारे घरे घणा रे लंजा ओठी हेलो।
खूटईये रे टांग्या नवसर हार, बाला जी ओ ॥१५॥
हाले तो चीरावों थारे चुड़लो ए, पणिहारी हे लो।
हाले तो ओढ़ावों दखणी रो चीर[1] बाला जी ओ ॥१६॥
चूड़लो चीरासे धण रो साहिबो रे, लंजा ओठी हेलो।
ओढणियो ओढासे मां जायो बीर, बालाजी ओ ॥१७॥
के हेरे सासू थारे साबकी ए, पणिहारी हे लो।
के हेरे थारो पीहरीयो परदेश, बालाजी ओ ॥ १८ ॥
नही रे सासू म्हारे साबकी रे, लंजा ओठो हे लो।
नही रे म्हारे पीहरीयो परदेश, बाला जी ओ ॥१६॥
घड़ो तो भरने पाछी वली ए, पणिहारी हे लो।
आयोड़ी रे फलसे सु बार, बाला जी ओ ॥ २० ॥
घड़ो तो पटकदां रे ऊभी चोक में रे म्हरा सासू जी हे लो।
बेगो रे म्हारो घड़ईयो उतराव ए, बाला जी ओ ॥२१॥

१—तत्कालीन दक्षिण की प्रसिद्ध डुपट्टे और साड़ी।

किण तने मोसो[1] मारीयो ए म्हारी बहूवड़जी हे लो।
किण तने दीनी गाल ए, बाला जी ओ ॥ २२ ॥
एक ओठी म्हाने इसो मिल्यो[2] म्हारा सासू जी हे लो।
पूछी म्हारे मनड़े री बात, बाला जी ओ ॥ २३ ॥
किणजी सरीखो ओठी फूठरो ए म्हारी बहूबड़जी हे लो।
किणजी री आवे अणेहार, बाला जी ओ ॥ २४ ॥
देवरजी सरीखो ओठी फूठरो ए, म्हारा सासूजी हे लो।
नणदल बाई रे आवे अणेहार, बाला जी ओ ॥२५॥
थे तो म्हांरा बहूजी भोला घणा, भोला बहू जी हे लो।
वे तो है थारा ही भरथार, म्हारा बाला जी ओ ॥२६॥

देश-प्रेम

[वालो[3] लागे छै म्हारो देसड़ो ए लो]

इस गीत में मरुस्थल की रहने वाली स्त्री के हृदय में अपने निर्जल देश के लिये कितना प्रेम है। जिसको वो अकाल हो जाने पर भी नहीं छोड़ना चाहती है। यह इसमें दिखलाया

१–ताना। २—पतिव्रता का धर्म है कि कोई बात बड़ों से नहीं छिपावें। ३—वालो = प्यारा।

गया है। उसके जी में सदा ये उत्साह रहता है कि अकाल का समय चिरस्थायी नहीं है। आकाश में बादलों को और तालाब में पानी देखकर उसके हर्ष का पारावार नहीं रहता। और संसार के सब देशों को अपने स्वदेश के मुक़ाबले में हेच समझती है। *

वालो लागे छै म्हारो देसड़ो ए लो
किसकर जाऊँ परदेस वाला जो।
ऊँचा २ भारूजी रे गोखड़ा ए लो
नीचे म्हाँरे सरवरिये री पाल वाला जो ॥वालो०॥
बादल छाया देस में हे जोय
नदिया नीर हिल्यो हील रे
बादल चमके बीजली चमक चमक झड़ लाय
सरवर पाणीड़े ने मैं गई
भीजे म्हारे सालूडे[1] री कोर, वाला जो
वालो लागे छै म्हारे देसड़ो ए लो ॥

---

* ये गीत वर्तमान बीकानेर नरेश महाराजा सर गंगासिंह जी साहब बहादुर को अति प्रिय है और वे इसे बड़े चाव से जलसों में गवाते हैं जब कि बड़े लाट साहब या अँग्रेज़ पदाधिकारी बीकानेर जैसे मरुभूमि का निरीक्षण करने जाते हैं।

१—साड़ी।

धूँसो

प्रत्येक देश में एक ऐसा गीत प्रचलित होता है जिसमें उस देश के प्राकृति दृश्यों, वीरो अथवा वहां के लोक प्रिय नरेशों की प्रशंसा बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में की जाती है। इस प्रकार के गीतों को सुन कर वहां के रहने वालों के हृदय फड़क उठते हैं और देश प्रेम से वे भर जाते हैं। यहां पर जो मारवाड़ का "धूँसा" शीर्षक गीत दिया जा रहा है उसमें मारवाड़ के प्राचीन गौरव का वर्णन है। और उसको गाने वाले अपने समय के राजा का नाम लेकर उसका गुण गान करते हैं।

वीर जातियों के गान वीरता पूर्ण होते हैं। सिंह धाड़ते हैं। म्याऊँ म्याऊँ नहीं करते हैं। राठोड़ राष्ट्रीय गान "धूँसा" भी वीरोचित गान है। राष्ट्रीय गानों में शब्द योजना की ओर इतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना उसकी गानातर लय प्रवाह पर क्योंकि ये वाद्ययंत्रों पर बजाने की वस्तु है। गाने की नहीं होती। इसलिये इस धूँसा की खूबियें लिखकर नहीं बताई जा सकतीं।

होली के दिनों में सारी जनता किस मस्ती के साथ चंग पर इसे गाती हैं वह देखने व सुनने की वस्तु है, पढ़ने की नहीं। वह "धूँसा" गीत इस प्रकार है:—

(गीत लूर सारंग-ताल होली)

धूंसों[1] बाजे रे महाराजा उम्मेद * सिंहजी रो,
धूसों बाजे रे ॥ टेर ॥

महाराजा उमेदसिंह कँवर कन्हैया
हुक्म दियो रे खेलो होली ॥ धूसों० ॥ १ ॥

जीवणी[2] मिसल मांह चांपा[3] कूंपा[4]
ऐ ओपे मारू[5] रण-थाल[6] ॥ धूसों० ॥ २ ॥

डावी[7] रे मिसल[8] ऊदा[9] मेड़तिया[10]
जोधा [11] है शूरां री ढाल ॥ धूसों० ॥ ३ ॥

आउवो[12] आसोप तो माणक मूंगा
ज्यूँ सोहै रतनां री माल ॥ धूसों० ॥ ४ ॥

१—जीत के ढोल । * नाम राजा जो उस समय गद्दी पर हो । २—दाहिनी । ३-जोधपुर नरेश राव रणमल के राजकुमार चांपाजी राठोड़ के वंशज "चांपावत" ४—कूंपाजी राठोड़ के वंशज "कूंपावत"। ५—मारवाड़ी, मारवाड़ के । ६—रणक्षेत्र में पछाड़ने वाले । ७—बाएं । ८—दरबार में बैठक । ९—जोधपुर नरेश राव सूजाजी के छोटे भाई उदाजी राठोड़ के वंशधर "उदावत"। १०—मेड़ता नरेश राव दूदाजी राठोड़ के वंशधर निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़ में) के पीछे "मेड़तिया" प्रसिद्ध हुए। ११—जोधपुर नरेश वीर जोधाजी राठोड़ के वंशधर "जोधा" । १२—आऊवा, आसोप, रीयां, रायपुर और खेरवा जोधपुर राज्य के प्रसिद्ध जागीरी ठिकाने

रींयां रायपुर और खैरवो
दीपै ज्यूँ मारू करवाल[1] ॥ धूसो० ॥ ५ ॥
जेमल[2] हुवो मुल्क में चावो[3] ।
अमरो[4] हिंदवां लज-रखवाल ॥धूसो० ॥६॥
मुकन[5] जैदेव[6] गोरां[7] जसधारी

(Estates) हैं और ये अपनी अपनी खांप (अल्ल-Clans) के मुखिया हैं । १—तलवार । २—चित्तोड़ (मेवाड़) युद्ध का सुप्रसिद्ध सेनापति वीर शिरोमणि राव जेमल मेड़तिया जिसके मुख्य वंशधर मेवाड़ के बदनोर और रूपाहेली ठिकानों के सरदार हैं । ३—प्रसिद्ध । ४—नागोरपति स्वाभिमानी वीरवर राव अमरसिंह राठोड़ । ५—सपेरा (कालबेलिया) का स्वांग भर के शाही पहरे से बालक महाराजा अजीतसिंह (जोधपुर नरेश)को बचाने वाला वीर मुकन्ददास खीची । ६—महाराजा अजीत का पालन पोषण करने वाला सिरोही राज्य निवासी पुरोहित ~~जग्गूजी~~ (जयदेव) । ७—मेहतरानी का स्वांग भर कर टोकरी में महाराजा अजीत-सिंह को रखकर शाही पहरे से बाहर लाकर बालकों को मुकन्ददास खीची को सोपनें वाली मंडोर निवासी धाय गोंरा टाक नामक वीरांगना । इसकी बनाई बावड़ी जोधपुर शहर में पोकरन हवेली से सटी हुई है जो अपभ्रंश रूप गोरंधा (गोरां धाय) बावड़ी कहलाती है । गोरां धाय की जहां सं० १७५८ में अन्त्येष्टी हुई उसपर बनी स्मृति छत्री व शाल

धन दुरगो[1] राखियो अजमाल[2] ॥घूसो० ॥७॥
जठी रे जावे जठी फतह कर आवे।
बांकी है फौज राठोड़ रुखाल[3] ॥घूसो० ॥८॥
बांका बांका पेच[4] राठोड़ां ने सोहे।
पिचरंग पेच ढूंढाड़[5] भूपाल ॥ घूसो० ॥ ९ ॥
कड़ा ने किलंगी[6] राठोड़ां ने फावे।
मोरिया री पांख कछावा[7] बाल[8] ॥घूसो०॥१०॥
लाख लाख वां रे तोप-रहँकला[9]।
अणगिण ऊंट रसाला काल[9] ॥घूसो० ॥११॥

इस लोकप्रिय गान का थोड़े से शब्दों में यह अर्थ है कि महाराजा साहब के विजय नगारे बज रहे हैं। महाराजा, कृष्ण

नाहरजी की बावड़ी के पास कचहरी रोड पर वाके है।

१—बालक महाराजा अजीत का रक्षक व अठारहवीं शताब्दी के स्वराज्य संग्राम का क्रान्तिकारी योद्धा वीर शिरोमणि राव दुर्गादास राठोड़ जिसके बाहुबल पराक्रम तथा बुद्धिबल से सम्राट औरंगजेब को निगला हुआ मारवाड़ का राज्य फिर उगलना पड़ा था। २—बालक जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंहजी। ३—रक्षा करने वाले। ४—पगड़ी के आंटे। ५—जयपुर राज्य का पुराना नाम। ६—कलगी। ७—कछवाहा राजवंश। ८—बालक। ९—यमदूत, भयंकर।

कन्हैया की तरह प्रतापी प्रजा प्रिय और नीतिज्ञ है। और उन्होंने कृष्ण कन्हैया की तरह जनता के लिये होली खेलने का प्रबन्ध किया है। अर्थात् आनन्द मनाने तथा मौज करने का हुक्म दिया है।

आगे कवि ने महाराजा साहब और वीर सामंतगण का सम्बन्ध और बैठक कुरब-क़ायदे बतलाये हैं कि "राजदरबार के समय महाराजा साहब के सिंहासन के दाहिनी (Right) तरफ़ तो राठोड़ राजवंश की चांपावत, और कूंपावत, नामक शाखायें शोभायमान हैं जो रणक्षेत्र में शत्रुओं को पछाड़ते हैं। और बांए तरफ़ उदावत, मेड़तिया, और जोधा शाखाओं के टीकाई सरदार विराजमान हैं जो युद्धक्षेत्र में वीरों की ढाल माफिक हैं।

इन मुख्य शाखाओं के टीकाई सरदारों के जो ठिकानें (जागीरें) हैं उनमें आऊवा और आसोप तो माणिक से भी मंहगे यानी महत्वशाली हैं। और रत्नों की माला रूप हैं। रींया, रायपुर और खेरवा ठिकानें राज्य की तलवार रूप चमकते हैं। क्योंकि इन उमरावों से राज्य को युद्ध व शांन्ति-काल में सलाह और सेवा द्वारा अमूल्य सहायता मिला करती है। इसके बाद राठोड़ वीर जयमल का उल्लेख है कि जिसने सम्राट अकबर के मुकाबले में चितोड़गढ़ की प्राणपण से रक्षा की और वीर गति को प्राप्त होकर जगद् प्रसिद्ध हुआ। एवं नागोर पति राव अमरसिंह राठोड़ ने बादशाही बख्शी से शाही दरबार में गंवार

कहा जाने पर तत्काल उसे भरे दरबार में कटार से मार कर अपने कुल की लजा और मान मर्यादा रखी। फिर उन देश भक्तों का जिकर किया गया है जिन्होंने आपतिकाल में जोधपुर राजवंश की अनमोल सेवाएं की हैं। "वीर मुकनदास खीचीं, पुरोहित जयदेव और वीरांगना गैाराधाय के आदर्श कार्यों की कीर्ति सदा बनी रहेगी और ऐसे ही वीर दुर्गदास राठोड़ को भी धन्य है जिन लोगों ने बालक महाराजा अजीतसिंहजी[1] को सम्राट औरंगज़ेब के हाथों में पड़ने से बचाया और उसकी रक्षा कर औरंगज़ेब के हलक़ में निगला हुआ मारवाड़ का राज्य वापिस छीना।

दीनरक्षक राठोड़ों की सेना बड़ी बांकी है। जिस युद्ध में जाती है वहीं ही विजय लक्ष्मी प्राप्त कर लेती है। राठोड़ों के पगड़ी (साफ़े) बांधने की रीति निराली-अनोखी व बांकी होती है। पगड़ी के पेचों से ही उनका बांकापन झलकता है। इससे ऐसे साफे तो राठोड़ों के और पचरंगा लहरिया पाघ

१—प्राकृत युग में जिसको इतिहास में बोद्ध तथा जैन काल कहते हैं "आर्य्य" (श्रेष्ठ) शब्द का अपभ्रंश संस्कृत के अन्य शब्दों के समान "आरज" और "अज्ज" हुआ। यही अज्ज शब्द फारसी युग (मुसलमानी काल) में बिगड़ कर "जी" शब्द में बदल गया जो कि आज कल स्त्री पुरुषों के नाम के अन्त में आदर सूचक लगाया जाता है। जैसे धात्री देवीजी, किशोरसिंहजी।

(पगड़ी) ढूंढाड़ (जयपुर राज्य) के कछवाहों को शोभा देती है।

हाथों में सोने के कड़े और पगड़ी या साफे पर किलंगी (कलगी) राठोड़ों को तथा मोर की पंख कछवाहों के सपूतों को फबती है। ऐसे राठोड़ों के जिनके पास लाख लाख तो तोप गाड़ियें और बेशुमार भयंकर ऊंट और घुड़सवार सेना है उनके विजय नगारे सदा बजते रहें।

——:❀:——

मारवणी

[हे सोना नै सरीसी धण पीलरी ओ राज]

पति नौकरी पर जा रहा है। पत्नि उसे रात को घर पर ठहर कर दूसरे रोज जाने का आग्रह कर रही है और अपनी तुलना अन्य वस्तुओं से करती हुई पति को अपने प्रेम की ओर आकर्षित करती है। वो कहती है कि मैं सोने जैसी बहुमूल्य व सुन्दर हूं। इससे ऐसी वस्तु से निर्मोही क्यों हो रहे हैं। मैं चांदी जैसी गौरवर्ण हूं फिर भी मेरे से आप क्यों रूठते हो। मैं मोतियों जैसी निर्मल रत्न हूँ जो आपके कानों की शोभा बढ़ा सकती हूँ अर्थात् आपके साथ हर समय रहने योग्य हूँ। हीरे जैसी चमकती हुई आपके कंठे का हार बनने योग्य हूँ। पान जैसी आपके होंठ पर ललाई लाने वाली हूँ और लूंग जैसी चरपरी यानी चटपटी बातों से आपका मनो-रंजन करने वाली हूँ। इसलिये हे प्राणनाथ! कम से कम आज विदेश न जाकर कल जाइये :—

हे सोना नै सरीसी[1] धण पीलरी[2] ओ राज।
राज ढोलां राखोनी थांरे हिवड़े रे माय ॥ १ ॥
परबाते सिधावजो आलिजा ओ आज रेवोनी रात।
रूपानै सरीसी ओ थांरी धण ऊजली ओ राज
राज ढोला राखानो थांरी मुठड़ी रे मांय ॥२॥ परबाते०
मोतियां ने सरीसी थांरी धण निर्मल ओ राज
राज ढोला राखोनी थांरे कानां रे माय ॥ ३ ॥
हीरा नै सरीसी थारी धण चिलकणी[3] ओ राज,
राज ढोला राखोनी थांरे कंठा रे माय ॥४॥ परबाते०
पांनां रे सरीसी थांरी धण राचणी[4] ओ राज
राज ढोला राखोनी थांरे मुखड़े रे माय ॥ ५ ॥
लूगां ने सरीसी थारी धण चरचरी[5] ओ राज
राज ढोला राखोनी थारें मुखड़ा रे मांय ॥६॥ परबाते०

१—जैसी। २—पीली।
३—चमकीली। ४—रंग देने वाली। ५—चरपरा।

जलो

[जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे]

इस गीत को मारवाड़ी बोली में "जलो" कहते हैं। इसमें पतिव्रता का सुन्दर चित्र खींचा गया है। नायिका का पति उदयपुर मेवाड़ में फौजी नौकरी पर गया हुआ है। स्त्री ने कई बार उसको मना किया कि इतनी दूर की नौकरी ठीक नहीं। वह कई संकल्प विकल्प सोचती है। यहां स्त्री को कुछ भी उसके बिना अच्छा नहीं लगता। पतिदेव की अनुपस्थिति में तेलिन तेल लाती है, शृङ्गार के लिये मालिन (फूलवाली) फूल लाती है और तमोलिन पान लाती है। इत्यादि। परन्तु ये सब वस्तुएं उसके मन को आकर्षित नहीं कर सकतीं। पति के बिना संसार उसे सूना दिखाई देता है। क्योंकि उसका जोड़ीदार दूर प्रदेश में है। उदासीन, वियोग व्यथित और पति दर्शन को आतुर नायिका इस प्रकार कहती है:—

जलो[1] म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे।
बीरो[2] भोली नणद रों म्हारो हुक्म उठावे रे ॥ टेक ॥
म्हैं थने जलोजी बरजियो तूं उदियापुर मत जाय।

१—मारवाड़ी में पति के लिये प्यार सूचक छैला, ढोला, मारू, भँवर, हंजा मारू, लसकरिया, नणद रा बीर, पिया, जलो, साहिबजी आदि कई शब्द हैं।

२—वीरो=भाई।

उदियापुर री काँमणी छैला राखेला विलमाय।
जलो म्हारी जोड़ रो फौजाँ रो माँझी रे।
वीरो म्हारी नणद रो म्हारो कह्यो न माने रे ॥१॥
साँझ समै दिन आँथवे रे, छैला तेलण लावे तेल।
कहिं ऐ करूँ थारे तेल ने, हे तेलण कहिं ए करूँ।
म्हारे आलीजे बिना किसो खेल ॥
छैलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे॥ २॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे, जला! खातण लावे खाट।
कहिं हे करूँ हे थारी खाट ने, म्हारे मारुड़े बिना
किसो ठाट।
छैलो म्हारी जोड़ रो म्हारें घर नहीं आयो रे॥ ३॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे छैला मालण लावे फूल।
कहिं हे करूँ हे मालण! थारे फूल ने हे!
म्हाने आलीजे बिना लागे शूल।
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे॥ ४॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे जला! तम्बोलण! लावे पान।
कहिं हे करूँ थारा पान ने हे, म्हारे आलीजे बिना
किसी आन।

जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ॥ ५ ॥
मस्त महीनो आवियो रे, जला ! अब तो खबर म्हारी लेह
तों बिन घड़ियन आवड़े रे, छैला ! जीव उठे इत देह ।
जलो म्हारी जोड़रो सेजाँ रो सवादी रे ॥ ६ ॥

निहालदे

[सावण तो लागो पिया, भादवो जी कांहिं बरसण लागो मेह]*

यह गीत वर्षा ऋतु में मेघ-मलार के स्वरों में गाया जाता है। वियोगिनी नायिका अपने प्रदेश गतपति को बुलाती है। उसका पति दूर दक्षिण में नर्वदा के किनारे युद्ध में गया हुआ है। वह अपने पति के प्रति सम्बोधन करके अपनी दशा का वर्णन करती है कि तुम तो दूर देश नौकरी पर चले गये, इधर सुन्दर सावन का समय आया है। मुझे आप के दर्शनों की उत्कट इच्छा है। घर की माली (धन सम्बन्धी) अवस्था वर्षा ऋतु में बिगड़ सी गई। छपर टूट गया। बोदे बांस तिड़कने लगा। जब जब बिजली चमकती है मैं अकेली महल में

---

* कहते हैं कि यह गीत पंवार राजपूत निहालदेव सोढी ~~की स्त्री~~ का रचा हुआ है।

डरती हूं। आपकी प्रतिज्ञा में खड़ी हुई गोखड़े (गवाक्ष = झरोखा) में खड़ी झींग रही हूं। आप प्रायः दूर फ़ौजों में झींग रहे होंगे। महल (कमरा) अंधेरा है, रात अंधेरी है और फिर उमड़ गुमड़ कर बादल बरस रहे हैं। मुझे ये न मालूम था कि इतनी विरह व्यथा मेरे कर्म में लिखी है। चिट्ठी को तो मैं पढ़ सकती हूँ परन्तु कर्म का लिखा नहीं पढ़ सकती। जब मैं १४ चौदह वर्ष की थी तब अपना विवाह हुआ था परन्तु अब तो मैं पूर्ण युवती हो गई हूँ। अंग में काचली समाती नहीं है। हार भी गले में छोटा पड़ता है। हे प्राणाधार! अब तो घर आवो। मुझे आप के दर्शनों की उत्कट इच्छा है। चाहती हूँ कि हे प्रिय! कहीं नज़दीक ऐसी नौकरी करें कि दिन भर काम करके शाम को घर चले आवें। इसलिये हे मृगनयनी के ढोला! अब जल्द घर आ जावो, क्योंकि ऐसा सुहावना समय बार बार नहीं आता। आपकी नौकरी की कितनी कीमत है। अस्सी टका न? बस, उधर आपकी भोली स्त्री लाख मोहर की है। पता नहीं, उस तुच्छ नौकरी में क्या रखा है। और मेरे में ऐसा क्या दोष है कि उसके प्यार में मुझे भी भूल गये। जो इतनी बहुमूल्य है।

इस प्रकार पति को नाना प्रकार से प्रलोभन देती हुई अन्त में स्त्री तंग आकर अपने को न सँभाल सकने के कारण वह दुराशीश देती है कि उस नरवरगढ़ (ग्वालियर राज्य में) के राजा को—जिसकी नौकरी में उसका पति दूर देश में गया

हुआ है—उस राव को काला नाग डस ले और उसके गढ़ पर बिजली टूट पड़े। इत्यादि—

लीजिये! शुद्ध मारवाड़ी शब्दों का रसस्वादन कीजिये :—

सावण तो लागो पिया, भादवो जी काँहि बरसण लागो
बरसण लागो जी मेह, हो जी ढोला मेह।
अब घर आय जा गोरी रा रे, बालमा हो जी ॥टेक॥
छप्पर पुराँणा पिया पड़ गया रे, कोई तिड़कण लागा।
तिड़कण लागा बोदा बाँस, हो जी ढोला बांस।
अब घर आ जा बरसा रूत भली हो जी ॥ १ ॥
बादल में चमके पिया, बीजली रे कोई मेलाँ में डरपै।
मेलाँ में डरपै घर री नार, हो जी छोटी नार।
अब घर आय जा, फूल गुलाब रा हो जी ॥ २ ॥
गोरी तो भीजे ढोला गोखड़े जी।
आली जो भीजे जी फौजाँ माँय।
अब घर आय जा आसा थारी लग रही हो जी ॥३॥
एक तो अँधियारी ढोला ओरड़ी रे पिया।
दूजी हो अंधियारी रात।
अब घर आय जा बरसालू बदला ओ जी ॥ ४ ॥
कूवो तो व्है तो पिया डाक लूँ जी ढोला।
समदर डाकियो, समदर डाक्यो न जाय,
हां जी ढोला न जाय।

अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ॥ ५ ॥
चौदह वर्ष* री पिया परणिया जी, हो गई जोध,
हांजी ढोला हो गई जोध जवान।
अब घर आवो गोरी रा बालमा ओ जी ॥ ६ ॥
अंग में नहीं मावे ढोला कांचली हो जी।
हिवड़े नहीं हो ढोला हिवड़े नहीं मावे हार।
अब घर पधारो नी हो म्हारा प्राणधार ओ जी ॥७॥
कागद तो व्है तो ढोला बाँच लूँ जी।
करम न बाँच्यो, करम न बाँच्यो जाय।
अब घर आय जा आसा थारी लग रही ओ जी ॥८॥
टाबर तो व्है तो पीया राख लूँ जी ढोला।
जोबन राख्यो, जोबन राख्यो न जाय।
अब सुध लीजो गोरी रा सायबा हो जी ॥ ९ ॥
नेड़ी-नेड़ी करो पिया चाकरी जी छैला।
साँझ पड्याँ घर, साँझ पड्याँ घर आव, हो जी
ढोला आव।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ॥ १० ॥

---

* कन्या विवाह योग्य कब होती है जरा विचारिये।

थाने तो प्यारी पिया (परदेशां री) नौकरी जी ढोला,
म्हाने तो प्यारा लागो।
म्हाने तो लागो प्यारा आप, हो जी ढोला आप।
अब घर आय मृगानेणी रा बालमा हो जी ॥११॥
असी रे टकां री ढोला चाकरी[1] रे, कोई लाख मोहर
री नार।
लाख मोहर री भोली नार, हो जी ढोला।
अब घर आय जा गोरी रा रे बालमा हो जी ॥१२॥
दोरी तौ दिखण री ढोला चाकरी रे।
दोरो है नरबदा रो, दोरो है नरबदा रो घाट।
अब घर आय जा गोरी रा सायबा हो जी ॥१३॥
घोड़ा तो भीजे पिया नवलखा रे, कोई भीजे रे
बनाती।
भीजे रे बनाती रे साज, हो जी ढोला साज।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा हो जी ॥ १४ ॥

१—ध्यान रहे कि विद्वान न्यायधीशों (जजों) की राय है कि नौकर वह कहा जाता है जो अपनी राजी से नौकरी कर सके और जब चाहे उसे छोड़ सके। पर चाकर ऐसा नहीं कर सकता। परन्तु यहां काव्य की सुन्दरता के लिये ही कवि ने नौकरी शब्द के स्थान में चाकरी शब्द का व्यवहार किया है।

अंग में नहीं मावे काँचली जी, ढोला हिवड़े नहीं मावे।
हिवड़े नही मावे हार, हो जी ढोला।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा हो जी ॥ १५ ॥

आवण जावण कह गयो रे ढोला, कह गयो कवल अनेक।
कर गयो रे कवल पिया! अनेक।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ॥१६॥

दिनड़ा तो गिण-गिण ढोला, घिस गई मारी आंगलियाँ।
काहीं आँगलियाँ री रेख, हो जी ढोला।
अब घर आवो गोरी रा बालमा हो जी ॥ १७ ॥

तारा तो छाई रातड़ी जी ढोला! फूलड़ा छाई।
फूलड़ा छाई सेज, हो जी ढोला सेज।
अब घर आवो लाडी रा बालमा ओ जी ॥ १८ ॥

बिरछां विलूँबी बेलड़ी पिया।
नरा विलूँबी नार जी ढोला नार।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा ओ जी ॥ १६ ॥

हूँ तो मरूँ छूँ पिया इकली ज़ी, मरूं कटारी खाय।
हूँ हो मरूं कटारी खाय।

अब घर आय जा बालमा हो जी ॥ २० ॥
नरवरगढ़ पर पड़ जो ढोला बीजली रे।
रावजी ने खाईजो, रावजी ने खाइजो कालो नाग।
अब घर आय जा, धण रा बालमा हो जी ॥ २१ ॥

पीपली

[बाय चाल्या छा भंवर जी! पीपली जी]

एक स्त्री का पति प्रदेश जा रहा है। इससे स्त्री उसे कहती है कि आपने जिस छोटे से पीपल के पेड़ को अंगन में बोया था वह अब विशाल वृक्ष हो गया है। वर्षों बित गये अब वह छायादार हुआ और उसके नीचे बैठने के दिन आये तो आप परदेश जा रहे हैं। हे प्रिय! पूर्व की नौकरी पर मत जायो! साथ ही पति से कुछ प्रश्न करती है कि ऐसा कौन (निर्दयी) था जिसने आपका घोड़ा कस दिया और किसने उस पर जीन रख दी। किसने ऐसे समय में आप को नौकरी पर जाने की इज़ाजत दी। ऐ! मेरे "हिवड़े के जिवड़े" पूर्व की नौकरी में मत जावो। वह उत्तर देता है कि मेरे बड़े भाई ने तो घोड़ा तयार कर दिया और साथियों ने उस पर जीन कस दी और मैं अपने बाबोसा (पिता) की आज्ञा से नौकरी पर

जाता हूं। स्त्री जब अपने पति को बाहर जाने में नहीं रोक सकती है तब वह कहती है कि "हे मेरे सेज के शृंगार ! मुझे भी साथ ले चलो। इत्यादि। परन्तु पति अकेला ही चला जाता है।

पश्चात् पति पत्नि में रोचक पत्र व्यवहार होता है। और स्त्री लिखती है कि म्हारा कमाऊँ उमराव ! आप फ़सल की ऋतु में क्या प्रदेश घूम रहे हो ? सु अवसर मत खोवो। जल्दी घर आवो मैं आपकी वाट जोहती हूं।

गीत इस तरह है:—

बाय चाल्या छा भँवरजी ! पीपलीजी,
हां जी ढोला ! हो गई घेर घुमेर।
बैठां की रुत चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हांरी सास सपूती रा पूत।
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ १ ॥

परण चाल्या छा भँवरजी ! गोरड़ी जी,
हां जी ढोला ! हो गई जोध जुवान।
बिलसण की रुत चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हारा लाल नणद रा ओ वीर।
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ २ ॥

कूंण थारा घुड़ला भँवरजी! कस दिया जी,
हां जी ढोला! कुंण थाने कस दिया जीए।
कुण्या जी रा हुक्मा चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हारे हीवड़े रा जीवड़ा।
मत न सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ ३ ॥
बड़े बीरे घुड़ला गोरी! कस दिया जी,
हां ए गोरी! साथीड़ा कस दिया जीए।
बाभोसा रा हुक्मा चाल्या चाकरी जी ॥ ४ ॥
रोक रुपैयो भँवरजी मैं बणूँ जी,
हां जी ढोला! बण उधाऊँ पीली पीली म्होर।
भीड़ पड़े जद भँवरजी! बरत ल्यो जी,
ओ जी म्हारी सेजां रा सिणगार!
पीया जी! प्यारी ने सागे ले चलो जी ॥ ५ ॥
कदे न ल्याया भँवरजी! सीरणी[1] जी,
हां जी ढोला! कदे न करी मनुवार।
कदेय न पुछी मनड़े री वारता जी,
ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर!
थां बिन गोरी ने पलक न आवड़े जी ॥ ६ ॥

१—मीठाई।

कदे न ल्याया भँवर जी ! सूतली जी,
हां जी ढोला ! कदे थी बुणी नहीं खाट।
कदेय न सूत्या रल मिल सेज में जी,
ओ जी पियाजी ! अब घर आओ,
थारी प्यारी उड़ीके[1] महल में जी ॥ ७ ॥
थारे भाभोसा[2] ने चाये भँवर जी ! धन घणो जी,
हां जी ढोला ! कपड़े री लोभण थारी माय।
सेजां री लोभण उड़ीके गोरड़ी जी
थारी गोरी उड़ावे काग।
अब घर आओ जी धाई थारी नोकरी जी ॥ ८ ॥
अब के तो ल्यावां गोरी ! सीरणी ये
हां ये गोरी ! अब करस्यां मनुवार।
घर आय पूछां मनड़े री बारता जी ॥ ९ ॥
अब के ल्वांवां गोरी सूतली जी,
हां ए गोरी ! आय बुणांगा खाट।
पीछे सोस्यां रल मिल थारी सेज में जी ॥ १० ॥

१—वाट जोहना। २—पिता।

चरखो[1] तो ले ल्यूं भँवरजी! राँगलो जी,
हाँ जी ढोला! पीढ़ो लाल गुलाल।
तकवो तो ले ल्यूँ जी भँवर जी! बीजलसार[2] को जी,
ओ जी म्हारी जोड़ी रा भरतार!
पूणी मँगाल्यूं जी क बीकानेर की जी ॥११॥
म्होर म्होर री कातूं भँवरजी! कूकड़ी जी,
हां जी ढोला! रोक रुपैये रो तार।
मैं कातूं थे बैठा बिणज ल्यो जी
ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर!
जल्दी घर आओ प्यारी ने पलक न आवड़े जी ॥१२॥
गोरी री कुमाई खासी रांडिया रे,
हां ये गोरी! के गांधी के मणियार।
म्हें छा बेटा साहूकार रा जी,
ए जी म्हारी घणी ये पियारी नार!
गोरी री कुमाई से पूरा ना पड़े जी ॥१३॥

१—मारवाड़ियों में चरखा और शुद्ध स्वदेशी कपड़ा (खद्दर) की प्राचीनता इस गीत से जान कर संसार पूज्य महात्मा गांधी जी अवश्य प्रसन्न होंगे।

२—एक प्रकार का फौलाद सा बढ़िया लोहा।

सांवण खेती भँवरजी ! थे करी जे,
हां जी ढोला ! भादुड़े करयो जी नीनाए।
सीटां री रुत छाया भँवरजी ! परदेस में जी,
ओ जी म्हारां घणां कमाऊ उमराव !
थारी पियारी ने पलक न आवड़े जी ॥ १४ ॥
उजड़ खेड़ा भँवरजी ! फर बसे जी,
हां जी ढोला ! निरधन रे धन होय।
जोबन गये पीछे कना बावड़े जी,
ओ जी थाने लिखूं बारम्बार,
जल्दी घर आओ जी क थारी धण एकली जी ॥१५॥
जोबन सदा न भँवरजो ! थिर रहे जी,
हां जी ढोला ! फिरती घिरती छांय।
पुल का तो बाया जी क मोती नीपजै जी,
ओ जी थारी प्यारी जी जोवे बाट,
जल्दी पधारो देश में जी ॥१६॥

स्वयंवर

[गोखा बैठी बनड़ी पान चाबे]

मारवाड़ी कन्या किस प्रकार का पति चुनना चाहती है उसके गुण इस गीत में दिये गये हैं। विशेष बात यह है कि वह अपने पिता को पतिदेव में क्या गुण होना चाहिये यह बताया है और पति काशी का धुरंधर पंडित होना चाहिये। रंग रूप की कुछ परवाह नहीं, ऐसा कहा है। पाठक देखिये मारवाड़ी कन्या को प्राचीन समय में कितना अधिकार था। आज कल जैसे गाय बैल की तरह उन्हें कुर्बान किया जाता है वैसा नहीं किया जाता था। वह गीत इस प्रकार है :—

गोखा बैठी बनड़ी पान चाबे फूल सूँघे।
करे ये बाबा जी सूं बीनती ॥
बाबाजी देस देता परदेश दीजो।
म्हारी जोड़ी रो वर हेर जो ॥
हंस खेल ए ! बाबाजी री प्यारी बनड़ी।
हेरयो ए फूल गुलाब रो ॥
कालो मत हेरो बाबाजी कुल ने लजावे।
गोरो मत हेरो बाबाजी अंग पसीजे ॥
लांबो मत हेरो बाबा सांगर चूँटे ।
ओछो मत हेरो, भाबाजी बावन्यू बतावे ॥

ऐसो वर हेरो कासी को बासी ।
बाई रे मन भासी हस्तीं चढ़ आसी ॥

रण उत्सुकता

[इक थंभियो ढोला ! महल चुनाव]

कई बहानो से स्त्री अपने पतिदेव को कुछ समय के लिये घर रहने के लिये आग्रह करती हैं परन्तु पति अपने कर्तव्य से बिमुख नहीं होता और दूसरों को एवजी में न भेज कर स्वयं नौकरी चल पड़ता। इसका वर्णन इस गीत में दिया है:-

इक थंबियो ढोला ! महल चुनाव,
चारो दिशा में राखो गोकड़ा जी म्हारा राज ।
गोके गोके दिवला संजोव राजिदां ढोला,
दीया रे चानणिये ढालू ढोलियो ।
बादल बरणी सेज बीछाव,
हातां ने ढोलावुं मैं तो बीजणो[1] ।
सूतां हंजा मारु सुख भर नींद, सुख भर नींद,
इतने ने राइको[2] हेलो मारियो जी म्हारा राज ॥

१—पंखा ; २— ऊँट को चराने वाले ।

उठो सुन्दर गोरी, दिवलो संजोव,
दीया रे चांनणिये कागद बांचियाजी म्हारा राज।
लिखियो ओ सुन्दर गोरी, घोड़ा ने सिर पाव,
लिखी है जोधाणे[1] गढ री चाकरी जी म्हारी नार॥
मरजो रे राईका थारोड़ी जी नार॥
सेणां रो बिछवो दुशमी पाड़ीयो जी म्हारा राज।
मत दो सुन्दर गोरी राईका ने गाल,
राईको राजाजी रे मेल्यो आवियो जी म्हारी नार॥
पेली ओलग[2] हंजा मारू सुसराजी ने मेल,
हमके ने उनालो खांतिला[3] घरे बसोजी म्हारा राज।
सुसराजी री सुन्दर गोरी जावे रे बलाय,
म्हारे ने सरीखा बेटा घोड़े चढ़े जी म्हारी नार॥
दूजी ओलंग हंजा मारू जेठ जी ने मेल,
हमको जी चोमासो आली जा घरे बसोजी।
जेठजी री कलागारी नार नित उठे ने जगड़ो नेल सी
तीजी ओलंग हंजा मारू! देवरजी ने मेल॥
हमके तो सीयाले मद छक्या घरे बसो जी म्हारा राज,

१—जोधपुर। २—एवजी। ३—खातर तवज्जोह करने वाला।

देवरजी री बाली भोली नार, उबी ने फिरलावे।
कायर मोर ज्यूं जी म्हारी नार,
इतरां में ओ हंजा मारू! थेईं रे सपूत ॥
नितरा ने पधारो जोधाणे री चाकरी म्हारा राज,
ईतरा में सुन्दर गोरी मैं ही रे सपूत।
नितरा तो उठे ने जावां जोधाणे चाकरी जी म्हारी नार,
उठो ! बाईसा डागलिये चढ़ जोय ॥
कुणजी रे सीधाया कुणजी घरे वसे जी म्हारा राज,
चढिया भावज म्हारोड़ो बड़ बीर, थाने सुगणी रो
साथबो।
झेली सुन्दर गोरी घोड़े री लगाम,
आसूं तो रलकाया कायर मोर ज्यूं जी म्हारा राज ॥
लीनी हंजा मारू हीवड़े लगाय,
आसुंड़ा तो पुंछिया हरिये रूमाल सूँ जी म्हाराराज।
देवो नी सुन्दर गोरी हंस हंस सीख,
साइना सीधाया छेटी में पड़ाजी म्हारी नार ॥
सीकड़ली[1] हंजा मारू दीवी रे नहीं जाय,

१—विदाई की आज्ञा।

छाती ने भरीजे हीवड़ो उबके जी म्हारा राज।
इक थंबियो ढोला महल चुनाव॥

---

(२)

कसूम्बो

आई रे आई मारू सावणीये री तीज राय सईयां ने
कसूम्बो रे मारा गाढा मारू ओढीयो॥ १॥
म्हाने रे मारू कसूम्बे रो झाझो[1] चास[2]
राय थे सिधावो रे ईडर गढ री चाकरी॥ २॥
चाकरड़ी रे मारू थांरे भाभेजी ने मेल राय हमके रे
चौमासे रे मारा गाढा मारू घर बसो॥ ३॥
भाभेजी री गवरा दे जावे रे बलाय, राय म्हारे रे
सरीखा रे मारे भाभेजी रे दीकरा[3]॥ ४॥
चाकरणी रे मारू थांरे बड़ोड़े बीरेजी ने मेल
राय भरीये ने भाद्रवे रे मारा दमड़ो रा लोभी
घरे बसो॥ ५॥

१—अधिक। २—चाहना। ३—बेटा।

बड़ोड़े बीरेजी री गवरादे लड़ोकड़ी नार,
राय सांझतड़ी रीसवेली मारे भाभेजी सुं मोरचो
मांड से ॥ ६ ॥

चाकरड़ी रे मारू थारे छोटोड़े बीरे जी ने मेल,
राय आयो रे
चोमासो रे भांजा गाढा मारू घरे बसो ॥ ७ ॥
छोटोड़े बीरे री गवरादे नांनकड़ी सी नार।
राय ऊभोड़ी कमलाईजे कँवल फूल ज्यों ॥ ८ ॥
चाकरड़ी ने मारू थांरे बेनोई जी नें भल मेल।
राय आयो रे बरसाले रे मारे नणदी रा बीरा
घरे बसो ॥ ९ ॥
बेनोईजी री गवरादे जावे रे बलाय,
राय बे नड़ली सुणीजे रे इये सावणीये री तीजणी ॥१०॥
चाकरणी रे मारू थांरे हालीड़े[1] ने भल मेल,
राय अब के रे बरसाले रे मारा गाढा मारू घरे
बसो ॥ ११ ॥
हालीड़े री गवारा दे जावे रे बलाय,
राय हालीड़े रा बोया मौंजे मोती नीपजे ॥ १२ ॥

१—हरवाह।

परिवार-प्रेम

[नीबू]

मारवाड़ी स्त्री अपने पारिवारिक जनों से इतना प्रेम दर्शाती है, अपने नणंद व देवर और पति को कितना सम्मान करती है। यह गीत से देखियेः—

उदयापुर सूं बीज मंगाय, ओ धण वारी रे हंजा।
जोधाणे री बाड़्या में नीबूं नीपजे ओ राज ॥ १ ॥
माखणिया री पाल बंधाय ओ धण वारी रे हंजा।
दूधा ने सींचाओ ढोलाजी रो नीबूड़ो ओ राज ॥२॥
नीबूड़े री जड़ गई पताल, ओ थां पर वारी रे सैयां।
सोयां ने कोसा पर नीबू फैलियों ओ राज ॥ ३ ॥
नीबूड़े री गहरी गहरी छांय, ओधण वारी रे हंजा।
को ईनें मत तोड़ो भँवरजी रो नीबूड़ो ओ राज ॥४॥
नणदल बाइ तोड़िया नीबूड़े रा पान, ओ थां पर वारी रे सैयां।
देवरजी छंदगाला[1] तोड़े कामड़ी[2] ओ राज ॥ ५ ॥
नणदल बाईसा ने सासरिये[3] पहुँचाय, ओ थां पर वारी रे सैयां।

१—शौकीन। २—हाथ में रखने की बेत। ३—सुसराल।

देवरजी छंदगाला ने गढ री चाकरी ओ राज ॥ ६ ॥
नणदल बाई सासरिये नहीं जाय, ओ धण वारी रे हंजा।
देवरजी छंदगाला नहीं जावे चाकरी ओ राज ॥७॥
नणदल बाई रे बेलड़ली[1] जोताय, ओ धण वारी रे हंजा
देवरजी नखराला रे हस्ती घोड़ला ओ राज ॥ ८ ॥
नणदल बाई रे चूंदड़िया रंगाय, ओ थां पर वारी रे। सैयां।
देवरजी नखराला रे पिचरंग मोलियो[2] ओ राज ॥९॥
नणदल बाई रे चूड़लियो चिराय, ओ था पर वारी रे हंजा।
देवरजी नखराला रे चिटियो दांत री ओ राज ॥१०॥
नणदल बाई रे गहणोइ घड़ाय ओ थां पर वारी रे सैयां।
देवरजी नखराला रे डोरो माठिया ओ राज ॥ ११ ॥
नणदल बाई सासरिये भल जाय, थां पर वारी रे हंजा।
देवरजी नखराला जावे चाकरी ओ राज ॥ १२ ॥
नणदल बाई रे लापसड़ी रंदाय हे ओ धण वारी रे हंजा।
देवरजी छंद गाले रे घेवर छाटमा हो राज।

१—बेलगाड़ी। २—सुंदर रंग रंगीला साफ़ा।

नीबूड़े री छइया हीडों घाले हे ओ धण वारी रे हंजा।
छैलो ने मारवण दोइ हीडें हींडसी ओ राज ॥१३॥
नीबूड़े री छया जाजम ढाले हे ओ धण वारी रे हंजा।
ढोलो ने मारवण दोउ चौपड़ खेलसी हो राज ॥१४॥
नीबूड़े री छयां पेड़ा लाव हे ओ धण वारी रे हंजा।
छैलो ने महाराणी दोउ जीमसी हो राज ॥ १५ ॥
नीबूड़े री गहरी गहरी छांय ओ थां पर थारी रे सैवां।
ढोला ने मरवण सुख भर पोढिया ओ राज ॥ १६ ॥

—:o:—

बधावा (मंगलाचरण)

ये गीत स्त्रियें हरेक मंगल उत्सव के अंत में गाती हैं। इसमें स्त्री अपने परिवार के प्रत्येक कुटम्बी की तुलना अपने शृङ्गार की भिन्न भिन्न वस्तुओं से करके उनका कितना सुन्दर परिचय दिया है:—

पसवाड़े ए कस री गज बेल।
सहेलियां ए आंबो मोरिओ[1] ॥

१—फूल आना।

म्हारा सुसरोजी गढां रा राजवी,
सासूजी ए ! मारा रतन भंडार ।
म्हारा जेठ बाजूबंद बाँकड़ा,
जेठाणी ए मारी बाजूबन्द री लूंब ॥सहेलियाँ० ॥१॥
म्हारा देवर दांत रो चूड़लो,
देराणी चुड़ला री मजीठ ।
म्हारी ननद कसुमल कांचली,
ननदोई कसणे[1] री लूंब ॥ सहेलिया० ॥ २ ॥
म्हारो पूतज घर रो चाँदणों,
कुल वधु ए दिवले री जोत ।
म्हारी धीवज[2] हाथ री मूंदड़ी,
जवाँई ए मूंदड़ी रो काच ॥ सहेलियां० ॥ ३ ॥
म्हारा सायब मारा तिलक लिलाड़,
सायबाणी म्हें तो सेजाँ री सिणगार ।
म्हें तो वारी ओ सासूजी थारी कूख ने,
जिण जाया ओ अर्जुन भीम ।
म्हें तो बारी ओ बाई जी थारी गोद ने,

१—लड़की । २—पीठ की तरह कांच ली को बाँधने के डोरे ।

जिण खिलाया लिछमण राम।
म्हें तो वारी ए बहुज थारी जीभ ने,
जियां बखाणियो इसो परिवार,

पतिव्रत–प्रकाश

[सुरता भीलणी]

इसमें किसी जागीरदार और भील स्त्री का सम्वाद है। भीलनी ग़रीब व निर्धन है परन्तु अनेक प्रलोभन देने पर भी अपने धर्म पर अटल रहती है :—

सुरता भिलणी है भिलणी रावजी बुलावे म्हेला आव।
चुड़ोने पेहराउ हस्ती दांतरो ॥
मोटा रावजी हो रावजी नही ने मेहलां रो माँने कोड।
झूपड़ी भली हो म्हारा भीलरी, बीलिया ने भला
हो मारा भीलरा ॥
सुरता भिलणी है भिलणी रावजी बुलावे मेहलां आव।
थाल जीमाऊ मोटा राव रो ॥
मोटा रावजी हो रावजी नही है थालसू मारे कांम
टुकड़ा भला हो मारा भीलरा ॥

सुरता भीलणी है भिलणी रावजी बुलावे ढोल्ये आव।
सेज देखाउ ए मोटा राव री ॥
मोटा रावजी हो रावजी नही रे ढोल्यां सू म्हारे कॉम।
मांचो तो भलो रे म्हारा भीलरो ॥

पति-प्रेम

[सोढा राणा मने मारे पीवर (पीहर) मेलो०]

अधिक समय हो जाने से स्त्री अपने पीहर (मैके) को जाने की इच्छा करती है। परन्तु पति समझाता है कि उसका वास्तविक घर-कुटुम्ब सुसराल ही है, पीहर नहीं। और इस बहाने से अपने प्रिया को विलमाता है—

सोढा रांणा मने मारे पीवर मेलो रांजीन्दा ढोला
ओलूं घणी आवे मारा बाभोसा री ॥ १ ॥
सुन्दर गौरी ओलू थांरी परी रे नीवार चंपक वरणी,
बाभोसा रा भोला सुसरोजी भांगसी ॥ २ ॥
सोढा रांणा मने म्हारे पीहर मेलो राजींदा ढोला
ओलू घणी आवे मारी मांय री ॥ ३ ॥
सुन्दर गोरी ओलू थांरी परीरे नीवार मृगानेणी
माताजी रा भोला सासुजी भांगसी ॥ ४ ॥

सोढा रांणा मने मारे पीवर मेलो राजींदा ढोला
ओलू मांने आवे मारे बीरे री ॥ ५ ॥
सुन्दर धण तूं ओलू थांरी परीरे नीवार चंपकवर्णी
बीरोजी रा भोला देवर भांगसी ॥ ६ ॥

---

(२)

पति नौकरी पर बाहर है। उस समय पति पत्नी में विरह व करुणा-सूचक वार्त्तालाप कैसे अनूठे ढंग से मारवाड़ी स्त्री कवि ने वर्णन किया है। उसका गुलसेरी नामक गीत यहां दिया जाता है:—

कोरा जी कोरा कागद लिखावां ढोला कागद में रे
कसतूरी रे ज्यों हीने खोलो ज्योंही सुगन्ध घणे री
साहिब
ज्यों हीने तोलों ज्योंही पूरी रे हांजी रे मिरघानेणी रा
साहिब घरां ने पधारो रे ॥ १ ॥
आंमा जी सांमा महल अडावों ढोला जेरे बीच राखां
गुलसेरी रे
गुलसेरी रे हांजी रे ऊजल दंती रा साहिब केण
बिलमाया रे ॥ २ ॥

आंमा जी सांमा झरोखा अड़ावो साहिब जेरे बिच
राखां
एक बारी रे अे बारी में क्या दीसे ढोला एक पुरुष
दूजी नारी रे
हांजी रे मीठी बोली रा साहिब मेलों में पधारे रे ॥३॥
केसर कीकूं री गार घतावों साहिब जण सु नीपावों,
गुलसेरी रे हों जी रे भायों प्यारी रा साहिब केण
विलमाया रे ॥ ४ ॥
आमा जी सांमा ढोलीया ढलावो ढोला जेरे बीच राखां
झबा झारी रे प्रीतम प्यारी रा साहिब सेजों ने
पधारो रे ॥ ५ ॥
आंमा जी सांमा दीवला संजोकों साहिब जेरे विच
ऊभी रम्भा रांणी रे, हां जी रे रम्भा रांणी रा ढोला
बेगा रे पधारो रे ॥ ६ ॥
गाय दुहावो, दही जमावों ढोला, हाथां री रे चतुराई रे
दही जमावों मही बिलोवों साहिब प्याले री रे
झल साई रे हां जी रे मारे ऊगते सूरज ने केण
बिलमायो रे ॥ ७ ॥
धण रे तो आंगण के वड़ो रोपावो ढोला, दांतणीये री

मिस आवो रे हां जी रे मिरघा नेणी रा साहिब घरों
ने पधारो रे ॥ ८ ॥

धण रे तो आंगण हवद खुंणावों साहिब झूलण रे
मिस आवो रे
हां जी रे ऊजल दंतीरा साहिब केण बिलमाया रे ॥९॥

धण रे तो आंगण गांधीणो बोलावो, ढोला मड़दन रे
मिस आवो रे ।
हां जी रे जाये रे दासी म्हारे महाराजा ने समझावो रे १०

धण रे तो आंगण चरूड़ा चड़ावो, साहिब भोजन रे
मिस आवो रे
हां जी रे अमरत बोली रा साहिब, मेलों में
पधारो रे ॥ ११ ॥

धण रे तो आंगण बीड़ला बंधावो ढोला मूं छणीये रे
मीस आवो रे
हां जी रे मांजे बेंबंते बादल ने केण विलमायो रे ॥१२॥

धण रे तो आंगण ढोलियो ढलावो साहिब पोढण रे
मिस आवो रे
हाँ जी रे सुन्दर गोरी रा साहिब सेजों में पधारो रे ॥१३॥

धण रे तो आँगण बाग लगावों साहिब मिलणे रे
मिस आवो रे।
हाँ जी रे सिरघा नेणी रा साहिब बागों रा मेवासी
रे ॥ १४ ॥

——

प्रेम प्रलाप

[इण सरवरीये री पाल हंगामी श्रो ढोला रे]

पति विदेश से घर आया है। उस समय वियोग काल की बातां को पति और पत्नी आपस में पूछते हैं:—

इण सरवरीये री पाल हगाँमी[1] श्रो ढोला रे।
पीपलीया हो ढोला पीपलीया थोड़ा बड़ला
चौगणा हो राज ॥ १ ॥
बड़ला तो परा रे बढाय हगाँमी हो ढोला रे।
पीपलीये री छाँया रे जाजम ढालसाँ हो राज ॥ २ ॥
आप सिधावो परदेश हगाँमी ढोला रे।
थाँरी अवलूड़ी रे धण ने आवती हो राज ॥ ३ ॥

१—उत्साही।

हूँ थानें पूछाँ बात हस हस पूछाँ बात हगाँमी
ढोला रे ।
भँवरीयो छेलो मारे झझीखेह[1] घणी हो राज ॥ ४ ॥
गयाता बेलीड़ा[2] री गोढ[3] मारी सुन्दर गोरी ।
भँवरीये छेलों मारे झझीखेह घणी हो राज ॥ ५ ॥
हूँ थाँने पूछूँ बात हस २ पूछूँ बात मारी सुन्दर
गोरी रे ।
आँखड़ल्याँ रो सुरमो फीको क्यों पड़यो हो राज ॥ ६ ॥
पधारीया साथीड़ा रे साथ हगाँमी ढोला रे ।
थारी तो अवलूड़ी रे धण ने आवती हो राज ॥
हूँ थाँनें पूछाँ बात हस हस निरमोया भँवरजी रे ।
कड़ीयें[4] रो कटारो ढीलों क्यों पड़यो हो राज ॥ ८ ॥
गया ता महाराजा रे साथ मारी सुन्दर गोरी रे ।
घुड़ला खेलावता ढीलो यो पड़यो हो राज ॥ ६ ॥
हूँ थानें पूछूँ बात हस २ पूछाँ बात मारी
सुन्दर गोरी रे ।
बाँहयों रो चुड़लो ढीलो क्यों पड़यो हो राज ॥ १० ॥

१—कष्ट । २—साथी । ३—प्रीति भोज । ४—कमर ।

आप पधारिया बेलीड़ा रे साथ हगाँमी ढोला रे।
थाँरी अबलूड़ी धण ने आवती हो राज ॥ ११ ॥
चालो चालो नगीने रे देश मारी सुन्दर गोरी रे।
थाँरो पीहरीयो म्होंरो सासरो हो राज ॥ १२ ॥
थे दाड़म हूँ दाख हगाँमो ढोला रे।
हेके ने बागों में दोय निपज्या हो राज ॥ १३ ॥
थे मोती हूँ लाल हगाँमी ढोला रे।
हेकी ने नथड़ी में दोय प्रोवीया हो राज ॥ १४ ॥
थे चावल हूँ दाल हगाँमी ढोला रे।
हेके ने राँसीले दोय जीमीया हो राज ॥ १५ ॥
थे खाँडो हूँ ढाल हगाँमी ढोला रे।
हेके ने राँसीले दोय झेलीया हो राज ॥ १६ ॥
थे अटण धण चाल हगाँमी हो ढोला रे।
हेके ने राँसीले दोय घेरीया हो राज ॥ १७ ॥
हूँ थाने पूछू बात हस २ पूछों बात हगाँमी
ढोला रे।
परदेशां बेठा थां कांई कीया हो राज ॥ १८ ॥
दिन दिन लेखण हाथ मारी सुन्दर गोरी रे।
सांजड़ली पड़ी रे रौकड़ सारता हो राज ॥ १९ ॥

हूँ थाने पूछों बात, हस हस पूछू बात, मारी
सुन्दर गोरी।
थां पीहरीये बेठा थां कांई कीया हो म्हारा राज ॥ २० ॥
दिन दिन सईयां रे साथ हगांमी ढोला रे।
सांजड़ली पड़ी रें पड़वे पोढ़ती हो राज ॥ २१ ॥

बसंत विहार

[जला रे आंमलियां पाकी ने अब रुत आई रे]

बसंत ऋतु आने पर आम की कलियें खिल उठीं, ऋतु में नवजीवन व सौन्दर्य का संचार हुआ। ऐसे मनोरम समय में वियोगिनी अपने प्रवासी पति की याद करती हुई सौतीया डाह का संदेह करती है और इस प्रकार गीत गाती है :—

जला रे आंमलियां[1] पाकी नै अब रुत आई रे
म्हारी जोड़ी रा जला, मिरगानेणी रा जला
आंमलियां पाकी ने अब रुत आई रे जला ॥ १ ॥
जलां रे राजां मांयलो राज भलौ राठोड़ी रे
म्हारी जोड़ी रा जला पीया प्यारी रा जलां
राजां मांहलौ राज भलो राठोड़ी रे जला ॥ २ ॥

१—इमली।

जला सहरां मांयलो सहर भलो जोधाणों रे
म्हारी जोड़ी रा जला, पिया मारूणी रा जला
सहरां मांयलो सहर भलो जोधाणां रे जला ॥
जलां रे छींटा मांयली छींट भली मुलतानी रे
म्हारी जोड़ी रा जलां, चीता लंकी रा जला
छींटा मांयली छींट भली मुलतानी रे जला ॥
जला रे रातूं धण रो पेटड़लों घण (हद) दूख्यो रे ।
म्हारी जोड़ी रा जला, बादल भरनी रा जला ।
पेटड़लो दूख्यो नै धण दुख पाई रे जला ॥
जला रे कूवड़ियों रो ठंडो इमरत पाणी रे
म्हारी जोड़ी रा जला, चन्दा बदनी रा जला ।
कुवड़ियो रो ठंडो इमरत पाणी रे जला ॥
जला रे ठंडो पांणी साहिबजी ने पाइजे रे ।
म्हारी जोड़ी रा जला, मिरगा नेणी रा जला ।
खारोड़ो म्हांरे सोकड़ली ने पाइजे रे जला ॥

बसंत-बीणा

[कहिं रे मिजाज करूँ रसिया]

॥ लोटियों का गीत ॥

यह गीत मारवाड़ में चैत्र मास में बड़े चाव से स्त्रियें व कन्याएँ गाती हैं जब वे शिर पर लोटे पर लोटा लिये वरुण देवता की पूजा करने तालाब, बावड़ी या कुएँ पर जाती हैं और वहाँ से जल भर कर पुष्प लताओं से सुसज्जित होकर बेवड़ा (दो कलसे) लिए हुवे शृङ्गार रस का ये गीत गाती हुईं वापस घर लौटती हैं। उस गीत का नमूना इस प्रकार हैं :—

दल बादल बीच चमके जी तारा
सांज समै पीव लागे जी प्यारा
कांई रे जबाब करू रसिया
जाब करूं ली, जबाब करूली
आलीजे री सेजां में रीझ रहूंली।
कहिं रे मिजाज करू रसिया ॥ १ ॥
माथा रो रस मैहमद लीयो
मेहमद[1] रो रस राजिदें लीयो
कहि रे गुमान करूं रसिया

१—सिर पर पहिनने का एक प्रकार का गहना।

कहि रे मिजाज करूं रसिया
हाँ रे मद छकिया री सेजां में रीझ रहूली
कहि रे जवाब करू रसिया ॥ २ ॥

गणगौर *

[खेलण दो गणगोर भँवर, म्हाने रमण दो दिन चार]

ये गीत चैत्र मास में स्त्रियें गाया करती हैं। इसका भाव यह है कि स्त्री अपने पति से इस सुन्दर बंसत ऋतु में खेलने की आज्ञा मांगती है और कई प्रकार के गहने कपड़े पहनने की इच्छा प्रकट करती है :—

---

* राजपूताने में "गणगोर" नामक एक बड़ा त्योहार मनाया जाता है। चैत्र सुदि ३ को सायंकाल के समय भिन्न भिन्न हिन्दू जातियाँ अपने ईशर अर्थात् ईश्वर-महादेव और गणगोर (गौरी-पार्वती) की काष्ठ मूर्तियाँ सजा कर उनका गाजे बाजे से जलूस निकालते हैं। अनुमान से ये त्योहार पार्वती के गौने (मुकलावा) का सूचक है। या शायद मुद्रा राक्षस आदि नाटक ग्रंथों में "बसन्तोत्सव" के नाम से जो उत्सव वर्णित है उसी ने "गणगौर" का रूप धारण कर लिया हो।

यह त्योहार क़रीब १५ रोज़ तक जारी रहता है। पहले शाम के समय स्त्रियें व लड़कियां अपने सिर पर कलसे पर

खेलण दो गनगोर भँवर म्हानें पूजण दो गनगौर
(म्हानें रमण दो गणगौर)
हो म्हारी सइयाँ जोवे बाट, विलाला म्हानें खेलण दो
गनगोर ॥ १ ॥
भल खेलो गनगोर सुन्दर गोरी, भल पूजो गनगोर ।
होजी थांने देवे लाडन पूत अंतस, प्यारी भल खेलो
गनगोर ॥ २ ॥
माथे नां मेमद लाव भँवर, म्हारे माथे ने मेमद लाय
होजी म्हारी रखड़ी रतन जड़ाव, भँवर म्हाने खेलण
दो गनगोर ॥३॥
कानों ने घड़ीया लाय, भँवर म्हारे कानों नां
घड़ीया लाय,
होजी म्हारा झूटणा हीरे जड़ाय, भँवर म्हानें खेलण
दो गनगोर ॥ ४ ॥

कलसे तीन चार रख कर—जिनमें जल और पुष्प लताएँ सजी रहती हैं—तालाब या बावड़ी से भर कर गाजे बाजे से गीत गाती हुई घर आती हैं। इस त्योहार की मनोरंजकता ईशर गणगोर की सवारी निकालने पर अन्त सीमा तक पहुँच जाती है।

नेवड़ों नां सुरमो लाय, भँवर म्हारे नेवड़ों नां
सुरमो लाय।
होजी म्हारी टीबी रांसीले री रींझ,
भँवर म्हाने खेलण दो गनगोर ॥ ५ ॥
मुखड़े ने वेसण लाव भँवर,
म्हारे मुखड़े ना वेसण लाव।
होजी म्हारी नथड़ी रतन जड़ाव,
भँवर म्हाने खेलण दो गनगोर ॥ ६ ॥
हीवड़े नां हास घड़ाय भँवर,
म्हारे हीवड़े ना हांस घड़ाय।
होजी म्हारो तिमणो हीरे जड़ाय,
भंवर म्हाने खेलण दो गनगोर ॥ ७ ॥
बांहयां ने चुड़लो लाव भँवर,
म्हारे बांहयों नो चुड़लो लाय।
होंजी म्हारो गजरो रतन जड़ाय,
भँवर म्हाने खेलण दो गनगोर ॥ ८ ॥
कड़ियां नें कड़बंध लाय भँवर
म्हारे कड़ीयों नां कड़बंध लाय।
होंजी म्हारी वटुंवो आलीजे री रीझ

भँवर म्हाने खेलण दो गनगोर ॥ ९ ॥
पगलों नें पायल लाय भँवर
म्हारे पगलों नां पायल लाय।
हांजी म्हारा बिछीया रतन जड़ाय
भँवर म्हाने खेलण दो गणगौर
विलाला म्हाने रमण दो दिन चार ॥ १० ॥

उपरोक्त त्योंहार के सम्बन्ध का यह भी गीत है। इसमें स्त्री अपने पति को विदेश जाने से वसन्त ऋतु तक के लिये रोकती है :—

(२)

म्हारे माथा ने महिमद ल्याव
म्हारा हंजा मारू ईयां ही रेवो जी
ईहांही रहो उगंता सूरज इंहा ही रेवो जी
थाने कोट बूंदी मे होसी गणगौर
म्हारां हंजा मारू ईहां ही रेवो जी ॥ १ ॥
जावा दो छिणगारी नार जावा दो ना ए
म्हा रां साथीड़ा उभा दरबार जावा दो ना ऐ ॥ २ ॥
म्हारे काना ने कुण्डल ल्याव म्हारा
म्हारां हंजा मारू ईयांही रेवो जी

इंहा ही रेवो उगंता तायत, ईहाही रेवो जी

थाने रसता में होसी गणगोर

म्हारे गलै ने कंठी ल्याव

म्हारां हंजा मारू ईहांही रेवो जी

ईहांही रेवो उगता सूरज इंहा ही रेवो जी ।

म्हारी बायां ने बाजुबन्द ल्याव

म्हारा हंजा मारू ईहां ही रेवो जी ॥

म्हारे पुंचां ने गजरा ल्याव

म्हारा हंजा मारू इंया ही रेवो जी ॥

म्हारी होली रा कर गया कौल

हंजा मारू इंहा ही रेवो जी ॥

जावा दो छिणगारी नार जावा दो ना जी

थानें आय पुजावां गणगोर

म्हारी मिरघानेणी जावा दो ना ए ॥
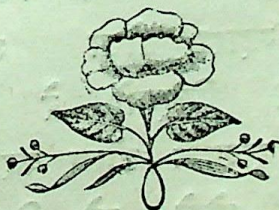
पना मारू

सावण की बहार है और नायक बीकानेर नौकरी पर गया हुआ है। युवती मारवाड़ में बैठी उसके विरह में टकटकी लगाये हुवे यह गीत गाती है :—

कुण थानें चाला चालियां हो, पना मारूजी हो
किण थानें दीवी रे ढोला सीख
सीख हो पिया प्यारो रा ढोला जी हो
हां रे सावणियो बिलूम्यो रे बीकानेर ॥ १ ॥
साथीड़ा तो चाला चालिया हो
सुन्दर गौरी जी हो, राजाजी म्हाने दीवी है सीख
प्यारी सीख, सीख हो मृगानैणीजी हो।
हां रे सावणियो बिलूम्यो रे बीकानेर ॥ २ ॥
साथीड़ा रे हुईजो कांणी बेटियां हो
पना मारूजी हो राजाजी री बधजो रे बेल
बेल हो म्हारा ढोला मारूजी हो
हो सावणियो बिलूम्यो रे बीकानेर ॥ ३ ॥
चढो तो सजाऊं ढोला करहलो हो
ढोलाजी हो पोढो तो बिछाऊँ सेज

हो सेज म्हारा पना मारूजी हो ।
सावणियो विलूंभियो रे बीकानेर ॥ ४ ॥
साथीड़ा रे रन्दाऊं ढोला लापसी हो
पना मारूजी रे रंदाऊं हो गुदली खीर
खीर हो चीता लंकी रा ढोला जी हो ।
हां रे आई रूत मालो हो बीकानेर ॥ ५ ॥

(२)

चाल्या पन्ना मारू जोधाणे रे देश, पन्ना मारू
जोधाणे री बाड़ी निमड़ली झूक रई जी म्हारा राज
क्यां रे बंधाऊ नीमड़ली री पाल पन्ना मारू
क्यांरे सिंचाऊँ हरि रा रूखन जी म्हारा राज
गुड़ घी बंधाओ नीमड़ली री पाल पन्ना मारू
दूध सिंचाओ हरिये रूखन जी म्हारा राज
मत कोई तोड़ो नीमड़ली री पाल पन्ना मारूँ
दूध सिंचाऊँ हरिये रूखन जी म्हारा राज

नणद बई तोड़े नीमड़ली रा पान पना मारूँ
देवरियो छिनगारो तोड़े सीट की जी म्हारा राज
नणदल बाई ने सासरिये खिनाये पन्ना मारू
देवर ने खिनाय द्यां राजाजी री चाकरी जी म्हारा राज
नणदल बाई ने मोतीड़ा रो हार पन्ना मारू
देवर ने परणधां म्हासैं छोटी भैणड़ी जी म्हारा राज
उगी नीमड़ली पान दुपान पन्ना मारू
तड़ी ऊगतड़ी जग मोह्यो गोरी रा साहेबाजी म्हारा राज
बैठया पन्ना मारू तख्त बिछाय
कागद तो आयो हाडे राव रा जी म्हारा राज
कागद पन्ना मारू बांच सुनाय
के रे लिख्यो है कोरे कागदां जी म्हारा राज
कागद मृगानयणी बाच्या न जाय मृगानयणी
छाती तो फाटे हीवड़ो उछले जी म्हारा राज
रावण छेवड़ सात सलाम मृगानयणी
बिच बिच लिख्या पूरा ओलमा जी म्हारा राज
कागद पन्ना मारू पाछा जी फेर सेला मारू
इबका चोमासा राजन घर बसो जी म्हारा राज
ओलंग थारा बाबा जी ने भेज पन्ना मारू

इब कै चोमासा राजन घर बसोजी म्हारा राज
बाबा जी री चढ़ै है बलाय मृगा नयणी
हमरे सरीसा कंवर घोड़ां चढे जी म्हारा राज
ओलंग थारे बडोड़े वीर ने भेज पन्ना मारू
चतुर चोमासा राजन घर बसो जी म्हारा राज
बडोड़े वीरे सात बरस री धी ए मृगानयनी
बाप रणया ओलंग वै चढे जी म्हारा राज
ओलंग थारे लोढिये वीरे ने भेज पन्ना मारू
चतुर चोमासे राजन घर बसोजी म्हारा राज
लोढिये वीरे रे नाजकड़ी सी नार मृगानयणी
महल चढती सुन्दर वा डरे जी म्हारा राज
ओलंग थारे भायला ने भेज पन्ना मारू
चतुर चोमासे राजन घर बसोजी म्हारा राज
भायलां रा ऊखल खड़ी नार मृगानयणी
उठ सवांरा झगड़ो वा करे जी म्हारा राज
जे थे चाल्या राजा जी रे देश पना मारू
बरज चढो ना आभा री बिजली जी म्हारा राज
बीजड़ली धण बरजी न जाय मृगानयणी
बे रूत चिमकै सावण भादवा जी म्हारा राज

जे थे चाल्या राजाजी रा देश पन्ना मारू
बरज चढो ना पडोसण को दीवलो जी म्हारा राज
दीवलड़ो धण वरजो न जाय मृगानयणी
जिकां कंथ घरा बसै जी म्हारा राज
इतना में पन्ना मारू थे ई कपूत पन्ना मारू
चढती जवानी चाल्या चाकरी जी म्हारा राज
पना मारू आप तो सिधावौ परदेश
वरजो नी वागां हो माहिलां,
हो मोरीया रे हो म्हारां राज ॥ ८ ॥
सुन्दर गोरी मोरया म्हां सू वरज्यां न जाय
वेही ने बोले रुत आयां आपरी हो म्हारी नार ॥६॥
पना मारू आप ने सिधावो परदेश
वरजो ने वागां री हो मांयली कोयली म्हरां राज।१०।
सुन्दर गोरी कोयल म्हांसू वरजी न जाय
वा ही ने बोले हो रुत आयां आप री हो म्हारी नार॥११॥
पना मारू आपने सिधावो परदेश
सुन्दर गोरी हंस हंस देवो म्हानें सीख
ज्यूं ने चीत लागे हो चाकरी म्हारां नार॥१२॥
पना मारू सीखजू महांसू दीवी नहीं जाय

हीयो ने भरीजै छाती, ऊब कै हो म्हारां राज ॥१३॥
सुन्दर गोरी हीयो थांरो हीरां सूं जड़ाव
छाती ने जड़ावो हो मांणक मोतीयां हो म्हारी नार ।१४।
पना मारू आप तो सिधावो परदेश
वरजो ने सासूजी री हो माणीगर जीभड़ी हो
म्हारां राज ॥ १५ ॥
जीभज म्हांसू वरजी न जाय, थे ही नै बस राखो हो
मीरगानैणी आप री हो म्हारी नार ॥ १६ ॥
पना मारू आप तो सिधावो परदेश
म्हारी ने भोलावण किण नै दे चाल्या हो ॥ १७ ॥
सुन्दर गोरी थे तो हो अजड़ गिंवार
थारी ने भोलावण थांरा जीव ने हो म्हारी नार ॥१८॥
पना मारू हलचल हुई हलकार
खल भल हुई राठोड़ां री चाकरी हो म्हारां राज ॥१९॥

प्रवासी पति का बुलाना

[कोठे भुवाऊं डोडा इलायची रे म्हारा०]

अधिक समय हो जाने से वियोग में आतुर स्त्री किस बहाने से पति को घर बुलाने का आग्रह करती है। इस गीत में बताया है :—

कोठे भुवाऊ डोडा इलायची रे म्हारा,
लोटन करवा कोठे भुवाऊ नागर बेल।
ऐ जी ओ मिरगानेणी रा ढोला,
मारूणी उडीके घर आव ॥ १ ॥
धोरा भुवावो डोडा इलायची रा म्हारी
तनक मिजाजण–क्यारां भुवा दो नागर बेल
ए जी ओ म्हारां पन्ना भंवर जी
धाई रे कुमाई घर आव ॥ २ ॥
क्यासे सिचाऊ डोडा इलायची रे म्हारा
लोटण करवा क्यासे सिचाऊ नागर बेल।
ए जी ओ सेजा रां सूरज, मारूणी उडीके घर आव ॥ ३ ॥
दूदां सींचावो डोडा इलायची रे म्हारी,
मिरगा नैणी दूही से सीचावो नागर बेल।

ए जी बो बादल भरनी रा ढोला, घणो जी
कुमायो घर आव।

क्या से निनाणू डोडा इलायची रे म्हारे,
लोटण करवा क्यासे नीनाणू नागर बेल।
ए जी ओ बादीला भंवरजी मारूडी उड़ीके घर
आव।

खुरपा नीनाणू डोडा इलायची रे म्हारी,
चन्दा बदनी कसीया निनाणू नागर बेल
ऐ जी ओ चीता लंकी रा ढोला,
धाई मैं कुमाई घर आय ॥ ६ ॥
क्यासे चुटाऊं डोडा इलायची रे म्हारा
लोटण करवा क्यासे चुटाऊं नागर बेल।
ऐ जी ओ गज गहनी रा ढोला
प्यारो उडीके घर आव ॥७॥
छबल्या चुटावो डोडा इलायची ऐ म्हारी
घणी रे पियारी कोई डालां चुटावो नागर बेल
राजी ओ पिया प्यारी रा ढोला
कागलिया उड़ाऊं अब घर आव ॥
ए जी ओ चन्दा बदनी रा ढोला

नेनी रे बुन्द्यां रो बरसे मेह, म्हारे
छैल भंवर रा करवा रे मंजल घर आव
क्यां पर मंगाऊं-डोडा इलायची रे म्हारा
लोटण करवा क्यां पर मंगाऊं नागर बेल।
ए जी ओ छीनगारी रा ढोला, एजी ओ
प्यारी रा ढोला, प्यारीजी उडावे उभी काग ॥१०॥
गाडा मंगावो डोडा इलायची रे म्हारी
प्राण पियारी, कोई ऊंटा मंगावो नागर बेल।
ए जी ओ पिया प्यारी रा ढोला
घणोई कुमायो घर आव।
कठे तो सुकाऊ डोडा इलायची रे म्हारा
लोटण करवा कठेरे सुकाऊ नागर बेल
ए जी ओ मिरगा नेणी रा ढोला,
काया क्यूं जरावो घर आय ॥१२॥
छत पर सुकावो डोडा इलायची रे म्हारी
मिरगानैणी मेड़ी पर सुखावो नागर बेल।
ए जी ओ छीनगारी रा ढोला,
नेनी नेनी बुन्दक्या रो बरसे मेह ॥
कुण तो चावेलो डोडा इलायची रे म्हारा

लोटण करवा कुण चावेलो नागर पान।
ए जी ओ पिया प्यारी ए ढोला, ए जी ओ
बादल भरनी रा बालम, दौलत भर पाइ घर आव।
रसियो चावेलो डोडा इलायची रे म्हारा
लोटण करवा प्यारी धण चावेली नागर पान
ए जी ओ रंग रसिया ढोला, ए जी ओ सेजां रा
सूरज अब तो पधारो म्हारे देस ॥१४॥

कुर्जां

स्त्री अपने पति के वियोग में विवश होकर कुर्जां (राजहंस सा) नाम के पत्ती को सम्बोधित करके अपने पति के पास सन्देश भेजती है कि बहुत समय हो गया है। अब आप अवश्य स्वदेश लौटिये। इस गीत में महाकवि कालीदास के मेघदूत के काव्य रस जैसा रस प्रतीत होता है। गीत यह है :—

तूँ छै ए कुर्जां भायली, तूं छै धरम री बैण,
एक संदेशो ए बाई म्हारी ले उड़ो ए म्हारी राज।
कुर्जां म्हारा पीव मिलादे ए।
वीं लसकरिये ने जाय कहिये क्यूँ परणी थे मोय ?

परण पिराछित क्यूँ लियो ये जी रह्या क्यूँ न,
अनख कुँवार-कुँवारी ने वर तो घणां छा जी।
ऊठी कुर्जां ढलती माँझला रात,
दिनड़ो उगायो मारूजी रा देश में जी म्हाँरा राज
बैठ्या पना मारू तखत बिछाय,
कागद राल्या भँवरजी री गोद में म्हाँका राज।
आवो ए कुर्जां बैठो म्हारे पास,
कुणांजी री भेजी अठे आईजी म्हांरा राज।
थारी धण री भेजी अठे आई जी,
थारी धण का कागद साथ भँवर थे बाँच लेवो
म्हारां राज।
अन्न बिना रयो ए न जाय,
दूध दही थारी धण खण लिया जी म्हाँरा राज।
बिदली को सरब सुहाग,
काजल टीकी को थारी धण खण लियो जी म्हाँरा राज।
सोयाँ बिना रह्यो ये न जाय,
हिंगलूं ढोल्या को थारी धण खण लियो जी
म्हारां राज।
चुनड़ी को सरब सुहाग,

गोट मिसरू की थारी धण खण लियो जी म्हारां राज।
आज उणमणा हो रया जी, रह्यो के संदेशो आय,
के चित आयो थारो देसड़ो जी के चित आया माई बाप।
भायेला दिलगीरी क्यों लाया जी,
ना चित आयो म्हारो देसड़ो ना चित आया माई बाप।
भायेला म्हाने गोरी चित आई जी,
ओ ल्यो साथीड़ा थारो साथ।
ओ ल्यो राजाजी थारी नोकरी जी,
भायेला म्हें तो देश सिधारस्यांँ जी।
झटसी घुड़ला कस लिया जी कर ली घोड़े पर जीन,
करवा म्हाने बेग पुगाद्योजी।
दांतण करो कुवा बावड़ीजी, मलमल करो असनान,
भंवर थांनें बेग पुगाद्यां जी।
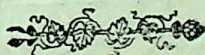
वर्षा-विहार

[सावण आयो ओ म्हारां सबरुतिया सरदार]

(राग मांड)

वर्षा ऋतु का समय है। स्त्री अपने पीहर (नैहर) जाने की इच्छा प्रकट करती है। पतिदेव वियोग को नहीं सह सकता और उनका आपस में सम्वाद इस प्रकार होता है :—

सावण आयो हो म्हांरा सब रुतिया[1] सरदार
भंवरजी ! सावण आयो हो ॥
हां रे राज ईंदर धडूके हो, हां रे राज
औ तो ईंदर धडूके हो, हां हो म्हारा घड़ीनै
घड़ी रा विसरांम, भँवरजी ईन्द्र धडूके हो ॥ १ ॥
हां रे राज औ तो मेहड़लौ ही बूठो हो
हां रे राज मेहड़लो ही बूठौ हो,
हां रे म्हारा पाली रा परधांन,
भंवरजी मेहड़लौ बूठो हो ॥ २ ॥
हां रे राज ऐ तौ हरियाही हूवा हो
हां रे राज, ढोला ! म्हांरा हरिया ही हूवा हो जी,
म्हांरा ढोला पलक पलक रा विसराम

१—सब ऋतु का जानने वाला।

भँवरजी हरिया हरिया हुवा हो ॥ ३ ॥
हां रे राज म्हांने पीहर मेलौ हो,
हां रे हो म्हांरा गढपतिया सिरदार
भंवरजो ! पीहर मेलो हो ॥ ४ ॥
हां रे राज गोरी हे आंणो[1] ही आयो है
अरि म्हांरी गोरी आंणौं ही आयो है
हां रे हो म्हारो सदा ही सवागण सुन्दर नार
मानेतण गोरी आंणो थांनू आयो हो ॥ ५ ॥
राज गोरी हे ओलू थांरी आवे हो,
अरे म्हांरी सुन्दर ओलू थांरी आवे हो
हां रे हो म्हारो सदाह सवागण घर री नार
सुन्दर गोरी (मांनेतण गोरी) औलूँ थारी आवै हो ॥६॥
राज ढोला साथे म्हारै चालो हो
हां रे हां ढोला साथे म्हारे चालो हो
हां रे हो म्हांरा गढपतिया उमराव भंवर जी
साथे म्हांरे चालौ हो ॥ ७ ॥
हां ए राज गौरी लाज मरां छां,

१—पति या उसका कोई रिस्तेदार उसकी स्त्री को पीहर से ले आने के लिये जाता है उसे "आंणां" कहते हैं।

हे हां ए गोरी लाज लाज मरा छां,
हे म्हांरी सदा हे सवागण घर री नार
हां हे सुन्दर गोरी लाज मरां छां हे ॥ ८ ॥
राज म्हांने रथड़ो जुताय दो हो
हां ओ म्हारा भर जोड़ी रा भरतार
भंवरजी रथड़ौ जुताय दो हो ॥ ६ ॥
हो जी हो राज ढोला धड़का ही आवे हो
अरे हो जी ढोलाजी धड़का ही आवे हो
हां जी म्हांरा गढपतिया उमराव
कंवर सा धड़का म्हांने आवे हो ॥ १० ॥
हां ए गोरी थांने सुखपाल मेलां
हे हां ए म्हारी सदा, हे मांनेतण सुन्दर नार
मिजाजण गोरी सुखपाल मेलां हे ॥ ११ ॥
हां ओ राज धूप पड़ै छै, ओ हां जी ढोला
धूप पड़े छै, हो हां ओ म्हांरा भर जोड़ी रा भरतार
भंवरजी धूप पड़े छै हो ॥ १२ ॥
हां ओ राज असूज मरां हो
हो हां ओ राज ढोला, असूंज मरां छां
हो हां ओ ढोला, म्हांरा भर ने जोड़ी रा भरतार

भंवरजी असूज मरां छां हो ॥ १३ ॥
हां ऐ राज गोरी झींणा ही ओढौ हो
हां ऐ गोरी झीणों ही ओढो हो
म्हांरी सदा हे सवागण सुन्दर नार
मानेतण गोरी ! झीणीं जी ओढौ हो ॥ १४ ॥
हांजी राज अंग अंग झाखे हो
हां जी म्हांरा सवरुतिया सरदार
कंवर सा अंग अंग झाखे हो ।
हां रे राज सांवली पड़ गई हो ।
हांजी म्हांरा घणा ने पियारा सिरदार
भंवरजी सांवली म्है पड़ गई हो ॥ १६ ॥
हां ए राजगोरी काची केसर पीओ
हे राजवण प्यारी काची केसर पीओ
हे म्हांरी सदा हे सवागण घर नार
सुन्दर गोरी ! काची केसर पीओ हो ॥ १७ ॥
राज ढोलाजी ! मूंगीज देवे हो
म्हांरा म्हैलारा मिजमांन
भंवरजी मूंगीज देवे हो ॥ १८ ॥
हां ए धण मूंगी सूंगी पावां हे

हां ए गोरी मूंगी सूंगी पावां हे
हां ए हो म्हांरी सदा हे सवागण घर नार
मानेतण गोरी मूंगी सूंगी पावां हे ॥१६॥

---

(२)

[सावण तो लहरयो भादुवो रे बरसे चारूं खूंट]

सावण में नीम वृक्ष की निबोली पकती देखकर लड़कियें जो सुसराल में होती हैं अपने भाई को याद करके ये कहने लगती हैं:—

नीबों ! निम्बोली पाकी, सावन कद आवेगो ।
आवे, म्हारी मां को जायो, माय मिलावेगो ॥
सावण तो लहरयो भादुवो रे बरसे चारूं कूंट,

इसी प्रकार सावण के समय बहिन भाइयों का प्रेम इस गीत में जो दर्शाया है उसका नमूना इस प्रकार है:—

सावण तो लहरयो भादुवो रे बरसे चारूं कूंट
म्हारा मुरला सावण लहरयो रे ।
सावण बाई चम्पा सासरे सागरमल बीरो लणिहार
म्हारा मुरला सावण लहरयो रे ॥ १ ॥

सावणियो सुरंग लो रे लाल,
जासी बीरो सागरमल पावणों।
ल्यासी बाई चम्पा ने बेलड़ली जुपाय
म्हारा सुरला सावण लहरयो रे॥ २॥

सावण में झूलने के समय बहिनें अपने भाइयों को याद करती हुई जो गीत गाती हैं उसकी बानगी इस प्रकार है:—

अमले की जग्गा तमलो ऊग्यो सींचूं दूध मलाई रे।
सूरजमल बीरे हिंडों घलायो बाई चम्पा झूलण आई रे॥
हलवांसी झोटो देई मेरा बीरा! डरै बीरे री बाई रे।
वींका हाथ भरा चनवाइ रे वींके चुड़ले री चतराइ रे॥
बीकी मोत्यां मांग भराइ रे, वींके हाथां दूध मलाइ रे।
सूरजमल बीरे हिंडों घलायो बाई चम्पा झूलण आई रे॥

इस समय जिन लड़कियों को अपने पीहर जाने का अवसर नहीं मिलता है वे इस प्रकार खेद प्रकट करती हैं:—

आई आई मां! म्हारी सावणियां री तीज,
सावण भेजी मन्ने सास रे।
ओर सहेली मां खेलवा ने ए जाय,
मनें झोयों ए मां! पीसणो॥

बिदाई

[ऊंची तो खीवे ढोला बिजली]

पतिदेव के युद्ध में जाते समय अपनी पत्नी का प्रेम सम्वाद इस तरह होता है :—

ऊंची तो खीवे[1] ढोला बीजली
निची खीवे छै निवाए जी ढोला।
ओजी ओ गोरी रा लश्करिया
ओलूड़ी[2] लगायर कोठे[3] चाल्या जी ढोला।
केरे ढोलाजी रे सासरे
केरे म्हारी भिरगा नैणी के पीर जी ढोला॥
ओजी ओ गोरी रा लसकरिया
ओलूडी लगार कोठे चाल्या जी ढोला।
चढो, मैं तो रांधां ढोलाः खीचड़ी
रहो यें तो जीमो म्हारा भात जी ढोला
जीम चढांगां गोरी खीचड़ी
आय जीमांगा जिदंवारा भात ए गोरी।
ओजी ओ गोरी रा लसकरिया
ओलूड़ी लगार कोठे चाल्या जी ढोला॥

१—चमके। २—याद। ३—कहा।

चढो ये तो ओढा चूनड़ी,
रहो तो दिखनी रो चीर, जी ढोला ॥
निरख चढांगा गोरी चूनड़ी
आय निरखांगा दिखनी रो चीर ए गोरी ।
ओ जी ओ गोरी रा लसकरिया
ओलूंडी लगार कोठे चाल्या जी ढोला ॥
चढो ये तो ढालां[1] मारुजी ढोलियो
रहो ये तो फूलड़ा री सेज जी ढोला ।
पोढ चढांगा गोरी ढोलिये
आय पोढांगा फूलड़ा री सेज जी गोरी
आजी ओ गोरी रा लसकरिया
ओलूंडी लगायर कोठे चाल्या जी ढोला
चढो तो चढाओ ढोला करयो[2]
क्यों तरसावो म्हारो जीवजी ढोला ।
ओ जी ओ गोरी रा लसकरिया
आंगणीये फिरता प्यारा लागो जी ढोला ।
ओ जी ओ गोरी रा लशकरिया
ओलूड़ी लगार कोठे चाल्याजी ढोला ॥

१—बिछाना । २—ऊँट ।

जद पग मेल्यो ढोला पागड़े
डब डब भरिया छै नैनजी ढोला
आसुं तो पूंछो ढोला पेच सूं
लीनी छै हिवड़े लगाय जी ढोला।
ओ जी ओ गोरी रा लसकरिया
ओलूं ड़ी लगार कोठे चाल्या जी ढोला॥
थारी ओलूं ढोला म्हें करां,
म्हारो तो करै येन कोयजी ढोला।
म्हारी तो ओलूं गोरी थे करो
थारी तो करसी थारी माय ए गोरी।
ओजी ओ गोरी रा लसकरिया
घड़ी दोय लश्कर थामो जी ढोला
म्हारो तो थाम्यो लश्कर न थमे
थारे बाबाजी रो थाम्यो लश्कर थमसी ए गोरी।
ओजी ओ गोरी रा लश्करिया
ओलूड़ी लगार कोठे चल्या जी ढोला॥

अन्योक्ति

[कोठे से आई सूंठ कोठे से आयो जीरो]

स्त्री वस्तुओं के बहाने से भोली भाली बोली में अपने ननद से अपने पतिदेव का परिचय इस प्रकार प्राप्त कर लेती है :—

कोठे से आई सूंठ कोठे से आयो जीरो ।
कोठे से आयो ए ! भोली नणद थारो बीरो ॥
जैपुर से आई सूंठ दिल्ली से आयो जीरो ।
कलकते से आयो ए ! भोली भावज म्हारो बीरो ॥
क्या में आई सूंठ, काये में आयो जीरो ।
काये में आयो ये भोली बाई थारो बीरो ॥ ३ ॥
ऊंटा में आई सूंठ, गाड़ी में आयो जीरो ।
रेला में आयो ए भोली भावज म्हारो बीरो ॥
काये में चाहे सूंठ काये में चाय जीरो ।
काये में चाये ये भोली बाई थारो वीरो ।
जापै में चाहे सूंठ, यो साग संवारे जीरो ।
सेज़ा में चाहे ए भोली भावज म्हारो बीरो ॥
खींड[1] गई सूंठ विखर गयो जीरो ।

१—टुकड़े टुकड़े करना ।

यो रूस गयो ये भोली भावज म्हारो बीरो ॥
चुग लेस्यां सूंठ पछाड़ लेस्यां जीरो ।
मनाय लेस्यां ए भोली नणदी थारो बीरो ॥

सौन्दर्य उपासना

(मूमल नामक गीत-राग मांड)

[मूमल हालेनी रे आलीजे रे देश]

राजपूताना की महिलायें—जिनमें पूंगल की पदमणी और जैसलमेर राज्य की भट्टीयाणी प्रसिद्ध हैं—कैसी सुन्दर होती हैं इसका नख सिख वर्णन एक गाथा में वर्णित मूंमल नाम की रमणी के नाम से किया गया है जो जैसलमेर की राजकुमारी और अमरकोट (सिन्ध) के राणा महेन्द्र (महेन्द्रा) सोढा की स्त्री थो।

नायो मूमल माथईयो रे मेट[१] सु हांजी रे कड़ीये[२] रे राड़या[३]-मूमलड़ी केसड़ा[४] मारी जगमीठी मूमल हाले नी रे आलीजे रे देश ॥ १ ॥

१—मुलतानी मिट्टी Fuller's earth, २—कमर।
३—लटकाना। ४—बाल।

सीसड़लो मूमलरो सरूप नारेल ज्यों, हांजी रे केसड़ला
हतीयारी रा वासंग नाग ज्यो, मारी साचोड़ी मूमल
हाले नी रे अमराणे रे देश ॥ २ ॥
नाकड़लो मूमल रो खांडईये री धार ज्यों, हांजी रे
आंखड़ले
रंग भीनी रे राता नालीया मारी अमरत भर मूमल
हाले नी रे रासीले रे देश ॥ ३ ॥
काड़ी रे काड़ी काजलीये री रेखड़ी रे हांजी रे
काड्योड़ी[1]
कांठण[2] में चिमके बीजली, मांजी बरसाले री मूमल
हाले नी रे आलीजे रे देश ॥ ४ ॥
होठड़ला मूमल रा रेसमीये रा तार ज्यो, हांजी रे
दांतड़ला
ऊजल दँतीरा दाड़म बीज ज्यों, मारी हरीयाली मूमल
हाले नी रे अमराणे रे देश ॥ ५ ॥
पेटड़लो मूमल रो पीपलीये रो पान ज्यों, हांजी रे
हीवड़लो हतीयारी रो संचे ढालीयों, मारी नाजुकड़ी
मूमल

१—काली । २—घटा ।

हाले नी रे रसीले रे देश ॥ ६ ॥
जाँघड़ली मूमल री देवलींये रो थंभ ज्यों हांजी रे
साथड़ली सपीठी पींड़ी पातली मांजी माड़ेची मूमल
हाले नी रे आलीजे रे देश ॥ ७ ॥
जाई रे मूमलड़ी ईये लद्रवाणे रे देश में हांजी रे
मांणी रे मूमल ने रांणे म्हेदरें, मांजी जेसाणे री
मूमल
हाले नी रे अमराणे रे देश ॥ ८ ॥

दोहा (आडी-पहेली में)

ऊपर खेंचे तल घुरे नारी के नर हेठ।
मूमल कहे रे म्हेदरा, सेणो मेली मेठ ॥

[अर्थ-हुक्को]

१—भोगना।

वियोग विलाप

[थारो सूरत प्यारी लागे म्हारा प्राण]

पतिदेव के प्रदेश जाने पर स्त्री इस प्रकार विलाप करती है :—

दोहा

आप झरोखां बैठता ललवलीया सरदार।
हाजर रहती गोरड़ी सज सोले सिणगार।
जी सिरकार थारी सूरत प्यारी लागे म्हारा प्राण ॥१॥
आबू चिमके बिजली सीकर[1] बरसे मेह।
छांटा लागे प्रेम की भीजे सारी देह ॥
जी उमराव थारो पचरंग पेचो भीजे
म्हारा प्राण उमरावजी ! ओ रसिया ॥२॥
राजन चाल्या चाकरी कांधे धर बन्दूक।
के तो सागे ले चलो के कर डारो दो टूक ॥
ए जी उमराव ! धणने सागे लेकर चालो।
म्हारा प्राण उमराव जी ओ रसिया ॥ ३ ॥
साजन चले दिसावरां पग में उलझी डोर।

१—जयपुर राज्य में सीकर नामक एक अव्वल दर्जे का जागीरी ठिकाना है।

पीछा फिरके देखियो थारे धणला रा गणगोर ॥
ए जी सरदार धण थारी लारया लागी आवे ।
म्हारा प्राण उमराव जी श्रो रसिया ।
मैं मारी मां के लाड़ली मोत्या बीचली लाल ।
सासु के अनखावणी मेरो रालन आगे न्याव ॥
जी उमराव म्हारो सेजा न्याव चुकावो म्हारा प्राण ।
बेगण तो काचा भला पाकी भली अनार ।
प्रितम तो पतला भला मोटा जाट गंवार ।
जी उमराव थारी चाल पियारी लागे म्हारा प्राण ॥
उमराव जी श्रो रसिया ॥
अव्वल सकड़ी कोठड़ी दूजी माजल रात ।
तीजां सकड़ो ढोलियो मतवाले को साथ ॥
जी उमराव थारी सूरत प्यारी लागे ।
म्हारा प्राण–उमरावजी श्रो रसिया ॥ ४ ॥
प्रितम तुम मत जानियो दूर देस का बास ।
खोड[१] हमारी यहां पड़ी प्राण तुम्हारे पास ॥
जी उमराव थाने किण सोकण बिलमाया,
म्हारा प्राण । उमराव जी श्रो रसिया ।

१—ढांचा, शरीर ।

डूंगर ऊपर डूंगरी सोनो घड़े सुनार।
मेरी घड़ दे पैंजणी मेरे प्रितम को कड़वार॥
जी उमराव थारी सूरत प्यारी लागे
म्हारा प्राण। उमराव जी ओ रसिया।
पीवजी बसे दिसावरां हमें देई छिटकाय।
कागद हो तो बाँच ल्यूं करम न बांच्यो जाय॥
जी उमराव म्हाने बातां में बिलमाई
म्हारा प्राण। उमराव जी ओ रसिया॥
डूंगर ऊपर डूंगरी डूगर ऊपर कैर।
कर मुकलावो[1] छोड़ गयो तेरो मेरो कद को बैर।
ओ उमराव थारी ओलू म्हाने आवे
म्हारा प्राण। उमराव जी ओ रसिया॥
जैपुर के बाजार में लांबी बड़ी खजूर।
चढूं तो चांखूं प्रेम रस पडूं तो चकना चुर॥
जी उमराव प्रेम रस सेजां आप चखावो
म्हारा प्राण। उमराव जी ओ रसिया॥
अगर चंदन को ओढणुं ओढूँ बार त्युंहार।
पीवजी कहे गोरी ओढले मेरी सासू भूलस्यां खाय।

१—गौना।

जी उमराव सास म्हारी ताना दे हटावे ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ॥
जैपुर के बाजार में सैन कबूतर जाय ।
सीटी देय उड़ाय युं मेरो जोड़ो बिछड़यो जाय ॥
जी उमराव थारी सूरत प्यारी लागे ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ प्राण ।
पीयो आयो परदेश से जाजम दई बिछाय ।
मन तन की फेर पूछस्यां हिवड़े ल्यो लिपटाय ।
जी उमराव थारी बोली प्यारी लागे ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
डाक्या टोडा टोडड़ी लोपा नदी बनास ।
आडो गेलो उलंगीयो जद धण छोड़ी आस ॥
ओ उमराव म्हानें कर दुखिया चढ चाल्या ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
पिया गये परदेश में नैना टपके नीर ।
ओलुं आवे पीव की जीवड़ो धरे न धीर ॥
जी उमराव थारे लेरां लागी आऊँ ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
राजन चाल्या पगां पगां लसकर रह गया दूर ।

बिलखत छोड़ी कामनी परियां की सी हूर ॥
ए जी उमराव थारी चलगत प्यारी लागे ॥
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
सान्ध्या तेरे चालणे सूती पीलंग बीछाय ।
जद जागूं जद एकली मरुं कटारी खाय ।
ओ उमराव म्हारो जोबन अल्यो जावे ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
पीव परदेसा छा रह्यो गया परी ने भूल ।
जोबनियो ढल जायसी थारी है दौलत में धूल ।
ओ उमराव म्हानें घर आ कंठ लगाओ ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
पीव पीव करती मैं कहूँ पीव न मेरे पास ।
सूनी सेजां में पड़ी रात्यूं मारुं सांस ॥
ओ उमराव थे प्यारी की पीर पीछानु ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।
च्यार खूट की बावड़ी जीमें सीतल नीर ।
आपां रलझील न्हायस्यां म्हारी लाल नणद रा बीर ।
ओ उमराव थे तो हुकम करो धण हाजर ।
म्हारा प्राण । उमरावजी ओ रसिया ।

बागां जाज्यो बावड़ी नीमवा ल्याज्यो च्यार।
छोटी सी नारंगी ल्याज्यो थे म्हारा भरतार।
ओ उमराव थारी बालक धए ने चाव।
म्हारा प्राए। उमरावजी ओ रसिया।
चांदी का एक बाटको जी में बूरा भात।
हुकम होय सीरकार को दोन्यूं जीमा साथ।
ओ सीरदार थाने पंखा ढोल जिमाऊँ।
म्हारा प्राए! उमरावजी ओ रसिया।
जिन सील राजन बैठता वो सील सदा सुरंग।
सील दीखे साजन नहीं म्हारे बहे कटारी अंग।
ओ दिलदार म्हारो अब क्युं अंग जरावो।
म्हारा प्राए। उमरावजी ओ रसिया।

---

(२)

भादू बरषा झूक रही घटा चढी नभ जोर
कोयल कूक सुनावती बोले दादूर मोर
ए जी सिरकार पपैओ पीव पीव शब्द सुनावे मेरे प्राए॥
चमचम चमके बीजुरी टप टप बरसे मेह
भर भादूं विलखत तजी भलो निभायो नेह

जी सरदार चतर चोमासे में घर आवो ओजी मेरे प्राण ॥
आसोजां में सीप ज्यों प्यारी करती आस
पीव पीव करती धण कहे प्रितम आए न पास
जी उमराव इन्द्र जी ओलर ओलर आवे ओ जी मेरे प्राण॥
करू कड़ाई चाव से तेरी दुरगा मांय
आसोजा में आय के जो प्रितम मिल जाय
जी महारानी थारे सुवरन छत्र चढाऊँ मेरे प्राण ॥
कातिक छाती कर कठिन पिया बसे जा दूर
लालच के वस होए के बिलखत छोड़ी हूर
जी उमराव धण थारी ऊभी काग उठावे मेरे प्राण ॥
सखी संजोवे दीवला पूजे लक्ष्मी मात
रल मिल पोडे कामनी ले प्रितम ने साथ
जी उमराव सखी सब पिय संग मोज उड़ावे मेरे प्राण ॥
मगसर महीना में मेरे मन में उठे तरंग
अरध निशा में आन के मदन करत मोहे तंग
जी उमराव बिनकुन म्हारी तपत मिटावे मेरे प्राण ॥
ना घर आवे पीव जी बीत गई बरसात
अगहन झूरे कामनी जोड़ो जहर लखात
जी उमराव अब तो रितु सरदी की आई मेरे प्राण ॥

पोस जोस सरद तना जाड़ा पड़े अनन्त
दिलवर बसत दिसावरा बैठा होय नचन्त
जी सिरकार सरदी से जरदी तन छाई मेरे प्राण॥
ठंडी सेज हरवावती ठंडा बसन[1] तमाम
पोस भई बेहोस में घर ना सिरका श्याम
जी उमराव सरद में घर आय कंठ लगाओ मेरे प्राण॥
माघ मगन रहती परी, घर होते भरतार
पीव तो बसे विदेश में हीवड़े बहे कटार
जी उमराव अकेली दुख का दिन बिताऊं मेरे प्राण॥
आई बसन्त संग की सखी सभी रंगावे चीर
मेरा सब रंग ले गयो बाइजी रा बीर
जी उमराव बसन्त में थारो नार विरंगी मेरे प्राण॥

---

(३)

आज म्हारां राजन चाकरी ने चाल्या
तो कर लियो ए घोड़ा पर जीन
उठ गया ए सहर सारो आज
उठ गयो ये गोरी रा भरतार

१—वस्त्र।

नहीं आवे थे नीदड़ली सारी रात
नाहीं आवे हे नीदड़ली सारी रात
रीत गयो थे पिलंग दरीयाव
कूण बुजे थे गोरी के दिल री बात
नहीं आवे हे नीदड़ली सारी रात
ताता सा पाणी तेल उबटना
न्हावो क्यूं ना जी गोरी रा भरतार
न्हावो क्यूं ना जी बादीला भरतार
थे न्हावो थारा कंवर न्हावो म्हारी रेख हंक जाय
म्हारा भायला उठ जाय
उठ गयो ऐ सहर सारो आज
उठ गयो थे जोड़ी रा भरतार
पोय पोय फल्का जेट बणाई
पोय पोथ फल्का जेट बणाई तो
जीमो क्यूं ना जी गोरी रा भरतार
जीमो क्यूं ना जी
थे जीमो थारा कंवर जिमावा
थे जीमो थारा कंवर जिमावो
म्हारी रेख हंक जाय

म्हारा ए साथीड़ा उठ जाय
उठ गयो ये गोरी रो भरतार
चुग चुग कंकरी महल चिणाया
तो मोरया झांको जी गोरी रा भरतार
मोरया झांको जी बादीला भरतार
थे झांको थारा कंवर झंकावो
म्हारी रेल हंक जाय, म्हारी बलद लद जाय
बैठ गयो ये गोरी रो भरतार
चुग चुग फुलड़ा सेज बिछाई
तो पोडो क्यूं ना जी जोड़ी रा भरतार
पोडो क्यूं न जी गोरी रा भरतार
थे पोडो थारा कंवर पुढावो
म्हारी रेल हंक जाय म्हारा साथीड़ा उठ जाय
बारा ये बरस सुं पियो घर आयो
आय गयो ए शहर सारो आज
भर गयो ये पिलंग दरियाव
अब आवे ए निदड़ली सारी रात
अब बुजे ये गोरी रे दिल री बात
आय गयो ये सहर सारो आज

कलाली

[चढिया रे भंवरजी शूरां री शिकार, श्रो कोडीला कँवरजी]

यह वीर रस का गीत सायंकाल के समय बहुधा राजपूतों के भोजन करने के समय या रसरंग महफिल में गाया जाता है। इसमें एक वीर शिकारी राजपूत नवयुवक का सूअर का शिकार करना और वापस लौटते समय रास्ते में अपने साथियों के आग्रह से शराब बेचने वाली (कलाली) युवती के यहां शराब पीने को जाना परन्तु अपने शुद्ध आचरण को क़ायम रखने का वर्णन है। गीत इस प्रकार है :—

चढीया रे भंवरजी शूरां री शिकार, श्रो कोडीला[1]
कँवरजी।
कांई सूरां ने पूरां सु ं झगड़ो झेलीयो हो म्हांरा
राज ॥ १ ॥

साथ तो चढीया भंवरजी साचोड़ा है सरदार श्रो
अलीजा।
भंवरजी-कोई भलके[2] तो हाथां में जाणु भालड़ा[3]
हो म्हारा राज ॥ २ ॥

१—उत्साही-शौक़ीन। २—चमके। ३—भाले।

आछा तो चढीया भँवरजी अलबलीया असवार[१],
ओ साइना,[२]
कंवरजी-कोई चंचल[३] तो छीटकाया चोड़ा चौक में
हो म्हारा राज ॥ ३ ॥
आगे तो उछरीया भँवरजी साचोड़ा शूर, ओ आलीजा।
भंवरजी-कोई कवलो[४] तो उछरीयो कँवरजी रे सामे
हो म्हारा राज ॥ ४ ॥
साथीड़ा तो मारीया भँवरजी साचोड़ा सूर, ओ कोडिला
कंवरजी-कांई कवलो गिड़कायो[५] कँवरजी रा सेल[६]
सुं हो म्हारा राज ॥ ५ ॥
सकरी[७] हुई भंवरजी सूरां री शिकार, ओ कोडीला
कंवरजी।
कोई घीरिया तो पाछा कलाली रे गांव ने हो
म्हारां राज ॥ ६ ॥
मदछकीया कंवरजी मदड़ों तो मोलाय, ओ कोडीला
कंवरजी,
कोई मदड़ो तो पावो मूंगा मोल रो, हो म्हारां राज ॥७॥

१—सवार। २—हमजोली। ३—घोड़ा। ४—बहुत बड़ा शुअर। ५—मारा। ६—भाले। ७—अच्छी।

कठोड़े कहीज कलाली रो पोल, ओ साईना सीरदारां
कांई रे ओनाणां कलाली रो आंगणो हो म्हारा राज ॥८॥
सूरज सामी कंवरजी कलाली री पोल ओ कोडीला
कोई केल तो झूके कलाली रे बारणे[1] हो म्हारा
राज ॥ ९ ॥
खोले नी कलाली थारा भजड़ किवाड़, ओ झूमादे
कलाली ए।
कांई बारे तो उभा[2] रंग रसीया राजवी हो म्हारा
राज ॥ १० ॥
किकर तो खोलूं कंवरजी बजड़ किवाड़, ओ कोडीला
कोई ताला तो जड़िया बीजलसार रा हो म्हारा
राज ॥ ११ ॥
भचके तो भागे नी थारा बजड़ किवाड़ ओ मारूरी
मानेतण
कोई ताला तो तोड़े नी बिजलसार रा हो म्हारा
राज ॥ १२ ॥
कोडीला कंवरजी धीमा ने मुधरा बोल ओ आलीजा
कोई पड़वे[3] तो पोढ्या सुसरोजी सांभले हो राज ॥१३॥

१—दरवाजा । २—खड़ा । ३—कच्चा कमरा ।

थारे सुसराजी ने गांवड़ला दिराय ए झूमादे कलाली ऐ
कोई एक तो दिल्ली ने दूजो आगरो हो म्हारा राज ॥१४॥
आलीजा भँवरजी धीमा ने मुधरा बोल ओ आलीजा,
कोई सेजां में सूता ओ कंवर कलाल रा हो म्हारा
राज ॥ १५ ॥
थारे कलाल ने दोय रे परणाय, ए झूमादे कलाली
एक तो गोरी ने दूजी सांवली ओ म्हारा राज ॥१६॥
खोल्या रे कंवर बजड़ किवाड़ ओ रसीला भंवरजी,
मांह तो पधारिया कलाली रे चोक में हो म्हारा
राज ॥ १७ ॥
घणा ने गुमानी घुड़ला ने पाछो घेर, ए मदछकिया
कंवरजी-कोई पोड़ा[1] सुं तुटे म्हारो आंगणो हो
राज ॥ १८ ॥
थारा आंगणीया में काचड़लो बीड़ाय[2] ए! मारूरी
कलाली ऐ
कोई भीतां तो ढुलादां[3] जाजो हींगलूं हो म्हारा
राज ॥ १९ ॥
केवे नी कलाली थारा दारूड़े रो मोल, थारी भटीयारो

१—घोड़े के खुर। २—जड़ाना। ३—रंगाना।

आसो दारु मैं छाकसां[१] हो म्हारा राज ॥२०॥
प्याले २ लेसूं कंवरजी पचास ओ आलीजा
कांई सीसे[२] रा ले सुं पूरा पांच सौ हो राज ॥२१॥
प्याले २ देसां रे पचास ऐ झूमादे कलाली ऐ
कांई सीसा रा देसां पूरा पांच सौ हो म्हारा राज ॥२२॥
खूब तो पीयो हो कंवरजी सकरोड़ो दारू ओ आलीजा।
कंवरजी-कोई तुरंगा[३] चढीया ताखड़ा[४] हो म्हारा
राज ॥ २३ ॥

चढीया भंवरजी ढलतोड़ी रात, ओ आलीजा कंवरजी
कोई आधी रा अमलां में शहर पोछीयां हो म्हारा
राज ॥ २४ ॥

सीधा तो पधारिया भंवरजी सुन्दर गोरी रे सेज
ओ कोडीला
कंवरजी-कोई प्रित सु बिलुब्या पिवसा हो म्हारा
राज ॥ २५ ॥

पूछे सायबण मनड़े री बात ओ आलीजा भंवरजी
मोड़ा[५] तो पधारीया सायधण रे महेल मे हो म्हारा
राज ॥ २६ ॥

१—पीना। २—बोतल। ३-घोड़ा। ४-तेज़ चाल। ५-देर से।

चांदड़लो गयो भंवरजी गढ गिरनार ओ रसीला
भंवरजी
कोई किरत्यां तो झूक आई रे गढ़ रे कांगरे हो
म्हारा राज ॥ २७ ॥
रमीया तो भंवरजी सारोड़ी रात ओ कोडीला कंवरजी
कंवरजी-सेजां में रमीयो सायबो हो म्हारा राज ॥२८॥
सायधण ने बतलाई सारोड़ी बात, ओ रसीला कंवरजी
कोई पाक तो कीधी रे कलाली सुं प्रितड़ी हो म्हारां
राज ॥ २९ ॥
काछ दृढा कंवरजी कीनी पूरोड़ी प्रित ओ रसीला
कंवरजी
कोई शील तो निभायो कलाली रा संग में हो
म्हारा राज ॥ ३० ॥

दारू का दोषा (दोष)

[भरतार जी ओ दारू पीणूं छोड़ो म्हारा राज]

यह मांड रागनी का गीत राजपूतों के तासली (भोजन) जीमने के वक्त गाया जाता है। ढोली जाति—जिसको जयपुर राज्य में राणा; उदयपुर मेवाड़ में बारहट* और जोधपुर में नगारची कहते हैं—उनकी स्त्रियें महफिल में नशे की तारीफ में गाती हैं। असली गीत इससे कुछ भिन्न होता है। जो गीत यहां दिया जाता है इसमें दुर्व्यसनों की निन्दा, और राजपूतों को उनके कर्त्तव्य का उपदेश दिया गया है। इसलिये प्रचलित गीत की अपेक्षा उसी राग में यह गीत गाने योग्य है :—

दिल्ली ने दोषा भया रंडी दारू राग।
तिण कारण सुं तुरकड़ा[1] खेंच न सकिया खाग[2] ॥

—प्राचीन पद्य।

---

* देखो "मारवाड़ की कौमों की उत्पति व इतिहास" नामक सरकारी ग्रंथ पृ० ३६६ पंक्ति ८ सन् १८६१ ई०। जोधपुर राज्य में तो चारण जाति को बारहट कहते हैं। नक्कारची (ढोली) अपनी उत्पति देवता से बताकर अपने को गंधर्व की सन्तान मानते हैं। राजपूतों के विवाह आदि अवसर पर इन्हें भी "त्याग" इनाम आदि मिलता है। इनमें विधवा विवाह नहीं होता है।

१—तुर्क-मुसलमान। २—तलवार।

भरतार जी ओ दारू पीणूं छोड़ो म्हारा राज।
सरदारजी "आसा[1]" रो चालो छोड़ो म्हारा राज॥
मतवाला हो पौढग्या,[2] सुध बुध लीनी भूल।
पर हाथां रा हो गया, यो हिरदा में शूल ॥भरतार०॥१॥
दुशमण देशहि लूट कर, ले जावे परदेश।
राजन चूड़यां पहन ली, धरया जनानो वेश ॥भर०॥२॥
तन पर सादी ओढ़ कर महलां बैठ्या आय।
अन्यायी दिन दिन यहां, जोर जमाता जाय ॥भर०॥३॥
दूध लजायो देश रो, कीनो देश गुलाम।
कै सलाम खुद झेलता, कर रिया खुद सलाम।भर०॥४॥
कहां गई वो वीरता, कहँ रजपूती शान।
टुकड़ा रा मौताज है, खो बैठ्या अभिमान॥भर०॥५॥
रजपूती सत खो दियो, सतहीणां सरदार।
पतहीणां रजपूत हो, मतहीणां भरतार ॥भर० ॥६॥
मण जाणूं इण हूँ भलो, जिण हूँ लाजे खांप[3]।
डरपोकां सरदार हीं, खावे कालो साँप ॥भर०॥७॥
पराधीन भारत हुओ, प्याला री मनुहार।

१—"आसा" एक प्रकार का देशी बढ़िया शराब होता है।
२—से। गये। ३—वंश, अल्ल, जात (Clan)

मातृभूमि परतंत्र हो, बार बार धरकार ॥भर०॥८॥
तीतर लवा बटेर अरु, सुस्सां[1] सूर शिकार।
इण हां रजपूती नहीं, नाम "सिंह" रखनार ॥भर०॥९॥
विष खाओ या शरण लो, सरवरिया री थाह।
कै कंठा बिच घाल लो, घाघरियां री गाह ॥भर०॥१०॥
बीर पणूं धारण करो, कायरता ही छोड़।
बैरी लोहो मान ले, मूंडो लेवे मोड़ ॥ भर० ॥११॥
वस्त्र केसरी पहर कर, कसो कमर तलवार।
बरछी और कटार ले, हो तुरंग असवार ॥भर०॥१२॥
पाछा फिर मत झांकज्यो, पग मत दीज्यो टार।
कट भल जाज्यो खेत में, पर मत आज्यो हार ॥भर० १३
सीख राज री होय तो, हूँ भी चालूँ साथ।
दुशमण भी फिर देख ले, म्हारा दो दो हाथ ॥भर०॥१४॥
यो सुहाग खारो लगे, यद कायर भरतार।
बधवापण लागे भलो, होय शूर सरदार ॥भर०॥१५॥
दुशमण सूं सन्मुख भिड़े, रखे देश री आण।
ओ ही सांचों शूरमां बैरी माने काण ॥ भर०॥१६॥

१—ख़रगोश।

धारवा

[ढोलो गयो है गुजरात, मरवण महलां मांह एकली रे लो]

यह एक प्रकार के नाच का गीत है जिसे स्त्रियाँ होली जैसे आनंद उत्सव के समय नाच नाच कर गाती हैं। मारवाड़ में नाच के कई गीत हैं जैसे घूमर, धारवा, मुटकी, केरवा, और लूर। इन नाचों का वर्णन और गीतों की बानगी अन्यत्र देंगे। यहाँ इस धारवा नाच के नमूने का गीत दिया जाता है। इस नाच में स्त्रियें कतार बाँध कर एक दूसरे के सामने खड़ी हो जाती हैं। ढोल पर डंका पड़ते ही स्त्रियें अपने हाथ ऊँचा करती है, घूमती हैं और ताली बजाती हुई आमने सामने आगे बढ़ती हैं। इस मौक़े पर जो गीत गाये जाते हैं वे मांड रागनी में होते हैं।

यहाँ जो गीत इस नाच का दिया जाता है उसमें बतलाया गया है कि नायका का पति परदेश गया हुआ है और उसके विरह में स्त्री व्याकुल है और अपना व अपने पति की तुलना कई प्राकृतिक पदार्थों से देकर अपने स्नेह की घनिष्ठता बताती है:—

ढोलो गयो है गुजरात, मरवण म्हेलां मांही एकली रे लो।
ढोलो सावनिया रो मेह, मरवण आभा के री बिजली रे लो॥
बरसण लागो है मेह, चमकण लागी है बिजली रे लो।

ढोलो नदीया रो नीर, मारवण जल मांहली माछली रे लो
सुकण लागो है नीर, तड़फण लागी है माछली रे लो।
ढोलो चंपला रो पेड़, मारवण चंपा के री डालियां रे लो ॥
ढोलो चंपला रो फूल, मरवण फूलां मांहली पाँकड़ी रे लो

तेल चढाना

[सुण सुण रे जोधाणा रा तेली०]

मारवाड़ में विवाह दिन के कुछ रोज पहिले शुभ मुहूर्त में दुल्हा गाजे बाजे से स्नान करता है और बदन में उबटण तेल मलवाता है। इस को "तेल चढ़ाना" या "वानें (बिदोले) बैठाना" * भी कहते हैं। अर्थात् विवाह करने का ये प्रारंभिक दिन है। इस समय स्त्रियां यह मंगलाचरण गीत गाती हैं। इसके भाव स्पष्ट हैं ही :—

सुण सुण रे जोधाणा रा तेली
ओ घाणी[1] काडो[2] केसर ने किस्तुरी
ओ मांय घालो[3] मरवो ने मखतुली[4] हो
ओ तेल बना[5] रे अंग चढसी ओ ॥ १ ॥

---

* जन्म से लेकर मृत्यु तक के विस्तृत रीत रस्मों के लिये पढ़ो "मारवाड़ के रीत रस्म" पुस्तक दाम सिर्फ़ ।) चार आना।

१—कोल्हु। २—निकालो, तयार करो। ३—डालो।
४—औषधी विशेष। ५—दुल्हा।

लेखो वां[1] रा दादाजी कर लेसी
ओ दमड़ा[2] वां रा दादीजी देदेसी
सुण सुण रे जेपुर रा तेली
ओ घाणी काडो केसर ने किस्तुरी
ओ मांय घालो मरवो ने मखतुलो
ओ मांय घालो, जायफल ने जांवतरी
ओ तेल नवल बनारे अंग चढसी ओ ॥ ३ ॥
लेखो वां रा माताजी कर लेसी
ओ दमड़ा वां रा बाबाजी देदेसी।
ओ सुण सुण मेड़ते रा तेली
ओ सुण सुण नागीणा[3] रा तेली
ओ घाणी काडो केसर ने किस्तुरी
ओ मांय घालो जायफल ने जांवतरी
ओ तेल बनड़ा रे अंग चढसी ओ ॥ ४ ॥
लेखो वां रा भाभीसा[4] कर लेसी
ओ दमड़ा वां रा वीराजी भरदेसी ॥ ५ ॥

१-वां रा=उसका। २-पहले द्रम नाम का एक सिक्का था उससे दाम बना। अब दाम का अर्थ मूल्य से है। ३—जोधपुर राज्य का नागोर शहर। ४—भाइ की स्त्री, भौजाई।

(२)

गहुँ ए चिणा रो ऊगठणो[1] मांय चमेली रो तेल
अब लाडो बैठो ऊगठणे ॥ १ ॥
आओ म्हारी दाद्यां निरखलो आ ऐ म्हारी माय
निरखल्यो
निरख्या सुख होय अब लाडो बैठो ऊगठणो ॥२॥
तू तो कर लाडा[2] उगठणो थारा उगठणा में बास
घणी
थारी दादयां संजोयो उगठणो, थारी मांय संजोयो
उगठणो
कोई तेल फुलेल चंपेल घणी[3] चम्पा री कलीयां
सुगंध घणी
लाडा रा मन में खांत[4] घणी।

हलदी-पीठी

[म्हारी हल्दी रो रंग सुरंग निपजे मालवे०]

"तेल चढ़ाने" के दिन से ही दुल्हा को प्रत्येक दिन पाट पर बैठा कर गेहूँ और चना का आटा तथा हल्दी को घी व

१—उबटण। २—दुल्हा। ३—बहुत। ४—उत्साह।

पानी में घोल कर उसके बदन में मलते हैं। इसको "पीठी करना' या "हल्दी पीटी" कहते हैं। पीटी-उबटण करते समय स्त्रियें यह गीत गाती हैं:—

मारी हल्दी रो रंग सुरंग निपजे मालवे
हल्दी मोल पसारी री हाट, बनड़ा रे सिर चढ़े॥
चीर जीवो रायजादा[1] रा भाबोसा चतुर सुजान।
हल्दी मोलवे-थारी माता रे मन कोड[2] घणा करें
मारी हल्दी रंग सुरंग निपजे मालवे
हल्दी मोल पसारी री हाट बनड़ा रे सिर चढ़े
चीर जीवो रायजादा ए काकोजी चतुर सुजान
हल्दी मोलवे-वां री काकिया रे मन कोड घणां करें
मारी हल्दी रंग सुरंग निपजे मालवे
हल्दी मोल पसारी री हाट बनड़ा रे सिर चढे
चीर जीवो रायजादा रा मामाजी चतुर सुजान
हल्दी मोलवे वैं री मामियां रे मन कोड घणां करे॥४॥
मारी हल्दी रंग सुरंग निपजे मालवे
हल्दी मोल पसारी री हाट बनड़ा रे सिर चढे

१—मुगल बादशाह प्रायः राजाओं को "राय" की उपाधि देते थे और उनके छुट भाइयों को "राव"। रायजादा=राजकुमार। २—प्यार।

वीर जीवो रायजादा रा वीराजी चतुर सजान
हल्दी मोलवे-वां री भाभियां रे मन कोड घणा करे ॥५॥

---

(२)

म्हारी हलदी रो रंग सुरंग निपजे मालवे,
मोलावे लाड[1] लाडा रा दादाजी दाद्यां रे मन सवे
मोलावे लाड़ लडा रा बाबाजी मायड़ रे मन सवे
वां री दाद्या रे मन कोड हरख घणो करे
वां री मायड़ रे मन कोड केसर केवटे
म्हारी हलदी रो रंग सुरंग निपजे मालवे ॥
मोलावे लाड़ लड़ा ए नानाजी नान्यारे [1]मन सवे
मोलावे लाड़ लडा ए मामाजी माम्या रे मन सवे
वां री माम्या मटक छींदाल मुणस घणा करे
बनड़ो न्हाय धोय बैठो बाजोट कांइ आमण घूमणो
बनड़ा कांइ मांगो सिर पाव कांइ तेजी घोड़ला
म्हे तो नहीं मांगा सिरोपाव नहीं तेजी घोड़ला
म्हे तो मांगा साजनिया री धीय वा मारे सिव चढे

१—प्यार।

(३)

बनड़ी न्हाय धोय बैठी बाजोट कांई आमण धुमणी
म्हें तो नहीं मांगा गलहार कांइ दांती चूड़लो
म्हे तो मांगा साजनिया रा पूत वे म्हारे सिध चढे
बनडा तोरण तारां री छाय किण विध मारसो म्हारे
समरथ बाबाजी साथ भल भल मालस्यां
बनड़ा पीठड़ली दिन चार रूच रूच मसल लो
बनड़ा चांवलिया दिन चार रूच रूच[1] जीमल्यो
बनड़ा महदड़ली[2] दिन चार हाथ रचाल्यो
बनड़ा काजलिया दिन चार नैण घुलाल्यो
बनडा बनड़ी छै इधक सरूप किण विध निरखस्यो
म्हारे गहण रो डावो हात भल भल निरखस्यां

——❀——

बनों-सांझी

[हस्ती थे लाईजो कजली देश रो]

जिस दिन दुल्हा "बाने बैठता" है यानी उसके तेल (उबटण) चढाया जाता है उसी दिन से सदा सांझ (शाम) को स्त्रियें मंगलाचरण रूपी गीत गाती हैं। इनमें प्रायः यह बताया

१—रुचि। २—मेहेंदी।

गया है कि अमुक वस्तु अमुक स्थान से सर्वोत्तम अपनी दुल्हिन के लिये लाना और तुम दोनों का प्रेम एक सा उमर भर बना रहे इत्यादि।

हस्ती थे लाई जो कजली देश रो
हस्तियां रे हलक पधारजो रे तोरे आवजो॥
जिसड़ो सावणिया रो मोह लुंब्या झुब्या आवजो॥१॥
घुड़ला थे लाइजो खुरशाणी देशरा
घुड़ला री धूमर पधारजो रे तोरे आवजो
जिसड़ी बालपण री प्रीति बूढापे निभाड़[1] जो॥ २॥
सोनो थे लाइजो लंका देश रो
बनड़ी रे झँमर घड़ायजो रे तोरे आव जो॥
जिसड़ो कतवारी रो सूत जिसड़ो तांतो राख जो
रूपो थे लाइजो ऊजल देश रो
बनड़ी रे झँमर घड़ायजो रे तोरे आव जो
महल बले रे चिराग डोड्यों गावे डूमड़ा
जिसड़ो कतवारी रो सूत जिसड़ो तांतो राखजो॥
हीरा थे लाई जो वेरागढ देश रा म्हारा राज
मोती थे लाइजो बनड़ी रे हार जड़ायजो रे तोरे आवजो

१—निभाना।

सालू[1] थे लाइजो सांगानेर[2] रो म्हारा राज
चूड़लो[3] थे लाइजो हस्ति दांत रो सालू रे कोर देरायजो
रे तोरे आवजो ॥

(२)

सिरदार वनाजी हस्ती थे लाईजो हे कजली देश रा
उमराव वनाजी घुड़ला थे लाइजो हे घुड़सांणी देश रा।१।
सिरदार वनाजी सेवरिये झबूके ओ आबा बीजली ।टेक॥
उमराव वनाजी सोनो थे लाईज्यो हे लंकागढ़ देश रो
उमराव वनाजी रूपो थे लाईज्यो हे उजल पुर देश रो।२।
उमराव बनाजी हीरा थे लाई जो हे वेरागढ देश रा
सिरदार वनाजी मोती थे लाई जो समन्द्रां पार रा।३।
उमराव वनाजी सालू थे लाईजो सांगानेर रो
सिरदार बनाजी चूड़ला थे लाईजो रे हस्ती दांत रो।४।
उमराव वनाजी पेड़ा[4] थे लाईज्यो रे नागोरी देश रा
सिरदार वनाजी बिड़ला[5] थे लाईजो रे पनवाड़ी देश रा

——:o:——

१—साड़ी। २—जैपुर राज्य का सांगानेर शहर। ३—बाहों पर पहिनने की चूड़ियें। ४—दूध से बनी मिठाई। ५—पान का बीड़ा।

(३)

बना हसली थे ल्याजो जी एक ल्याजो धनसपुरी
बना धुड़ला ल्याजोजी एक ल्याजो धनसपुरी ॥१॥
बनी भांत बतावो हे कीसीक ल्यावां धनसपुरी
बना हरया हरया पल्ला जीक लहरया भांत धनसपुरी
बनी ओढ बतावो हे कीसीक सोहवे धनसपुरी ॥२॥
बना किणविध ओढाजीक घर मे थारा माउजी बुरा
बनी महलां में ओढो हे नीरखालां थारो धनसपुरी
बना ओढर निकलीजी आंगणियां में रपट पड़ी ॥३॥
बना पहली बरजोजी नीजर थाकी मायड़ की लागी
बना पहली बरजो जी नीजर थाकी काकी की बुरी
बना सांभर जाईजो जी वठा से लाइजो लूण री डली॥४।
बना पसारी रे जाईजो जी वठा सें ल्याजो राइ री पुड़ी
बना बागां में जाजो जी वठा से लाजो मीरच हरी
बना धुणी दीजो जी निजर म्हारो जावेली परी
बना वार[१] बगाज्यो[२] जी नजर मारी आगी पड़ी

१—शिर पर वार कर। २—फेकना।

(४) नथ

उत्तर जाईजो दिखण जाईजो जाईजो समन्द्रां पार
मारवणी रे नथ लाईजो मोती लायजो चार।
गाढा मारू छो जी राज लाखां रा लोड़ाऊ
मारू-मारे नथ लायजो राज ॥ टेक ॥ १ ॥
नथ घड़ी मेड़ते ने जड़ी अजमेर
मारवणी री नथ माय जड़ियो पुखराजा गाढा ॥२॥
बीसां री घड़ाई नथ लुल लुल जाय
तीसां री पोराई नथ ड्योढा झोला खाय ॥३॥ गाढा
नथ टूटी मोती बिखरिया जाणे रे बलाय
आवेला बाईजी रो वीरो लावे दोयन चार ॥४॥ गाढा
बामण मांगे सीधो[1] ने बामणी मांगे ठोर[2]।
बाईसा रो वीरो मारी नथड़ी रो चोर ॥ ५ ॥ गाढा
ऊ रे जोई परे जोई, जोई ढोलिया रे हेट
मारवणी री नथ मारूजी रे दुपट्टा रे हेट ॥६॥ गाढा
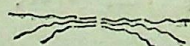
१—भोजन के लिये आटा दाल घी आदि। २—मिठाई।

(५) दातारगी का

पूछे रांना खिचजी री मांय कोई ने बतावो रानो खीवजी।
उबा[1] खीवजी जोशी री हाट, लगन लिखावे रानो राजवी ॥
उबा खीवजी चीरोया[2] री हाट, चुड़ोने चीरावे रानो खीवजी ।
उबा खीवजी बजाजी री हाट, डुपट्टो मोलावे रानो खीवजी
उबा खीवजी पंसारी री हाट, पडलो तो मोलावे रानो राजवी
उबा खीवजी जवरी री हाट, गेणो तो मोलावे आपरी मोजरो
उबा खीवजी सजनांरी पोल, बनड़ी परणिजे आपरे जोड़रो ॥

बरात के गीत

[रायजादो लुल़ लुल़ पाछो जोवे०]

दुल्हा की बरात रवाने होती है तब निम्नगीत गाये जाते हैं। इनका अर्थ स्पष्ट ही है :—

१-खड़ा। २-दाँत को चीरने वाला = दांती।

रायजादो लुल़[1] लुल़ पाछो जोवे,
जाणु म्हारी जान[2] में भाबोसा पधारे।
भाबोसा पधारे ने हस्ती सिणगारे,
रायजादो लुल़ लुल़ पाछो जोवे।
जाणु म्हारी जान में काकोसा पधारे,
काकोसा पधारे ने घोड़लिया सिणगारे॥
राय बनो लुल़ लुल़ पाछो जोवे,
जाणु म्हारे जान में बीरोसा पधारे।
बीरोसा पधारे ने जानीड़ा[3] सिणगारे,
रायजादो लुल़ लुल़ पाछो जोवे।

---

(२)

बन्ना मैं थानें फूटरमल यूं कयो
जटके ने सरवरिये मत जाय बन्ना
पिणियारियां री नीजर लागणी
रायजादो हजारी गुल रो फूल तूरां री तीजी पांकड़ी।

१-मुड़ कर देखना। २-बरात। ३-बराती।

बन्ना मैं थानें बनजी यूं केयो
बनजी मचके ने तोरणिये मत जाय
खातीजी[1] री नीजर लागणी
मारो केसरियो हजारी गुलरो फूल तुरां री तीजी पांकड़ी
बन्ना मैं थानें बनजी यूं केयो
बन्नजी मचके[2] ने चंवरियां मत जाय
जोशीजी री नीजर लागणी
मारो राय जादो हजारी गुल रो फूल
चम्पे री चोथी पांकड़ी ॥ बन्ना० ॥
है मैं थानें सगाजी[3] श्रो यूं केयो
सगा बनड़ी ने सांभी लाय परणाव[4]
रायजादे ने नीजर लागणी,
मारो केसरियो हजारी गुलरो फूल
तुरां री तीजी पाँखड़ी ॥ बन्ना० ॥

मोरीयो-कोयल (मिजन्यो)

[आंबां पाका ने आंबली हे मऊड़ो लेहरां खाय०]

विवाह होने के बाद जब कन्या सुसराल को जाती है तब

१-बढई, सुतार। २-जोर से। ३-समधी। ४-व्याह।

उसके वियोग में स्त्रियें यह गीत गाती हैं :—

आंबां पाका ने आंबली, हे आंबा पाकाने आंबली।
मऊड़ो लेहरा खाय कोयलड़ी हद बोली ॥ टेक ॥
हे मैं थानें पूछां म्हारी धीवड़ी,[1] हे मैं थाने पूछां
इतरो भाबोसा रो लाड छोड़ने बाई सीध[2] चाल्या।
हे आयो सगा रो सुवटो,[3] हे आयो बागा रो सुवटो
लेगयो टोली मांयसूं टाल गायड़मल[4] ले चाल्यो
हे मैं थाने पूछां मारी बालकी है मै थने पूछां धीवड़ी
इतरो माताजी रो लाड छोड़ने सीध चाल्या ॥
हे रमती[5] भाबोसा री पोलीयां, हे रमती भाबोसारीपोल
हे थाने गायड़मल ले चाल्यो।
हे मैं थने पूछां मारी राधाबाई हे मैं थने पूछां
इतरो काकोसा रो लाड, छोड़ने बाई सीध चाल्या
हे आयो परदेशी सूवटो है आयो बागा रो सुवटो
हे लेगो टोली मांय सू टाल फुटरमल ले चाल्यो
हे मैं थने पूछां म्हारा बाईजी हे थाने पूछू
इतरो बीरोसा रो हेथ छोड़ने बाई सीध चाल्या।
हे आयो परदेसी सुवटो, हे आयो बागा मांयलो सुवटो
मैं तो रमती सहेल्यांरी साथ जोड़ी रो जालम ले चाल्यो।

१—पुत्री। २—कहाँ। ३—तोता। ४—चतुर। ५—खेलती।

जवांई के गीत

[बाबेली ए भूरा भूरा बुर्जां रे हेट]

जमाई (दामाद) जब सुसराल जाता है तब ये गीत गाये जाते हैं। अर्थ स्पष्ट ही है :—

बाबेली[1] ए भूरा भूरा बुर्जां रे हेट।
चमके हजारी ढोला बीजली
बाबेली ए खिंव खिंव भरिया रे निवांण
जठे ने जवांई धोवे धोतिया ॥ बाबेली० ॥
बाबेली ए धोये धोये कीया रे बीणांव[2]
मनड़ो उमायो[3] झिलते[4] सासरे[5] ॥ बाबेली० ॥
करसे रे पितल रो पिलांण,[6] लाल लूंगी रो गासियो[7]
कसणा कसुमल डोर, सरब सोना रा पागड़ा।बाबेली०।
करहा रे गोडा गुगरा, गले ने गुगर माल।
बाबेली ए जवांया रे ढाल बंदूक
धोरा तो लागा रज री जामकी ॥ बाबेली० ॥
खवां ने रणती झीणी झांबड़ी।
जवांई रे मन में उम्मेद चालता करहा रे बावे[8] कामड़ी[9]

१—पुत्री। २—श्रृंगार। ३—उमंग। ४—सर्व सम्पन्न ५—सुसराल ६—ऊंट की काठी। ७—गदीला। ८—मेहराब। ९—चलावे। ९—बेत।

आयोड़ा किणजी रा सीस, किणजी रे सिगरत[1] पांवणा[2]
पोलिड़ा[3] पोल उघाड़,[4] आज ने अबेला[5] आया पांवणा
साथीड़ा रा डेरा हरिया बाग, जवाई रा डेरा मोती
महल में,
साथीड़ा रे दातण बोर, जवाई रे काची केल रो॥बावेली
साथीड़ा रे कुल्ला नीर, जवांई रे कुल्ला काचे दूध रा ॥
साथीड़ा रे भोजन भात, कोडीला जवाई रे सुलामद
सोइता
साथीड़ा रे चांद उजास, जवाई रे महलां दिवला दो बले[6]
साथीड़ा रे मुसल मेल,[7] खातीला जवांया रे कंवर
बाई साचरे[8] ॥

---

(२)

भाला लागे हो जवाई म्हानें घणाई ॥
सवावे हो, ओ म्हारी कंवर बाईसा रा श्याम जवांई
म्हानें घणा प्यारा लागे हो ॥ बाला० ॥
हस्ति बगसे जवाई म्हानें हस्ति बगसे हो

१—सब घर के। २—महमान। ३—दरवान। ४—खोलना।
५—अनियमत समय। ६—जलना। ७—भेज। ८—सत्य।

ऐतो घुड़ला रा दातार जवांइ म्हानें घाला लागे हो
हो म्हारे घणा ने मतवाला बाईसा रा पीव
जवांई म्हाने प्यारा लागे हो ।
हीरा बगसे हो जवांई म्हानें हीरा बगसे
राज ए तो मोत्या रा दातार जवांई म्हाने घणाई सवावे
राज ऐ तो लागणिये नेयनां रा बाई रा श्याम
जवांई म्हाने प्यारा लागे हो
मोहरां बगसे हो जवांई म्हाने बगसे हो,
राज ऐ तो रुपिया रा दातार
जवांई म्हानें प्यारा लागे हो ॥
मीठा बोले हो जवांई म्हारा घणा मीठा बोले हो
राजे ए तो मिसरी रा ही बोल
जवांई राणा मिठा घणा बोले हो ।
बाला लागे हो जवांई म्हानें घणा ने सवावे हो
हो म्हारी कंवर बाई रा पीव जंवाई प्यारा लागे हो ।

---

(३) कलेवो

उठो म्हारा ओ ढोलाजी करोनी दांतणीयां
सोना री झारी बनड़ा केला रो दांतण

इसड़ा दांतणियां थारा दासीजी करावे ॥ १ ॥
उठो म्हारां मारू बना करोनो कलेवो
फीणा तो बाटयो[1] बनड़ा लुंजी[2] रो लचको[3]
इसड़ो कलेवो थारा माताजी करावे ॥ २ ॥
उठो म्हारा ओ ढोलाजी करोनी लोचणीया
लुंग सुपारी बनड़ो पान रो बीड़लो
इसड़ा लोचणीया थारी भोजायां करावे ॥
उठो म्हारा मारू बनड़ा करोनी पोढणीयो[4]
हिंगलु तो ढोल्यो बनड़ा सिरख[5] पथरणा[6]
इसड़ा पोढणींया थारा दासी जी करावे ॥ ४ ॥

तमाखू

[आइ हो आइ हो साहिबा बिणजारे री पोट०]

इसमें तम्बाकु पीने बाबत स्त्री पुरुष का सम्वाद है। पति तमाखू का व्यसनी है और स्त्री उसका निषेध करती है :—

आइ हो आइ हो साहिबा बिणजारे री पोट

१—आटे में घी का मोन डाल कर जो रोटी बनाई जाती है और उपर से घी से चुपड़ दी जाती है, उसे फीणा बाटी या बाटिया कहते हैं। २—आचार। ३—स्वाद। ४—लेटना, सोना। ५—रजाई-लिहाफ। ६—गदीला।

तमाखू लायो रे म्हारो मीठो मारू सूरत री रे
म्हारा राज ॥ १ ॥

आय ने उतरियो हो ढोला अखीवड़ रे हेठै
मेहड़लो बूठो हो म्हारां गाढां मारू हीरां मोतीयां रे
कठड़े नै ढलाऊं हो सायबा बिणजारे री पोट,
कटड़ै नै ढलाऊं हो इण गुण सागर रो ढोलियो रे
चौवटै में ढलावो हो म्हांरी सुन्दर गौरी बिणजारे री पोट
म्हेलां में ढलाओ जी इण आली जा रो ढोलीयो जी
कहोनी हो बिणजारा थारी तमाखू रो रे मोहोल
थारी तो तमाखू रे म्हारा गाढा मारू मोलवे
(म्हारे आलीजे रे खितचढी) हो जी म्हारां राज ॥५॥

रुपिये री देऊं हो हंजा मारू आधोड़ी छटांक
हे कांइ मौहर री देऊं हो म्हारा मदछकिया जी
मोकली हो म्हारा राज ॥ ६ ॥

मुखड़े री आवे हो आलीजा वुरीयज वास,
हो कांई अपूठा फिरहो जी म्हारा हंजा मारू
आप पौढंजो जी हो म्हांरा राज ॥ ७ ॥

ऐड़ा हे ऐड़ा सुन्दर गोरी बोल न बोल
हे कांइ थारे नै बोलां पर हे म्हांरी सुन्दर गोरी

लाऊ पूंगल री पदमणी हो म्हांरा राज ॥ ८ ॥
लावो तौ लावो हो हंजा मारू लावो दोय चार
हो कांई म्हारी होड हो म्हारां मीठा मारू
नां करै हो म्हांरा राज ॥ ९ ॥
हिवड़ें री हो हंजा मारू चिलम वणांऊ
हो जी कांही जिवड़े[1] रा चढाऊं हो म्हारा हंजा मारू
चिलमिया[2] हो म्हांरा राज ॥ १० ॥
आप तो अरोगो[3] हो सायबा सुगंधी तमाखू
जीव सुख पावे हो म्हांरा हंजा मारू
अरोगो हो म्हांरा राज ॥ ११ ॥

रिड़मल (राग मांड)

[सावणिये रे पैलड़ै मास रिड़मल घुड़लां ने मोलवे रे]

इसमें स्त्री अपने वीर पति की घुड़सवारी और युद्ध कुशलता तथा तयारी का बखान करते हुवे प्रशंसा के गीत गाती है :—

सांवणियां रै पेलड़े मास रिड़मल घुड़ला मोलवे रे
हां रे म्हांरी जोड़ रो रे गढां रौ राजवी रे रिड़मल राव

१—जीव । २—चीलम पर की आग । ३—पीवो, खावो ।

भादरवे रे दूसरे मास रीड़मल घुड़ला ने जव देवे रे
हां रे म्हांरी जोड़रो रे गढा रो राजवी रीड़मल राव
आसोजां री तीसरे मास रिड़मल घुड़ला ने घी देवे रे
हां रे म्हांरी जोड़रो रे गढां रो राजवी रे रिड़मल राव
कातीकै रे चोथवे मास रिड़मल घुड़लां ने फैरवे रे
हां रे म्हांरी जोड़ रो हे गढरो राजवी हे रिड़मल राव
रिड़मल रे उणियार नां कोई जायो नां जनमसी रे
हां रे म्हांरी जोड़ रो रे गढां रो राजवी रे रिड़मल राव।५।
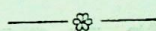
रिड़मल खारी खाबड़ रो (राग माड ताल)

[खारी नै खाबड़ रौ रिड़मल राव]

मारवाड़ के एक वीर पुरुष रिड़मल के वीर कार्यों का वर्णन है, जिसका उसकी स्त्री परिचय कराती है। और विवाह के पश्चात पतिदेव का राज्य सेवा में चले आने पर वहां के रानियों को सन्देश कहलाती है कि मेरे पति इस प्रकार के हैं उनको छुट्टी दो :—

खारी नै खाबड़[1] रो रिड़मल राव ॥ टेर ॥
आप संपाड़े[2] विराजिया[3] भीजें[4] गढ री भीतं।

१—एक जिले का नाम (सांचोर में)। २—नहाना।
३—बैठे। ४—भीगना।

सोढां हंदे देश में पाग लेवण री रीत ॥ १ ॥
सौ सोनिगरा जांन में सौ राठोडां साथ
सोढा कहि आसंग[1] हो म्हारी पागन घाले हाथ ॥२॥
वीला लीलौ लावजे बंधियो न राखे टार[2]।
साकत[3] मांडै सोवनी[4] राव हुवै असवार ॥ ३ ॥
नली कटाऊं नवलखा बींजण[5] लिराऊं पौड़[6]
पागज जासी वीद री नहीं जावण ने ठौड़ ॥ ४ ॥
लंगर खोलो रावजी जाऊं एकण चोट
पागज[7] राखूं बींद री कूदूं ऊमरकोट ॥ ५ ॥
तोरण तारां बांधियो है कोई बांधण हार।
रजपूती विलै तणी मिन्त कंवारा जाय ॥ ६ ॥
केसर चरुआं ऊकलै कचमच माच्यो कीच।
भारमल परणिजे तलेटियां रिड़मल मेहलां बीच ॥७॥

\+ + +

खूंटी नहि है ताजणो[8] पड़वै नहीं पिलांण[9]।
सेजां नहि सायबो ठांण नही केकांण[10] ॥ ८ ॥

१—हिम्मत । २—घोड़ा । ३—साज । ४—सोनेहरो । ५—ओजार विशेष । ६—खुर । ७—पगड़ी । ८—चाबुक । ९—साज । १०—घोड़ा ।

ईडर गढ री राणियां थां पर पड़जो बीज[1]।
म्हारो साजन थां दिस बसे आज सावण री तीज।
ईडर आंवां आंवली ईडर दाड़म दाख।
कमधज[2] कैसा राव रे रिड़मल बारे लाख ॥ १० ॥
काको वां रो कूंपदे भाई भारतमल।
घोड़ा वांरे नवलखौ रावतियौ रिड़मल ॥ ११ ॥
वोहिज घोड़ो नवलखों वोहिज वीलो खवास[3]
डावी मिसल आसो बसै रावतियो[4] रिड़मल ॥१२॥

गर्भाधान के गीत

गर्भवती की अवस्था में स्त्री की विशेष दशा व रुचि का वर्णन करते हुवे स्त्रियें ये मंगल गीत गाया करती हैं:—

पेलो मास उलरियो[5] ए जचा वैंरो आलसिये मन जाय।
दूजो ए मास उलरियो ए जचा वैंरो थूंकतड़े मन जाय ए ॥

१—बिजली। २—मारवाड़ के राठोड़ राजपूत कमधज या कमधजिये भी कहलाते हैं। कहा जाता है कि राठोड़ों के किसी पूर्वज का सिर कट जाने के बाद भी उसका कबंध (धड़) शत्रु से लड़ता रहा, इससे उसके वंश वाले कबधंज कहलाये जो विगड़ कर कमधज हो गया। कहीं कमधज नाम का कोई राजा होना भी लिखा है जिसके वंशज "कमधज" कहलाये। ३—दास। ४—सुन्दर। ५—बीता, गुजरा।

अलबेली ए जच्चा चांदी रे प्याले केसर पांवसां ॥टेक॥
नखराली ए जच्चा पानां रे बरक चढावसां
तीजो मास उलरियो ए जच्चा नीबूड़े मन जाय
चोथो मास उलरियो ए जच्चा लाडुड़े मन जाय ए ॥अ०॥
पांचवो मास उलरियो ए जच्चा मालुपुड़े मन जाय
छटो मांस उलरियो ए जच्चा घेवरिये मन जाय ए ॥अ०॥
सातमो मास उलरियो ए जच्चा कंद रे पेड़े मन जाय
आठमो मांस उलरियो ए जच्चा अगरणी[1] मन जाय ए
नमो मास उलरियो ए जच्चा ओवरिये[2] मन जाय ॥
दसमो मास उलरियो ए जच्चा हालरिये[3] मन जाय ए ॥
केसर पावो बरक चढावो दोय पड़दा ताणों
मुलक[4] मुलक थे मुलको जच्चा हंस कर मुखड़े बोलो
नखराली ए जच्चा चांदी रे प्याले केसर पांवसाँ ॥

(२) अजमो

थेइज ओ केसरिया सायब[5] गांव सिधाया[6] ओलगणी[7]
सिधाया ओ अजमो कुण[8] मोलवे ओ राज ॥

१—अगहरणी, आठवें मास में गर्भवती के उपलक्ष में मित्रों व स्वजाति को एक भोज देते हैं। २—भीतरी कमरा ३-बच्चे को हुलराना यानी गीत गाकर रीझाना। ४-मुस्काना। ५-पति। ६—गये। ७—नौकरी। ८—कौन।

थेइज ओ मानेतण राणी हालरियो[1] जिणजो
धेनड़ियो[2] जिणजो ओ अजमो[3] मारा भाबोसा मोलवे
ओ राज ॥
थांरा भाबोजी एकरोई लावे दोय रो ई लावे
मारो मन नहीं पतीजे[4] हो राज ॥ थईज ओ केसरिया
सायब
गांव सिधाया ओ अजमो कुण सोवसी[5] ओ राज ॥
थेइ ओ मानेतण राणी थेई ओ वालेसर राणी
हालरियो जिणजो धनडियो जिणजो ओ अजमो मारा
माताजी सोवसी ॥

सन्तान उत्सव गीत

बच्चा होने पर ये गीत गाये जाते हैं :—

हे मारे उत्तर दिखन री ये जच्चा पीपली
ये मारे पूर्व नमी[6] नमी डाल रे ॥
ये मानें घणीये सवायें[7] जच्चा पीपली ॥ टेक ॥
हे थारे गीगो[8] ए जन्मयो आधी रात ए

१—पुत्र । २—पुत्र । ३—अजवान । ४—सन्तुष्ट । ५—साफ़ करना । ६—भूकी । ७—अच्छा मालूम होना । ८—पुत्र ।

हे थारे गुल[1] बैंच्यो[2] परभात ॥ १ ॥
ऐ माने घणी ए सवाये जच्चा पीपली
हे ओरा तो मांय मारी ए जच्चा राणी रे
हे ओवरो ये जठे रातो[3] सो पिलंग बिछाया ए
म्हाने घणी ए सवाये जच्चा पीपली ॥
हे जटे ने बहू सिणगार दे पोढिया[4] ए
ऐ बाँरी दासी ढोले[5] छे वाव[6] ॥ हे माने० ॥
हे खोदे खिणे ने ए मारी जच्चा राणी ओडा[7] भरे
हे जटे उगड़ी[8] छे पुत्रो री खान ॥ माने ॥
हे काजल तो भरियो ए जच्चा राणी रे कूंपलो[9]
हे बहू ए सिणगारदे नैण सवार ए ॥ माने ॥
हे कूंका[10] तो भरी जच्चा राणी रे कूंकावटी[11]
हे बहू सिणगारदे पियल[12] संवार ए ॥ ६ ॥
हे पान अणावो[13] ए मारी जच्चा राणी रे तास[14] रा
हे जटे पूर्वि छै वानर माल ए ॥ माने घणी० ॥

१—गुड़ । २—बांटा । ३—लाल । ४—सोये । ५—करना । ६—हवा । ७—टोकरी । ८—खुली । ९—काजल रखने का पात्र । १०—कुंकुम । ११—कुंकुम रखने का पात्र । १२—पाँव । १३—लाओ । १४—स्थान विशेष ।

हे पेली बंधाड़ो ए मारी जचा राणी रे ओवरे
हे दूजी ए साल दुसाल ए ॥ माने घणी० ॥
हे अघणी[1] बंधाड़ो ओ रतन रसोवड़े
हे चोथी वसुदेवजी री पोल ए ॥
हे पुष्पां तो भरियो ए मारी जचा राणी रे छावड़ो[2]
हे बाई किए घर जाय, हे वछदेवजी रे घरेई
वधायणो जींयारी[3] कुल बहू जायो छे पूत हे
हे बाई सुंदर बाई किए घरे जाय।
बाबोजी रे घरेई वधामणो, वें री भाभज जायो छै पूत।
हे पिलो तो ओडयो ए मारी जचा राणी
धसमस[4] जे चाले छै मधुरी सी चाल।
हे चार चतुर मिल मारी जचा राणी ने
हे किस बहूबड़ किस धीय ॥ ऐ माने घणी ए० ॥
हे वछदेवजी री कहीजे ए मारी जचा राणी कुलवहू
हे साजन भीकमजी री धीय, रुकमणिया री कईजे
जचा राणी
बेनड़ी-केसरिया श्रीकृष्ण री नार ॥ हे माने० ॥
हे उठो सासुजी रांधो लापसी,[5] हे देवता रे भोग लगाड़

१-तीसरो। २-टोकरो। ३-जिनकी। ४-हिलती हुई। ५-लपसी।

उठो बाईसा बांधो राखड़ी थारां वीरोसा रा जतन कराव
उठो मानेतण खोलो कोथलो[1] थारे सासुनणदनेओढ़ाव।

---

(२) हालरो

जाय कुमठिया[2] ने यूं कईजो मारे कुंभ कलश ले आवजो
मारे कुभ कलश लेय आवेजी ॥
थे सिणगारदेजी ए जायो हालरो उजलदंती ए जायो
हालरो
कलशे मारे हाल नावसी[3] पाटे नावे हालरिया री
मायजी ॥ उ० ॥
जाय खातीजी ने यूं कईजो मारे पिलंग पाटी ले आयजो
मारे पलंग पाटी लई आवेजो ॥ उ० ॥
पिलंग मारो हालर पौढसी, कांई पाटी बांधे हालरिया
री मायजी ।
जाय दरजी ने यूं कईजो मारे जाय दरजीसा ने यूं कइजो
पड़दा ने पाटी लई आयजो, मारे पाटी ने पड़दो ले
आवेजी

१—कपड़ों का थेला । २—कुम्भहार । ३—स्नान करेगा ।

पड़दे मारे हालरो पोढसी कांई पाटी बांधे हालरिया
री माँयजी
जाय कंदोई[1] यूं कइजो मारे लाडु पेड़ा लई आवेजी
लाडु मारो हालर जीमसी कांई पेड़ा जीमे हालरिया
री माँयजी

(३)

लायदोजी भंवर म्हाने चीणोटियो[2] ॥
जोधाणे रे गढ चोवटे[3] मारूजी
आई आई चीणोटिया री पोट[4]
लायदो नी भँवर म्हानें चीणोटियो ॥
देराण्या जेठाण्या ओडया चीणोटिया
भंवर म्हाने चीणोटिया रो कोड
लायदो जी चतुर चीणोटियो ॥
ऐ तो देराण्या जेठाण्या जाया हालरा
मारवण थे कांई जाई है धीव[5]
लायदो जी भंवर म्हाने चीणोटियो
मैं तो मरू के जीवूं म्हारी मावड़ी[6]

१—हलवाई। २—वस्त्र विशेष। ३—चौहटा=बाजार।
४—गाँठ। ५—कन्या। ६-मां।

ऐ तो कमधजिये बोल्या हे रे बोल
लायदोनी भंवर म्हाने चीणोटियो
तूं थो नोज[1] मरे ए मारी धीवड़ी
सूरज तो सुणेला थारी वीणती
आ तो बेहमाता[2] सुणेला पुकार
लावदो जी म्हाने चतुर चीणोटियो ॥
ऐतो सूर्जनाराण सुणी विणती
आ तो बेहमाता सुणी रे पुकार
लायदो जी भंवर म्हानें चीणोटियो
ओ तो कुणजी चीणोटियो मोलवे
ऐ तो कुणजी रे खरचेला दाम
लायदो जी भंवर म्हानें चीणोटियो ॥
ऐ तो सुसरोजी मोलावे चीणोटियो।
ऐ तो सासूजी ओ खरचेला दाम
लायदो नी चतुर म्हानें चीणोटियो।
ऐ तो ओड पेहरने धण सांचरी
आ तो कीसा रे सज्जन री धीव
लायदो नी भंवर म्हानें चीणोटियो ॥

१—कभी नहीं। २—विधाता।

सुवरियो

[सूवरिया रे धीमो मुधरो चाल०]

यह गीत सावण मास में गाया जाता है। इसमें सूअरों की शिकार का वर्णन है। सूअर अपनी वीरता बतलाता हुआ शिकारियों पर धावा करने का निश्चय करता है। सूअर की इस वीरता के बहाने से मनुष्यों में वीर भावों का संचार करने का उपदेश है :—

सुवरिया[1] रे धीमो मुधरो[2] चाल, चाल रे भाखर[3] रा रे
भोमिया[4] हो ओ सुवरिया रे धीमो धीमो चाल ॥टेर॥
ऐरण ठमक्को म्हे सुण्यों रे लोहा घड़े लुहार।
सूरां सारू सेलड़ा[5] भूंडण[6] सारू[7] भाल ॥ १ ॥
ऐरन ठमक्को म्हे सुन्यो रे सोनो घड़े सोनार।
कंवरा रे घड़ीजै कांठला रे घुड़लाँ रे गूघर माल ॥ २ ॥
कालो घोड़ो कूदणो पातलियो असवार।
सेल भलक्के[8] हाथ में चढियो राव खंगार ॥ ३ ॥
सूवर सूतो नींद में भूंडण पहरा देत
उठौ सूवर नींदालका फौज हिलोला[9] लेत ॥ ४ ॥

१—सूअर । २—मस्त । ३—पहाड़ । ४—भू-स्वामी । ५—भाला । ६—सूअरनी । ७-वास्ते । ८-चमके । ९-झूमना ।

फौजां दल नै फेर ने जीतर ऊभा जंग।
चंपला वरणी दातली भरी कसूंबल रंग ॥ ५ ॥
सूरा जणे तो चार जण मत जणजै चालीस
ऐ चारू रण भंजणा[1] वे चारू चालीस ॥ ६ ॥
सूवर वाही[2] दांतली आंण[3] खटक्की हड्ड।
भाई व्है तो वावड़ै[4] गया घिरांणा[5] छड्ड ॥ ७ ॥
तूं जा भूंडण रिवछडै[6] म्हैं जाऊं घण ठट्ट।
मैलों रोवाऊं कामणी मांस बिकाऊं हट्ठ ॥ ८ ॥
पाला[7] मारू पांच सौ पाखरिया[8] पचास।
तुरी उलालूं[9] थूड़[10] सूं तो भूंडण भरतार ॥ ९ ॥
सुवरियो पाडा[11] खुरो हिलियो[12] बांगा जाय।
डाल मरोड़ सोवनी[13] फल लाखीणा[14] खाय ॥१० ॥
एक पराया जव चरै दूजी करै अलैट[15]।
कोई इसड़ो जागसी छड़[16] धरती फल पेट ॥ ११ ॥

१—भागना। २—चलाई। ३—आकर। ४—पीछा आना। ५—दूसरा। ६—धूप चढे। ७—पैदल। ८—घुड़सवार। ९—उल्टना। १०—थूथन। ११—मोटा, मजबूत १२—आदत पड़ा हुआ। १३—सुनेहरी, उत्तम। १४—बहुमूल्य। १५—बिगाड़ १६—बाँस।

रतन रांणो

[म्हारा रतन रांणा एकर तो अमरांणे घोड़ा फेर]

यह गीत करुणा जनक विलाप "मरसिया" का है। इसमें अमरकोट (सिन्ध) के एक वीर पुरुष की स्त्री अपने पति को बुलाती है जो अपने मुसलमान शत्रू को मार कर अंग्रेज़ सरकार द्वारा सं० १९२३ वि० में स्वयं फाँसी पर लटकाया गया था। यह सावण मास में गाया जाता है :—

म्हारा रतन रांणा एकर तो अमराणे घोड़ो फेर
अमराणे में बोले सूहा[1] मोर हो जी हो
म्हारा रतन रांणा अमराणें में बोले सूहा मोर
बागां में बोले छे काली कोयली रे
म्हारा सायर[2] सोढा एकर सूं अमराणे घोड़ा फेरे ॥१॥
अमरांणे में महूड़े रो पेड़ हो जी हो
म्हारा रतन रांणां अमराणे में महूड़ा रा रूंख[3]।
महूड़ाँ माँही सू (महुड़ा पी लीजे) मद नीसरे हो
महारा रतन राँणाँ एकर तो अमराणे पाछो आव ॥२॥
अमराणें में घरट[4] मंडाय[5] हां रे महारा रतन राणा
घर घरिये में घरट मंढाय ओ जी हो

१—तोता। २—चतुर, सागर। ३—पेड़। ४—बड़ी चक्की। ५—आरम्भ करना।

गेहूँड़ा पीसीजे हो जी हो आटड़यो पीसीजे राणे राव री
म्हांरा सायर सोढा एकर तो अमराणे घोड़ा फेर ॥
अमराणे में घड़े रे सोनार म्हारां रतन राणां
अमराणे में घड़े रे सोनार है पायलड़ी घड़लायदे
रिम रिम बाजगी रे म्हांरा रतन राणां एकर सूं
अमराणे घोड़ा फेर ॥ ४ ॥
भटियल[1] ऊभी[2] छाजइयै री छांह[3] हो जी हो म्हांरा
रतन राणा
भटियल ऊभी छाजइये री छांह हो जी हो
आंसूड़ा ढलकावे कायर मोर ज्यूं रे
म्हारा रतन राणा एकर सूं अमराणे घोड़ा फेर ॥५॥
अमराणे में घोर अन्धार हां रे म्हाँरा सोढा राणा
अमराणे में हो घोर अन्धार हो जी हो
बिलखा[4] नै लागे रे मैहल मालिया हो
म्हारा रतन राणा एकर तो अमराणे पाछो आव ॥६॥

१—राजपूत जाति के भाटी वंश की स्त्री = भटियाणी।
२—खड़ी। ३—छाया। ४—उदास।

वधावो

ये गीत स्त्रियें प्रत्येक मंगल उत्सव के अंत में गाती हैं :—

मोतियां रा लूबंक झूबंक किस्तुरी ओ राजा बानर माल ॥
वधावोजी मारे आवियो
हरी २ गोबर गुणती[1] गज मोत्यां ओ राज चौक
पूराव[2] ॥ व० ॥

सेवलां[3] रा पाट अणवो जटे बैठा ओ दशरथजी रा सीय[4]
ऊठ भूआ कर आरती आरतड़ी एवाई थारोडो नेग[5]
कहीं देसो आरती वीरा कही ओ आरतड़ी रो नेग ॥
सोनों देसां सोलवों[6] बाई देसां ए गज मोतियां रो हार ॥
वधजो[7] कडवा नीब ज्यूं वीरा वधज्यो ओ हरीयाली
री द्रोब ॥
भाभज जिणज्यो दीकरा, भतीजा ओ परणी घर आव ॥

(२)

सखी मोत्यां रा लांवक[8] झूंबका,[9] किस्तुरी री बांदड़ माल
जाय बांदो छत्रपतियां रे मेहला में छत्र पति सा

१—थैली। २ लीपाव, भराव । ३ रेशम । ४—पुत्र।
५—दस्तुर, लगान । ६—उत्तम। ७—बढ़ना । ८—लम्बे।
९—गुच्छ ।

सरीखा शीस-जग जीतो ए आनंद बधावणों।
जाय बांधो महादेवजी रे मेहला में गजानदंजी
सरीखा शीस-जगजीतो ए आनदं बधावणो
जाय बांधो वसुदेवजी रे मेहलां मे श्रीकृष्णचन्द्र
सरीखा शीस-जगजीतो ए आनदं बधावणो

पिलो

[उदीया तो पुर से सायबां पिलो मंगाओ जी]

बच्चा होने पर जच्चा का पीला दुपट्टा पहिनने का पुराना रिवाज है। इस पीले दुपट्टे की प्रशंसा में ये गीत गाया जाता है:—

उदिया पुर से तो सायबां पिलो[1] मंगाओ जी।
तो नानीसी[2] बंधण बंधावो गाढा[3] मारूजी ॥ १ ॥
पीला तो पल्ला साहेबा बंधण बन्धावो जी
तो अदबिच चांद छपावो गाढा मारूजी
पीलो तो ओढ म्हारी जच्चा पोढे जी
बड़ी तो सराही सहर सराही गाढा मारूजी।
पीलो तो ओढ म्हारी जच्चा महल पधारी जी
तो कोई हे सपूती नीजर लगाई गाढा मारूजी ॥४॥

१—पीला दुपट्टा-ओडना। २—छोटी सी। ३—प्यारा।

आख्यां नहीं चोखे[1] म्हारी जचा मुखड़े नही बोले जी
तो जचा राजी न बिलख्या डोले गाढा मारूजी ॥
आंख्या तो चोखी म्हारी जचा मुखड़े जी बोली जी
तो जचा रा राजीन हरख्या[2] डोल गाढा मारूजी
सायवां पिलो मंगाओजी ॥

बनी

[सोना रूपारा दोय ओवरा चनए जड़याजी किवाड़]

यह गीत कन्या के विवाह लग्न के उत्सव पर गाया जाता है :—

सोना रूपा रा दोय ओवरा चनए जड़याजी किवाड़।
जठे सुता जी बाई रा भाबोसा, चनए जड़याजी किवाड़
किवाड़ जठे सुताजी बाई रा काकोसा ॥ १ ॥
सोवो हेक जागो बाईरा काकोसा, साजन उभाजी बार[3]
करो न साजनीयाँ[4] सु वीनती साजन उभाजी बार
करो ना साजनीयां सु वीनती ॥ २ ॥
हाथ जोड़ करस्या वीनती, हाथ जोड़ करस्यां वीनती
देसां लगन लिखाय धरम कन्या परणावसां
देसां जान[5] जिमाय घर धरम कन्या परणावसां ॥३॥

१-देखना । २-खुश होना । ३-बाहर । ४-सज्जनों । ५-बरात ।

जनेउ (यज्ञोपवित)

बनड़ो चाल्यो हे पहन बनारसी
वांरां[1] दादाजी जावण न दे
बनासा[2] थे यांई भणोजी[3] ॥ १ ॥
थारा गुरुजी ने पचरंग मोलियो[4]
थारी गुराणी ने दीखणी रो चीर
बनासा थे यांई भणोजी ॥ २ ॥
थारा गुरुजी ने मुरक्या[5] दोवडी
थांरी गुराणी ने नोसर हार
बनासा थे यांई भणोजी ॥ ३ ॥

सहायक आरती

ऊंची उंची मैड़ी[6] झरोका चार,
घड़ ल्यारे खाती का बेटा बाजोठ्यो
जां बेठेला राजकुंवार, करो ना भुवा बाई आरत्यो ॥१॥
आरतीया में रुपयो रोक और मंगाओ बाला[7] चुनड़ी
झूठा भुवा बाई झूँट न बोल, चार टकांरो बाई रो
आरत्यो ॥

१—उसके । २—पुत्र के लिये स्नेह सूचक शब्द, बनडो ।
३—पढो । ४-लहरीया साफ़ा । ५-कानें के कुंडल ।
६-खपरेलदार दुमंजला कमरा । ७—प्यारा ।

राती जोगा-रतजगा (रात्रि जागरण) के गीत

देवी

[चालो २ अपे चौसट देवियां ए जोधाणे जोवा जी जाय]

देवताओं को प्रसन्न करने के बहाने से रात्रि के समय स्त्रियों द्वारा विवाह आदि अवसरों पर भिन्न २ कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से दो चार इस प्रकार हैं।

चालो २ अपै चौसट देवियां ए जोधाणो जोवा[1] जी जाय।
जोधाणां रो कासुण[2] जोवजो ए जोधाणे महाराजा
रो राज ॥

चाला अपे चोसट देवियां ए मंडोवर जोवाजी जाय।
मंडोवर रो कासुए जोवजे ए मंडोवर दाड़म दाख ॥२॥
वाड़ी रा वड़ रुलियांमणा[3] ए सियली[4] बड़ी[5] री जी छाय
नागादरी नाडे[6] भरी ए झिलती[7] झालर वाव[8] ॥३॥
ओरां रे दातण लाकड़िये मारी अंबाजी रे काचीजी
केल ॥ ४ ॥

औरां रे जींमण खाजा लाडू लापसी ए मारी अंबाजी
रे पांच पकवान ॥ ५ ॥

१-देखो। २-क्या। ३-सुहावना। ४-सीतल। ५-बरगद। ६-पूरी, मुँह तक। ७-सुंदर दिखाई देना। ८-बावड़ी, वापी।

ओरां रे मोचण[1] डोडा एलची ए मारी अंबाजी रे
नागर बेल
ओरां रे पोडण हिंगलु ढोलियो[2] ए मारी अंबाजी रे
लूं बलुंबाली सेज ॥ ७ ॥
बहूवों ने दीजो दीकरा ए धीयड़िया रो अमर अहवात[3]।
जीवारामजी ने तूठे[4] घणा हेत सूं ए किशोरजी रे
खेड़े[5] जीत राख।
सालगजी रे तूठे घणा हेत सूं ए महावीरजी तूं रखवाल*

(२) भैरूजी

भैरव काला और भैरव गोरा ओ वेगेरो[6] आव
तो विन ओ भैरव तो बिन विरध[7] न होवसी
जे तो विन ओ भैरव तो विन जनोई न होय ॥ १ ॥
कठड़े[8] ओ भैरव कठड़े लागी इती वार सगलां
ओ भैरव सगलाओं[9] पेला नूतरिया[10] ॥ २ ॥

१—रगड़ना, मुँह साफ़ करने को। २–पलंग। ३—सुहाग।
४—तुष्ट, वरदान देना, प्रसन्न होना। ५—गांव।
* अपने घर वालों के नाम लेकर ये अंतिम पंक्तियें गाने को है।
६—जल्दी। ७—वृद्धि, बढोतरी। ८—कहां। ९—सब से प्रथम। १०—निमंत्रित।

जे इमकिम[1] ये राणियां इमकिम आव्यो न जाय
आडी[2] ए राणियां आड़ा तो गंगा जमना सरस्वती
जे गंगा ओ भैरव गंगा ओ हर हर जाय जिमना
ओ भैरव जिमना ओ वेवे गोडां तणी ॥
जे कठड़े ओ भैरव कठड़े ओ किये सिणगार
कठड़े ओ भैरव कठड़े धोया धोतिया ॥ ५ ॥
जे जल थल ए राणियां जलथल किवो सिणगार
सरोवर ए राणियां सरोवर धोया धोतिया ॥
जे कठड़े ओ भैरव कठड़े थारो जी थान[3]
कठड़े ओ भैरव कठड़े ओ थारी थापना ॥
जे मंडोवर ए राणियां मंडोवर मारोजी थाण
इण घर ए राणियां इण घर मारी थापना ॥
जे जिमणे ओ भैरव जिमणे ओ हाथ त्रिशूल
डावे ओ भैरव डावे ओ डमरू डिगमिगे।
कडिये ओ भैरव कडिये लुलन्ता[4] केश पावे
ओ भैरव पावे वाज्या[5] गूघरा।
जे सिदुरें ओ भैरव सिन्दूरें ओ अंग भभूत[6]

१—ऐसे केसे। २—बीच की रोक। ३—स्थान।
४—झूलते हुवे। ५—बजना। ६—भस्म।

खांदे ओ भैरव खांदे[1] ओ कावड़[2] मद भरी ॥
जे आव्यो ए मारी मंसा रो पूरण हार
गलिये[3] ओ भैरव गलिये ओ वाज्या गूघरा
जे खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावूं चूरमो
जे ऊपर ओ भैरव ऊपर धारी जी धार।
खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावूं लापसी
जे ऊपर ओ भैरव ऊपर रस[4] री जी धार।
खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावूं तिलवठ[5] बाकला[6]
ऊपर ओ भैरव मद री जी धार॥
खप्पर ओ भैरव खप्पर भरावुं खीर सूं
जे ऊपर ओ भैरव बूरा जी खांड
तूटो ए बहू सिणगारदे* री कूख[10] कूखे[11]
ओ जिण मोहन सरीखा जनमिया॥

१—कंधा। २—बैंगी। ३—गली। ४—घी। ५—उबाले हुवे तिल। ६—उवाले हुवे मोठ, मूंग, उड़द का धान। १०—कूख, कूक्षी। ११—प्रस्व वेदना।

*अपने पुत्र वधुओं के नाम लेकर गाना चाहिये।

(३) जलदेवता का

हरिया बांसां री छावड़ी रे मांय चंपेली रो फूल
तू बामण बांणये री के विणजारे री धीय
ना मूं बामण बांणये री ना विणजारे री धीय
हूं तो सकल देवतीये पांगलियां[1] पग देय
भवानी आद भवानी सकल भवानी चारूं खूंठ में
चारूं देश में बखाणी शिवरूपे आद भवानी ॥
हरिया बांसां री छावड़ी रे मांय गुलाबी रो फूल
के तूं बामण बाणये री के बिणजारा री धीय
ना मूं बामण बाणये री ए ना बिणजार री धीय
हूं तो सकल जल देवता ए वांजड़िया[2] पुत्र देव
वांजडियां पुत्र देय भवानी आद भवानी सकल भवानी
चारूं देश में चारूं खूट में बखानी सिमरू ए आद भवानी
हरिया बांसां री छावड़ी ए मांय जुई रो फूल
कै तूं बामण बाणयेरी ए कै बिणजारे री धीय।
ना मूं बामण बाणयेरी ए ना बिणजारा री धीय
हूं तो सकल जलदेवती ए निर्धनियां धन देय

१—पंगु । २—वांझों को ।

निर्धनियां धन देय भवानी आद भवानी सकल भवानी
चारूं देश में चारूं खूंठ में बखाणी सिवरू ए आद भवानी
हरिया बांसां री छाबडी ए मांय कमल रो फूल
कै तूं ए बामण बाणये री ए कै बिणजारा री धीय
ना मूं बामण बाणये री ए ना बिणजारा री धीय
हूं तो सकल देवती ए आंधलियां[1] आंख देय
आंधलियां आंख देय भवानी आद भवानी
सकल भवानी चारूं देश में चारूं खूंट में
बखाणी सिवरू ए आद भवानी ॥

---

(४) गोगाजी *

आज धोराऊ धर्मी धूंधलो काली कांटण मेह ओ ॥
आज ने वर्षे धर्मी मेऊड़ा भीजें तम्बू री डोर ओ ॥
तम्बूतो भीजें धर्मी टप[2] चूवे भीजे सो सिणगार ओ।

१—अंधा। * यह ज़िला हरियाना के गांव मेहरी के चौहान राजपूत थे। सं० १३५३ में दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह द्वितीय के सेनापति अब्रुबक्र से युद्ध कर ये बीर गति को प्राप्त हुवे। हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भादों बदि ६ को इनकी जयन्ती मनाते हैं। मुसलमान इन्हें जाहीर पीर के उपनाम से पूजते हैं।
२—छुत।

पेई[1] तो भीजें धर्मी प्रेम री जिणमें सौ सिणगार ओ।
घोड़ा तो भीजें धर्मी हांसलो मोतिड़े जड़ी लगाम ओ
जामो[2] विराजे धर्मी रे केसरिया पांच मोहर गज पाग ओ
सूतण[3] विराजे धर्मी रे केसरिया नाड़ो[4] लाल गुलाल ओ।
कंठी विराजे धर्मी रे सोवनी ऊजला मोती छे कान ओ
कड़िये कटारो धर्मी रे वाकड़ो सोरटड़ी[5] तरवार ओ
पाय लाखीणी धर्मी रे मोजड़ी[6] हलते[7] राता छे पाव ओ
ओरा तो माय धर्मी ओवरो ओ रातो पिलंग बिछाय ओ
जठे गोगोजी धर्मी पोडिया मीड़ल[8] डोले छे वाव ओ
ऊपरवाड़े हेलो[9] मारियो थे जागो माजन लोग ओ।
गायां ने घेरी धर्मी वाछरू बांध्या जाय गोवाल ओ।
अंग मरोड़ी धर्मी ऊठिया ललक्या लाल कबाण ओ
पेहला छोडाऊं बाईरी गायड़ी पछे गायां रा गोवाल ओ
पेहला छोड़ा बाईरी गायड़ी दूध पीवे बछराज ओ।
भरिया तो नाडा[10] धर्मी नाड़का भरिया समद्र तलाव ओ

१—पेटी। २—वस्त्र विशेष, जामा। ३—पायजामा। ४—इजारबंद, नीवीबन्द। ५—सौराष्ट्र प्रांत (काठियावाड़ में) ६—पगरखी, जूतियें। ७—अलता, लाल रंग विशेष। ८—नाम विशेष स्त्री का। ९—आवाज देना। १०—तलैया।

(२)

गिगन भवनती कूर्जा ऊतड़ी कांई यक लाई हो वात ओ।
कुंण २ ठाकुर जुंजीया कुण २ आया हे काम ओ॥
गोगो ने धर्मी वेई जूंजीया गोगो आयो हे काम ओ
आठम रे दिन जूंजीया नमें लीदो अवतार ओ॥
दसमे रे चिणावूं धर्मी रे देवरो चवदस जातीड़ा जाय ओ
बांधो गोगाजी री धर्मी राखड़ी आठमरी नव गांठ ओ
तूठे गोगाजी सावण रमती तीजणी जां रो अमर
अवात ओ॥
तूठे गोगाजी बूढा ठाडा डोकरा[1] तूठे भल मोठीयार[2] ओ
गावे गवाड़े सीखे संभले जिणरी गोगाजी पूरे छे
आस ओ॥

१—बूढ़ा। २—जवान आदमी।

रजवाड़ी मजलिस के गीत (दारूड़ी)

जब राजपूताना के सरदार पुरानी प्रथा अनुसार मेहमानी करते हैं और इष्ट मित्रों सहित बैठ कर सहभोज करते हैं, उस वक्त ढोली-ढोलनिये शराब की प्रशंसा में ये गीत गा कर उन्हें रीझाते हैं। सरदारों के तासली (भोजन) जीमने के वक्त भी प्रायः ये गाये जाते हैं :—

मारे रंग रो प्यालो पियोनी अन्नदाता मनवाररो।
मारे आसैया[1] रो प्यालो पियो नी आलीजा मनवाररो॥
सीसी तो धक धक करे, प्यालो करे पुकार।
हाथ प्यालो धण खड़ी, पीओ राजकुमार॥
मारे आसैयारो प्यालो पियोनी आलीजा मनवाररो।
किस्तुरी काली भली, राती भली गुलाब॥
राजन तो पतला भला, जाडा भला हमाल।
मारे रंगरो प्यालो पियोनी अन्नदाता मनवाररो॥
सब मुख देखे चंद को, मैं मुख देखूँ तोय।
तुम ही हमारे चंद हो, मुख देख्यां सुख होय॥
मारे आसैया रो प्यालो पीयोनी आलीजा मनवाररो।
मारे रंगरो प्यालो पीयो नी अन्नदाता मनवाररो॥

१—एक प्रकार का बढिया मारवाड़ी शराब "आसा"।

जो मैं एसी जानती, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढंढोरो फेरती, प्रीत न किजो कोय॥
मारे रंग रो प्यालो पीयोनी मदछकिया मनवाररो।
मारे आसैयारो प्यालो पीयोनी कमधजिया मनवाररो॥

(२)

दारू पीओ रंग करो राता राखो नैण।
दोखी थारा जल मरे, सुख पावेला सेण॥
बादीला पीलो नी दारूड़ी, आप दारू में आछा लागो।
पीओ नी दारूड़ी॥
दारू थने देखता लाख नसा ही लार।
प्यालां दो लीदां पछे, आवे जोस अपार॥
पीओ नी दारूड़ी॥
दारू पीयो थे सायबा दिन में सौ सौ वार।
थारो पीयो मैं सीलसा,[1] मेल[2] गले को हार॥
पीओ नी दारूड़ी॥
दारू पीले पदमणी मत कर वाद विवाद।
दारू में मारू दूसरो पी कर देख स्वाद॥
पीओ नी दारूड़ी॥

१—भुगतेंगे। २—रहन रखना।

दारू रो प्यालो भलो दुपटे रो झालो।
मारवण तो पतली भली मारू वडो वीलालो[1] ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

हूँ थने पूछूँ बालमा प्रीत कता मन होय।
लागतड़े लेखो नहीं टूटी टांक[2] न होय ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

नेणां पटकूँ ताल में कीरच कीरच हु जाय।
मैं थने नेणां कद कहयो मन पेली मिल जाय ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

केसर भरियो बाटको[3] फूलां भरी परात[4]।
भाग बधायो ऐ रानियां राठोड़ी भरतार ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

लीला चाल उतावलो दिन थोड़ो घर दूर।
महलां बैठी कामनी, जोबन में भरपूर ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

घोड़ो बांधो गुलाब रे ढीली छोड़ लगाम।
इण गौरी रे कारणे करो नव दिन मुकाम ॥
पीग्रो नी दारूड़ी ॥

१–रसीला। २–टांका देना, जोड़ना। ३–कटोरा। ४–तबाक, बड़ी थाली।

(३)

भर ला ए सुघड़ कलालि दारूड़ो दाखां रो।
पीवन वालो लाखां रो,[१] भर ला ए सुघड़ कलालि ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥
दारू दिल्ली आगरो दारू बीकानेर।
दारू पीओ साहिबा, कोई सौ रुपया रो फैर[२] ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥ पीवन वालो० ॥
गरुड़ खगा[३] लंका गढाँ मेरु पहाड़ां मोड़।
रूखां[४] में चंदन भलो राजकुली राठोड़ ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥ पीवन वालो० ॥
सोरठियो दोहो भलो, भली मरवण री बात।
जोबन छाई धण[५] भली तारां छाई रात ॥
दारूड़ो दाखां रो
छलबलिया घोड़ा भला अलबलिया असवार।

१—ऐ ! कलाली अंगूरों की दारू भर कर ला क्योंकि पीने वाला लाखों रुपये का आसामी है। २—दारू ही तो दिल्ली और आगरा है और दारू ही बीकानेर है। ऐ साहिब ! दारू पीयो एक फ़ेर (दौर) सौ सौ रुपये का है। ३—पक्षी। ४—वृक्ष। ५—स्त्री।

मध छकियां मारू भला, मरवण नखरादार ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥

मारू मजलसिया भला, घोड़ा भला कुमेत[1] ।
नारी तो निबली भली, कपड़ो भलो सपेत ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥

यहां तक महफ़िल में शृङ्गार रस और नायका भेद का रंग बरसता हुआ देख कर किसी ढाढी से रहा नहीं गया और यह अवसर उस की समझ में वीर रस बरसाने का था। अतः उसने कड़क कर ये कड़के गा सुनायेः—

बांका रहीजो बालमा, बाकें आदर होय।
बांके बनरी लाकड़ी काट सके नही कोय।
दारूड़ो दाखां रो ॥

❀सीप उड़ेके स्वात जल चकई उड़ेके सूर।
नरा उड़के रण निडर सूर उड़ेके हूर ॥
दारूड़ो दाखां रो ॥

१—कुम्मेत रंग विशेष।

❀ जैसे सीपी स्वात के मेह की बूंद का रस्ता देखती है और चकवी सूर्य्य का रास्ता देखती रहती है। वैसे रणभूमि भी निडर नरों का और हूर शूरवीर का रास्ता देखती है।

* घोड़ा हींसे बारणे[1] वीर अखड़े[2] पोल[3] ।
कंकण बांधो रण चढो, वे बाज्या रण ढोल ॥
द्रारूड़ो दाखां रो० ॥

पति-प्रेम

अब नीचे कुछ एक ऐसे गीत दिये जाते हैं जिन में प्रेमिका (कहीं पति प्रिया) अपने प्रेमी (कहीं पति) को सम्बोधित करती हुई विविध प्रकार से प्रेम बतलाती है:—

जल्ला मारू मैं तो थारे डेरा निरखन आई रे ।
मिरघानेणी रा जल्ला ॥
जल्ला मारू, राते धण रो पेटड़लो भल दुखियो ।
झलती जोड़ी रा जल्ला ॥ थारा० ॥
जला मारू कूड़िये[4] रो खारो मीठो पानी ।
पीया प्यारी रा जल्ला ॥

---

* घोड़े तो दरवाज़े पर हिनहिना रहे हैं, शूर वीर पोल में भीड़ कर रहे हैं। कंगन बाँधो लड़ने को चढो, वे लड़ाई के ढोल (बाजे) भी बजने लगे ।

१—दरवाजा । २—भीड़ करना । ३-बड़ा दरवाजा । ४-कुआ ।

जल्ला मारू पेचा[1] मांय लो पेच भलो राठोड़ी।
झलती जोड़ी रा जल्ला ॥
जल्ला मारू छींटा मायली छींट भली मुलतानी।
मारी जोड़ी रा जल्ला ॥ थारा डेरा० ॥
जल्ला मारू हो डेरा री सुनी चतुराई।
डाबर नैणां रा जल्ला ॥
जल्ला मारू हो जातां मायली जात भली भट्टियाणी ॥
झलती जोड़ी रा जल्ला ॥

(२)

बोल बोल म्हारा हीवड़ा रा जीवड़ा कांई थारी मरजी रे।
पनजी मूंडे बोल ॥
बोल बोल मारी मूँगी रे माया कहीं थारी मरजी रे।
पनजी मूंडे बोल ॥
मुंडे री मोहबतड़ी मती अन तोड़ भंवरजी मूंडे बोल।
हाथ में तरवार भंवर रे, कांधे पाछे खड़ियो[2] रे ॥
पीहरिये जाती रे छेल मारे आडो फिर गयो रे।
भंवरजी मूंडे बोल ॥

१—साफा या पगड़ी के बाँधने का ढंग। २—कोथली = थैला।

बोल बोल मारी मूँगी रे माया कांई थारी मरजी रे।
पनजी मूंडे बोल ॥
हाथ में होकलियो, पनजी मुंडे मांय टूँटी रे।
लोक पड़ियो झक मारो भंवरजी बातां झूठी रे।
पंजी मूंडे बोल ॥
बोल बोल हिवड़ा[1] रा जिवड़ा कांई थारी मरजी रे।
बेली[2] थारी दोस्ती रे बालपणे रो मेलो रे।
पांच रुपिया दूँ रौकड़ी रे रूमाल ले ले रे।
भंवरजी मूँडे बोल ॥
बोल बोल मारी मूँगी रे माया, बोल बोल।
म्हारा हिवड़ा रा जिवड़ा, कांई थारी मरजी रे ॥
पनजी मूँडे बोल ॥
म्हारा भंवरजी सैल सिधारया, कटेक डेरा रेसी रे।
जोधाणा[3] री बावड़ी बिसराम[4] ले सी रे ॥
पनजी मूंडे बोल ॥

ढोलो (३)

ए तो सिरोही रे आड़े घाटे थे मिलिया मारूजी।
हे थारी ठंडी ने झारी रो पांणी पावो रे मारूजी ॥

१—हृदय। २—मित्र। ३—जोधपुर। ४-आराम।

मारी ठंडी ने झारी रो पांणी लागणो गौरादे।
हे लागे छे तो लागण दो थोड़ो पावो रे मारूजी ॥
ऐ तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी।
थे तो पिणघटिये पिणघटिये चाल मती चालो रे॥
मारूजी थांने कोईयक ने चुड़लारी नीज़र लगावसी
मारूजी।
ऐ तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी ॥
थां रे सोरठ[1] री तरवार भाला साल रा मारूजी।
हे तो बाँकड़ली तरवार भाला लोहे रा मारूजी ॥
ऐ तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी।
थांने सिरोही रा राव केवूँ घरे आवो रे मारूजी ॥
थांने जोधाणा रा राव केवूँ घरे आवो रे मारूजी।
ऐ तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी ॥
थांने सोजत रा सिरदार केवूँ घरे आवो रे मारूजी।
थांने पाली रा परधान[2] केवूँ घरे आवो रे मारूजी ॥
थांने सासुजी रा कंवर केवूँ घरे आवो रे मारूजी।
ए तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी।

१—काठियावाड़ प्रांत। २—मुसाहिब।

थांने नागोरी रा छेल केवूँ घरे आवो रे मारूजी ॥
ए तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी ।
थांने बाईजी रा बीरा केवूँ घरे आवो रे मारूजी ॥
थांने कुड़की रा कुंभार केवूँ घरे आवो रे मारूजी ।
ए तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी ॥
हूँ तो केवतड़ी[1] ने लाज मरूँ घरे आवो रे मारूजी ।
ऐ तो मारूजी मतवाला सुन्दर रा सायबा मारूजी ॥

---

(४)

हाँ ए गूजर[2] आठ कूवा नव बावड़ी ए गूजर ।
सोले से पिणीयार मस्तान गूजरी ए ॥
मारे लटपटिये पेचां रो छेलो थे मोयो ।
हां ऐ गूजर रतन कूओ मुख सांकड़ो रे ॥
कोई लांबी लागे डोर-मस्तान गूजरी ।
ऐ मारे बांकड़ली मूँछा रो छेलो थे मोयो ॥

१—कहती हुई । २—गूजर नाम की एक जाति विशेष भी है पर यहाँ पर गूजर या गूजरी से मतलब तीसरी धर्म पत्नि का है ।

हां ऐ गूजर सींचतड़ा महेंदी गई रे।
गयो कमर रो जोर, दावा दांन गूजरी ऐ॥
मारे लागणिये नेणां रो छैलो थे मोयो।
हां ऐ गूजर जल भोड़ल रो बेवड़ो ए गूजर॥
पातलड़ी पिणीयार मस्तान गूजरी ऐ।
मारे मोहनिये मुखड़े रो छैलो थे मोयो॥
हां ऐ गूजर भर बेड़ो भर सांचरी ए गूजर।
सांमा मिलया सैंण मस्तान गूजरी ऐ॥
मारे सांवली सूरत रो छैलो थे मोयो।
हां ऐ गूजर हंसिया पिण बोल्या नही॥
ए गूजर कई एक मन में रीस दावादान गूजरी ऐ।
मारे लागणिये नेणां रो छैलो थे मोयो॥
हां ऐ गूजर किणजी सरायो बेवड़ो ए गूजर।
किणजी सराई धण री चाल, मस्तान गूजरी ए॥
मारे लागणिये नैणां रो छैलो थे मोयो।
हां ए गूजर मूरख सरायो बेवड़ो ए गूजर।
चतुर सराई चाल, मस्तान गूजरी ए दावादान गूजरी॥
मारे बांकड़ली मूछा रो छैलो थे मोयो।

हां ऐ गूजर किणजी बाह्यो[1] कांकरो ए गूजर ॥
किणजी उड़ाई रे गुलाल, मस्तान गूजरी ए।
मारे मोहनी मूरत रो छेलो थे मोयो ॥
हां ऐ गूजर मूर्ख बाह्यो कांकरो ए गूजर।
चतुर उड़ाई गुलाल दावादार गूजरी ऐ ॥
मारे लागणिये नेणां रो छेलो थे मोयो ॥ ॥ ८ ॥

(५)

साले साले रे हां रे हां रे साले साले[2] रे।
नणद बाई रा वीर कांटो साले रे ॥ टेर ॥
मारग मारग बेवता रे वा वा।
उजड़ पड़ गयो पांव ॥ कांटो साले रे ॥
कांटो भागो[3] केर रो रे वा वा।
मचकियो[4] ऐडी मांय ॥ कांटो साले रे० ॥
बाट बटउड़ा दोय जिणां रे–कोई एक।
संदेशो ले तो जाय ॥ कांटो साले रे० ॥
जाय सायबजी ने यूँ कहीजो रे।
वा वा मरवण झोला खाय ॥ कांटों साले रे० ॥

१—फैंका। २—दर्द होना। ३–चुभा। ४ पार होना।

आप जो चढजो घुड़ले रे वाह वा।
नाई ने लीजो साथ ॥ कांटो साले रे० ॥
सूई तो लीजो सार री रे।
वा वा चिंपियो रतन जड़ाव ॥ कांटो० ॥
कूणजी रे कांटो काडसी रे वा वा।
कुणजी रे झेले धण रो पाँव ॥ कांटो० ॥
नाईजी काँटो काडसी रे वा वा।
सायब झेले[1] धण रो पाँव ॥ काँटो० ॥
नाई ने दीजो नव टका जी वा वा।
सायब ने सौ सिर पाव ॥ काँटो० ॥
सासूजी सीरो[2] रांधसी रे।
वा वा नणदल सेके पाँव ॥ काँटो० ॥

---

(६)

ढोलो मारवाड़ रो रूप, दूजो म्हारे दाय[3] न आवे।
हूँ तो थारी दासी, ढोला जन्म जन्म री रे ॥
थे तो मारा मारू ढोलाजी हो सावलियाँ रा सरदार।

१—पकड़ना, सहारा देना। २-हलुआ। ३—पसंद

अलंगा[1] रा खड़िया[2] ढोला सुदा महलाँ आईजो ॥
पोढी धण आण जगावो रे, ढोला मारवाड़ रो रूप ।
एक तो अर्ज मारी दूसरी अर्ज गले री डोडी आण ।
लाख रो बचन कर मान, दूजो ढोला मारीं दाय न आये॥
थे तो मारे आवजो ढोला पावणा, कर ने घुड़लां रो
घमसान ।
मैं तो थाणें सामे ढोला ! आवसां ॥
कर केसरियो बनाव–दूजो ढोलो मारी दाय न आवे ॥

(७) अम्बा

धण बोली अम्बा म्हाने प्यारो लागे रे सरदार ।
पायकर ले मूछांलो सरदार ॥
जननी जणें तो ऐड़ा[3] जण जेहड़ा[4] राण प्रताप ।
अकबर सूतो ओंधकै[5] जांण सिराणें सांप ॥
अकबरया हेकार[6] दागल की सारी दूनी ।
अनदागल असवार हेकज[7] राण प्रतापसी ॥म्हाने०॥
कठीने[8] सूं आयो दिली रो बादशाह रे अम्बा ।

१—ठेठ । २—हाँकना । ३–ऐसा । ४-जैसा । ५—चमके, भयभीत होना । ६—एक वार । ७-एक । ८—कहाँ से ।

कठीने सूं आयो रे सरदार ॥ धण बोली अम्बा० ॥
हिम्मत किमत होय बिन हिमत किमत नही ॥
करे न आदर कोय, रद कागद ज्यों राजिया ॥म्हाने०॥
दल उल्टा दिक्खनी तणा दिली पड़सी तांबा-ताल[1] ॥
या बैड़ी भीड़सी जदां घलसी[2] मोसर[3] घाल ॥धण०॥

(८) शिकार

मगरो[4] छोड़ दे रे बन का राजा, मारियो जासी रे।
जंगल छोड़ दे बन का राजा मारियो जासी रे ॥
शिकारी थारा आसी रे, मगरो छोड़ दे।
पातलिया प्रतापसी नीत री खबरां लावे रे ॥
ई खबरा सुण परथिनाथजी बेगा[5] पधारे रे।
म्हारे आलीजाह बेगा पधारे रे, मगरो छोड़ दे ॥
जंगल उतार दे मगरा छोड़ दे रे, बन का राजा।
मारियो जासी रे-शिकारी थारो आसी रे ॥

(९)

म्हारो अन्नदाता रमें छै शिकार।
हे नणदल ! हरिया डूगरां[6] ॥

१—ताबड़तोड़ । २—गलना, नष्ट होना । ३-अवसर।
४—पथरीली भूमि । ५—जल्दी । ६—पहाड़ ।

म्हारो बादीलो रमे छै शिकार।
गढां गढां रा हरियल बोल्या॥
माधो नाम आधार ॥ ए नणदल० ॥
आप शिकारां चढ गये धण छोड़ी निज धाम।
पति हित के प्रताप से रह्यो न चित आराम॥
म्हारो बादीलो ... ...
कपट त्याग कर कहत हूँ लिपट भयो तन नेह।
शाम सलोने साथ बिन धरी अलोनी देह॥
म्हारो बादीलो रमे छै शिकार।
म्हारो अन्नदाता रमे छै शिकार।
सूरज थने पूज सूं भर मोतियां रो थाल।
घड़ी एक मोड़ा[1] उगजे बादीलो रमे छै शिकार॥

(१०) जलालो

सईयां मोरी रा आयोड़ा सुणीजे रे जलालो[2]।

१—देर से। २—मुगल सम्राट अकबर का पूरा नाम "अबुल फ़तह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह" था। जल्ला, जलाल तथा जलालो इसी जलालुद्दीन शब्द के अपभ्रंश हैं। जो अब पति शब्द के स्थान में प्रयोग होते हैं। कहते हैं

देश में अन चमक्या रे च्यारे[1] ज देश ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ां रा लेसां रे-जलाले रा ।
वारणा अन मोतीड़ा सुं लेवां रे बधाय ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा सुणीजे जलालो ताल रे ।
अन झीणोड़ी[2] रे उड़े गुलाल ॥ ३ ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा सुणीजे रे जलालो ।
डूंगरे अन बोल्या रे झीणा मोर ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा रे सुणीजे जलालो ।
बाग में अन पकीया रे दाड़म[3] दाख ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा रे सुणीजे जलालो ।
बावड़ी अन निरख रही पनिहार ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा रे सुणीजे रे जलालो ।
प्रोलिये[4] अन प्रोलिया रे प्रोल उघाड़ ॥

कि अकबर को संकेत कर यह गीत उस समय रचे गये थे। इस बादशाह का उस समय के राजपूत राजाओं पर बड़ा भीतरी प्रभाव पड़ा था। फ़ारसी तवारीख़ों तथा मारवाड़ी ख्यातों से ज्ञात होता है कि सीसोदिया (गुहिलोत) तथा चौहान दो ही खांपें उसके भीतरी प्रभाव से बची थी। इन बादशाहों का यह प्रभाव क़रीब सं० १७७१ वि० (सम्राट फर्रूखसियर) तक नरेशों पर बना रहा।

१—चारों तरफ़। २-महीन, बारीक, धीमी। ३-अनार। ४-दरबान, द्वारपाल।

सईयां मोरी रे आयोड़ा रे सुणीजे रे जलालो।
चोवटे[1] अन डूंम[2] करे सुभराज[3] ॥ ८ ॥
सईयां मोरी रे आयोड़ा रे सुणीजे रे।
जलालो आंगणे अन दूधे बूठा मेह ॥
सईयां मोरी रे बांकड़ली मूछां रो जलालो।
मने मेल दे अन हीवड़े सु लेवों लगाय ॥
सईयां मोरी रे पटीयों पेचां रो जलालो।
मनें मेल दो अन हीवड़े सु लेवों समझाय ॥

(११) जलाल

हां रे जलाल ऊगण[4] दिसरा रे, करेहलिया करू क्यां रे।
हेकी जोड़ीरा जलाल, ऊगण दिसरा रे करहलिया करूँ
क्यांरे हे जलाल ॥१॥
हांरे जलाल ने म्हेंतो रे जाणयो म्हारो परदेशी।
घरे आयो रे झिलती जोड़ी रा जलाल-म्हेंतो रे ॥
जांख्यो म्हारो परदेशी घरे आयो रे हे जलाल ॥२॥
हांरे जलाल ने मांहेलो रे देश भलो जेसांणो[5] रे।

१—बाज़ार। २—ढोली, नक्कारची। ३—स्वागत। ४—पूर्व दिशा।
५—जेसलमेर राज्य जहां के नरेश रावल हरराज भाटी सं० १६२७ वि० में तथा रावल भीमसिंह सं० १६६२ में सम्राट अकबर तथा जहांगीर के क्रमशः भीतरी प्रभाव में प्रसित हुए।

मिरघानैणी रा जलाल, देशाँ रे माँहेलो रे देश भलो
जेसाणो रे हे जलाल ॥३॥

हाँरे जलाल रुपईयाँ रे माहेलों रे रुपईयो भलो।
अखेसाही[1] रे हँसा हाली रा जलाल-रूपइयाँ रे माँहेलो।
रे रूपइयो भलो अखैशाही रे हे जलाल ॥ ४ ॥

हाँरे जलाल रे जाताँ रे माँहेली रे जात भली भटीयाणी रे
वोपरवारी रा जलाल, नाराँ रे माँहेली रे नार भली
भटीयाँणी रे हे जलाल ॥५॥

हाँ रे जलाल पुरुसों रे माँहेलो रे पूरुष भलो राठोड़ा रे।
मीठी बोली रा जलाल, पूरुषो रे माँहेलो रे पूरुश।
भलो राठोड़ा रे हे जलाल ॥ ६ ॥

हाँ रे जलाल रे छीटाँ रे माँहेली रे छींट भली।
मुलतानी रे-बड़का[2] बोली रा जलाल, छीटाँ रे माँयली ॥
रे छींट भली मुलताँनो रे जलाल ॥ ७ ॥

हाँ रे जलाल रे रातेत्युं धण रो रे पेटड़लो भल दूख्यो रे।
हेकी जोड़ी रा जलाल, राते तो धणरा रे पेटड़लो भल
दूख्यो रे हे जलाल ॥ ८ ॥

१—जेसलमेर के राजा रावल अखैसिंह भाटी ने ही सं० १८३१ वि० में सिक्का चलाया। इसने सं० १७७६ वि० से सं० १८१८ वि० तक ३६ वर्ष राज किया। २ मुंहफट।

हाँ रे जलाल रे कूवड़ियो रा रे, ऊना रे ठाढा पाणी रे।
झिलती जोड़ी रा जलाल, कूवड़ीयो रा रे ऊना रे॥
ठाढा पाणी रे हे जलाल॥
हाँ रे जलाल ऊना[1] तो पाँणी माजी सौकड़ली[2]।
ने पासाँ रे मिरघानेणी रा जलाल, ऊना तो पाँणी
मांजी सौकड़ली ने पांसां रे हे जलाल॥
हां रे जलाल ठंडा तो पांणी मांजे साहिब जी ने पांसां रे।
पांसां रे हंसा हाली रा जलाल, ठंढा तो पाणी मांजे॥
साहिबजी ने पांसां रे हे जलाल।
हांरे जलाल रे राते तो धणरी रे आंखड़ली भली॥
दूखीरे वो पर वारी रा जलाल, राते तो धणरी रे।
आंखड़ली भल दूखी रे हे जलाल॥
हांरे जलाल रे थ्हेतो रे म्हारी रे सारड़ली[3] नही पूछी रे।
मीठी बोली रा जलाल, थेतो रे म्हारी रे सारड़ली नही
पूछी रे हे जलाल॥ १३॥

कुर्जां

प्रियतम की प्रतीक्षा में कुर्जां के प्रति गाया हुवा गीतः—

१-गर्म। २—सौत। ३—सँभाल, कुशल समाचार।

ऊँची तो उड़ती कुरजड़ी ए कुरजां एक संदेहो[1] ले चाल।
जाय ने ढोला मारूजी ने इयूँ कहीजे ए ढोला॥
मारवण ने नहीं भावे[2] धान।
कुरजण—खाई जो थे खारक[3] ने खोपरा[4] ओ गोरादे॥
पीजो कड़ियो[5] सांडियां[6] रो दूध।
गोरादे—खारा तो लागे खारक खोपरा ओ कुरजां॥
मिचलो[7] तो लागे है कड़ियो दूध।
कुरजण—ढोलाजी सुकाड़े है धोतियाँ ए गोरा दें॥
मारवण[8] उडाड़े है काग॥

ढोला-मारवण

ये एक विरह सूचक गीत है जिस में नायका अपने योवनावस्था में अपने पति की याद करती है और उसे घर लौटने की प्रार्थना करती है। इस गीत को महाकवि कालिदास के मेघदूत की छाया कह सक्ते हैं। और ये बड़े चाव से गाया जाता है। ढोला और मारवण का विवाह बचपन में होना, ढोला का मारवण को भूल जाना और दूसरा विवाह कर लेना। बाद में मारवण का अपने पति ढोलाजी के पास संदेश पहोंचाना। फिर पति पत्नि का मिलाप आदि का वर्णन बड़ी सरसता से दिया हुआ है।

१–संदेश। २–चाहना। ३–छुआरा। ४–नारयल। ५–ताजा गर्म। ६–ऊँटनी। ७–जी मचलाने वाला। ८–नाम विशेष, मारवाड़ी स्त्री।

मारग जावतो बटाउड़ा[1] रे सुन मारी बात।
मारवण तणा[2] ए ओलम्बा[3] जाय ढोलाजी ने॥
कहजे रे-थारी मारवण पाकी बोर जिऊँ।
ढोला रसड़ो चाकण घरे आव-करहला धीमा चालो राज॥
मारग जावतो ओटीड़ा रे सुन मारी बात।
मारवण तणा ए ओलंबा जाय ढोलाजी कहीजे रे॥
थारी मारवण पाकी आंबा जियूँ ढोला-रसड़ो।
घोटण घर आव-करहला धीमा चालो राज॥
मारग जांवतो ओटिड़ा रे सुन मारी बात।
मरवण तणां ए ओलंबा जाय ढोलाजी कहीजे रे॥
थारी मारवण हस्ती हो रही ढोला आंकस लई।
घरे आव-करहला धीमा चालो राज॥
मारग जावतो ओटिड़ा रे सुन मारी बात।
मारबण तणां ए ओलंबा जाय ढोलाजी कहीजे रे॥
थारी मारवण बुड़लो होय गई ढोला! चाबक।
लई घरे आव-करहला धीमा चालो राज॥

\+ + +

कुरजां तू मारी बेहनड़ी[4] ए सामल[5] मारी बात।

१—बटोही, यात्री। २—प्रति, तरफ़। ३—उलहाना।
४—बहिन। ५—सुनना।

ढोला तणां ओलंबा लिखूँ किसड़े हाथ ॥करहला०॥
कुरजां के सुण सुन्दरी ए सांमल मारी बात।
ढोला तणां ए ओलंबा मारवण लिख मारी॥
डावी पांक—कुरजां धीमा चालो राज।
मारवण बैठी महल में रे कुरजां पसारी पांख॥
ढोला तणां ए ओलंबा मारवण लिखिया।
डावी पांख—कुरजां धीमा चालो राज।
ढोलाजी बैठा मेहल में रे कुरजां पसारी पांख॥
मारवण तणां ए ओलंबा कांई बांचिया।
डावी पांख-कुरजां धीमा चालो राज॥
बाड़ा तो भरियो करहला रे जिण मांय आछा सौय।
सौयां तो मायला दस भला रे-दसां मायलो एक॥
करहलां तू मारा बापरो रे सामल मारी बात।
मत जा ढोलाजी रे सासरे निरू[1] नागर बेल॥
करहलो केवे सुण सुन्दरी ए सामल मारी बात।
जासां ढोलाजी रे सासरे कांई चरसा[2] नागर बेल॥
ढोलाजी केवे सुण करहला रे सामल मारी बात।
सांज पड़े दिन आतमें मारी मारवण मेल[3] नी आज॥
करहलो[4] केवे सुणों ढोला सामल मारी बात।

१—डालना। २—चरना। ३—मिलाना। ४—ऊँट।

काडो पग रो ताकलो[1] थांरी मारवण मेलू[2] आज।
ढोलाजी करहलो थांबयो रे झेंक्यो[3] रेतुड़ रे मांय॥
काड्यो डावा पगरो ताकलो कांई पूगो छिनरे मांय।
पाणी री पिणीयारियां ए सुणज्यो बात-ढोलाजी॥
केवे सुन्दरी मारी मारवण मोय ओ लखाय।
मैं तो आयो उणरे काज, मारो नाजुक जीव घबराय॥
हंस हंस केवे सुन्दरी रे सुणो ढोलाजी बात।
थारे कारण सुन्दरी कांई तज दियो सिणगार॥
ओरां रे काजल टीकियां रे थारी मारवण लूखा नेण।
ओरां रे ओडण चूनड़ी थारी मारवण मेला वेष॥
नाक झरे नस नीसरे थारी मारवण * छूटा केश॥क०॥

१—लोहे का कीला। २—मिला देना। ३—नीचे झुकाना।

* कहते हैं कि विक्रम की दसवीं सदी (?) में नरवर (ग्वालियर में) के कछवाहा राजा नल के राजकुमार ढोला (कहीं दुलहराय-ढोलाराय) का विवाह पूँगल (बीकानेर राज्य में) के भाटी राजा की कन्या मारवण के साथ बचपन में हुआ था। जब ढोला बड़ा हुआ तब पूँगल नगर के दूर होने से राजा नल ने उसे उज्जेन के राजा भीमसेन (?) की कन्या मालवणी ब्याह दी और मारणी के साथ हुए विवाह को छुपा रक्खा। उधर मारवण बड़ी हुई तो उसके पिता ने कई दूत नरवर को

काछबा

[चांदा थारी निरमल रात सैइयां म्हारी हो]

यह एक प्रेमी और प्रेमिका के आपस की स्नेह कहानी है। इसमें प्रेम विवाह नहीं होने से और दूसरे लोगों के बाधा डालने पर क्या क्या कष्ट होते हैं। इस को इस गीत में बतलाया गया है। काछबा एक नौजवान सुन्दर वर होते हुए भी एक स्त्री के बहकाने से कन्या का उसके साथ शादी से इन्कार करना। बाद में सत्यता प्रकट होने पर पश्चाताप करना और अपने मनोनीत वर के लिये कन्या काल में ही सती तक होने का संकल्प कर लेना इत्यादि भाव इसमें दर्शाये गये हैं। यह गीत राजपूत सरदारों के मजलिसों में बड़े चाव से गाया जाता है। गीत इस प्रकार हैः—

भेजे परंतु वे मालवणी के षड़यंत्र से मार्ग में ही मारे जाते और ढोला के पास पहोंचने नहीं पाते। अन्त में राजा ने एक ढाढी को नरवर भेजा जो मौके बमौके गा बजा कर जैसे तेसे ढोला के पास पहोंच कर उसे पूँगल चलने के लिये तयार किया। अनेक विघ्नों को पार करते राजकुमार ढोला पूँगल से अपनी प्रथम धर्मपत्नि को लेकर वापिस नरवर पहोंचा। राजपूताने में इस कथा (ढोला मारवण की बात) का बहुत प्रचार है और है भी ये बड़ी रोचक व विस्तृत। इसे कवि कल्लोल ने सं० १६०३ वि० में लिखा और जैन यति कुशलचंद ने जैसलमेर के राजकुमार हरराज भाटी (पश्चात नरेश सं० १६१८-४५ वि०) के विनोदार्थ सं० १६०७ में उसे पद्य में अनुवाद किया था। विशेष वृतांत के लिये हमारी सम्पादित "ढोला मारवण -की बात" नामक सचित्र पुस्तक पढ़िये। दाम ।) पता—

हिन्दी साहित्य मन्दिर जोधपुर।

चांदा थारी निरमल रात सैइयां म्हारी हो।
चांदा थारी निरमल रात नणदल ने भोजाई॥
सैलां सांचरी-फिर फिर निरखियो है बाग।
दातण तो तोड़ियो है काची केल रो जी म्हारा राज॥
घस घस धोया है पग, रगड़ रगड़ धोई॥
ऐडिया है जी म्हारा राज।
देखो भाभज कांई जिनावर जाय—भाभज॥
मारी हे देखो-देखो भाभज कांई जिनावर जाय।
मोरां पर मंडिया है जिण रे मांडणा[२] जी म्हारा राज॥
ओ है बाईजी थारोड़ा भरतार, जल रो जनावर।
राणो कांछवोजी—जल रो जीव म्हारा राज॥
समद्रांरां सूखा नीर ए सुन्दर समन्द्रां रा।
सूखा नीर-काछवियो कूद कूए पड़े जी॥
काछविये री जात कुजात राणा काछवाजी रे।
काछविये री जात कुजात, जूवां ज्यों हुलरावे
काछविया रो मोटो पेट ए सुन्दर काछविया रो॥
मोटोजी पेट-माटी ने भखे राणों काछवोजी।

१—भोजाई-भावज। २—चित्रकारी।

परणिजो हो बाइजी माराड़ो थे वीर बाईजी म्हारा हो ॥
परणो बाईजी म्हारोड़ो वीर, कोटा ने बूँदी रो।
राणो राजवी कहीजे रे म्हारा राज ॥
आया बिड़ला[1] पाछा हे फेर माता मारी ए।
आया बिड़ला पाछा ए फेर परतन[2] परणू ॥
राणों काछवो जी—म्हारा राज ॥
कुण थने बोल्या ए बोल बाई मारी हे।
कुण थने बोल्या है बोल, कुण थने चुड़ला वाली ॥
मोसो बोलियो जी म्हारा राज।
भाभज म्हाने बोल्या है बोल, माता म्हारी ए।
भाभज मने बोल्या ए बोल उण चुड़ला वाली।
मोसों बोलियो जी म्हारा राज।
किठड़े रे घुरया[3] रे नीसांण,[4] परण पधारया रे।
राणो काछबो-काछबो रे म्हारा राज ॥
आई आई काछविया री जांन[5] सैंयां म्हारी ओ।
आई आई काछविया री जांन, केसर ने किस्तुरी ॥
रा डब्बा—खोलिया जी म्हारा राज।

१—पान, सगाई यानी वागदान करने के लिये वर पक्ष की ओर से आये हुए नागरबेल का पान बीड़ा। २—हरगिज़। ३—बजना। ४—ढोल नगारा। ५—बरात।

ऊँची चढ ने जोय[1] दासी म्हारी हे ऊँची चढ नै ॥
जोय-केसर ने किस्तुरी रा डाबा कुण खोलिया ॥जी०॥
आई हो बाईसा काछविया री जांन, बाईजी म्हारा।
हो-आई बाईसा काछविया री जान, बाईजी म्हारा॥
केसर तो रलाई[2] जाजी[3] नीर में जी म्हारा राज।
हालो रे सईयाँ जोवण जांय, राणा काछबारे॥
हालो रे सईयाँ जोवण जाँय-अलबेलो[4] आयो।
सुणीजे रे देश देश में म्हारा राज॥
ढाढीड़ा तूँ धरम रो बीर मोहीने ओलखाय[5]।
झिलती जोड़ी रो, जोड़ी रो रे म्हारा राज॥
बिजोड़ा[6] घोड़े असवार ओ बाईसा बिजा घुड़ले असवार
हसत्यां[7] रे होदे राणे काछबो जी म्हारा राज॥
राणो काछवो, काछवो रे म्हारा राज।
ओरां रे मुर्की[8] कान ओ बाईसा ओरां रे।
मुर्की कान-ऊजले तो मोती राणो काछबो॥
ओरां रे बांधण पाग ए सुन्दर ओरां रे।
बाँधण पाग-काछविया रे बंको सेवरो ए॥

१—देखना। २—फैलाई, डाली। ३—बहुत सा।
४—शौकिन, छेला। ५—पहिचानना। ६—दूसरे। ७—हाथी।
८—कान में पहनने की सोने की बाली।

काछबिया सामों जोय रे काछबिया रे।
सामो जी जोय-कुंवारी काठ बले रे म्हारा राज॥
मारो नाम हमीर ए सुन्दर म्हारो ए नाम।
हमीर-भुआजी हुलरायो[1] राणो काछबो जी॥
परणियाँ वा तो दोष ए सुंदर म्हारा राज।
परणियाँ हुवा तो जी दोष कुवांरां ने दोष नहीं॥
जावतां ने परणियाँ गोर ए सुंदर-जावतां।
आवतां ने परणिया सीसोदणी म्हारां राज॥
मरज्यो ए भावज थारोड़ो बीर, राणा काछबाजी रे।
मरजो भाभज थारो बीर-जोड़ी रो वर टाल्यो॥
राणा काछबो रे म्हारा राज।

अमरसिंह राठोड़ (जांगड़ा गीत)

[अमर आगरे रे अखियारात भड़ जस जीपन भारी]

ये वीर रस का गीत प्रायः ढोली लोग गाते हैं। इसमें नागोर के प्रसिद्ध राव अमरसिंह राठोड़ के हाथ से शाहजहाँ के भरे दरबार में बख्शी सलावतखाँ का मारा जाना और उसकी बेगम का रात दिन विलाप करना बतलाया गया है :—

१—पालन पोषण करना, बालक को झूले में झूलाते हुए उसे रिजाने का गीत गाना।

अमर आगरे रे अखियारात[1] उबारी भड़ जस जीपन[2] भारी।
पंज[3] हजारी मुगल पाड़ियो कमधज तणी कटारी।
झूरर झूरर जुरे मिरगनेनी मेह तणी पर मोरां[4] ॥
जोगनपुरे[5] दीये शाहजादी घूमर उपर घोरां[6]।
दस दस लार खवासी दासी चम्पक वरण ओडीया चीर॥
सीस[7] बदनी नाखे सीसकारा मारू[8] कहां हमारा मीर।
आस अलूज गांख[9] चढ उबी टोयां[10] काजल टीबी।
गलती रात पुकारे गौरी बाबईया[11] जीभ बीबी ॥

काती

[कातो आयो मेड़ते आयो ढाल भरीज]

यह विवाह के दिनों का गीत है जो रात में दुल्हा के बानें बैठने के समय में गाया जाता है।

कातो[12] आयो मेड़ते आयो ढाल भरीज।
आयो कोड[13] करीज, उतरीयो बड़[14] हेट[15] ॥

१—प्रसिद्ध। २—यश पाना। ३—पांच हज़ार मनसब का पदाधिकारी। ४—पानी की मोरियां। ५—दिल्ली। ६—कबर। ७—शीतल, चमकता हुआ। ८—अमरसिंह या मारवाड़ियो। ९—झरोखा। १०—लगाना। ११—पपैया। १२ पान में खाने का कत्था। १३—प्यार।१४—बरगद का वृक्ष। १५—नीचे।

मीठी ने बोली रा मोहनजी * रे जावां राज घरे।
जावां जावां कई करो ए सईयां बेठो जाजम ढाल ॥
जीमो चावल दाल, लाडूड़ा री छाब मंगाय दूँ।
जीमतड़ा घर जाय ॥ कातो० ॥
केसरिये रा कोड करए ने आईजो राज घरे ॥

सेवरो (सहरा)

[सईयां देखो ए उमराव बन्ने रो सेवरो]

ये गीत दुलहा के सेवरा (सहरा-मुकट) की प्रशंसा में है।

मारे पाँच कली रो सेवरो बिचे लटके मोतिड़ा री लूंब।
सयां देखो ए उमराव बन्ने रो सेवरो ॥
इए सेवरिये भावोसा लुलरया लुलरया।
ओ सुखवीरजी रा शीस-सयां देखो ए० ॥

घोड़ी

[घोड़ी गढां सूं उतरी जाजर रे झएकार]

विवाह हो जाने पर वर के वापस अपने घर लौटने पर यह गीत गाया जाता है :—

* इसी तरह से अपने घर वालों के नाम ले ले कर इसे फिर गाते हैं।

घोड़ी गढ़ा सूं उतरी जाजर रे भ्रणकार।
घोड़ी जव चरे चरे रे, लीलोड़ा[1] नालेर[2] घोड़ी जव चरे[3] ॥
मुखीयड़लो मोतियां जड़यो मेहदी रे राता केस।
पूंठ पिलाण सोवन जड़यो, लालां जड़ी रे लगाम ॥
पाँव धर रघुवीरजी * चडे रे परणीजे राजकंवार।
परण गुरण घर आविया रे वारा माताजी ॥
हिवड़े लगाय–भूआ[4] बाई करे आरती रे बेनड़ बाई।
बीर बधाय-घोड़ी गढासूँ उतरी जाजर रे भ्रणकार ॥

गोरबंधियो

[खारा रे समंदा सू कोडा मंगाया, जूनेगढ गूथांया रे]

मालानी परगने की एक घांचण (ग्वालिन) अपने धर्म भाई बाड़मेरा राठोड़ तख्तसिंह के विवाह में उपयोग करने के लिये एक गोरबंद (ऊँट के गले का हार) बनाया। वह चोरा गया उसी के वियोग में यह गीत हैः—

खारा रे समंदा सुं कोडा मंगाया, जूनेगढ गूथांया रे।
मारो गोरबंद लूँबालो ॥

१—हरा, ताजा। २—नारयल। ३—जौ। ४—फूफी, बुआ।
* इस तरह से वर के तमाम बड़े बूढ़ों का नाम लेते हैं।

असी रे कोडा तू उजला में, हड़बी काच बीड़ाया[1] रे।
मारो गोरबंद लुंबालो ॥
असी लड़ा रो मारो गोरबंधियो ने पची लडां री लूबां रे।
मारो गोरबंद लूंबालो ॥
जोधाणां सूं रेशम मंगायो, गोरबंधियो गूँथायो रे।
मारो गोरबंद लूंबा लो ॥
गोरबंधियो गूँथावतां मने महीना लागा तेरेह रे।
मारो गोरबंद लूंबा लो ॥
उमरकोट मांजो लियो गोरबंध, खारोड़ीज खाबड़[2] पुगायो[3] रे। मारो गोरबंद चोराणो ॥
जेसलमेर ता पागीड़ा[4] तेड़ायो ओ तो पागलिया पानी में काडे रे।
मारो गोरबंध चोराणो ॥
बीरा तखतीगां री जान में मारो भूरियो अंडोलो[5] चाले रे
मारो गोरबंध बलतो कर ॥
ईयां भंवर री जान में मारो भूरियो न चरतो चारो रे।
मारो गोरबंध बलतो[6] कर ॥

१-जड़ाना। २-जोधपुर के जिला शिव का एक विशेष भाग। ३—पहोंचाया। ४-पांवों की खोज लगाने वाला, पागी। ५—श्रृङ्गार शुन्य। ६—लौटाना, पीछा देना।

इण गोरबंधिये रे कारणे मैं तो नव दिन निरणी[1] रहगई रे

मारो गोरबंध वलतो कर ॥

गोरबंधियो गूथावतां मारी आंखिया हीण पड़ गई रे।

म्हारो गोरबंध वलतो कर ॥

ईयें गोरबंधिये रे कारण मैं तो झूर झूर पींजर हो गई रे।

मारो गोरबंध वलतो कर ॥

देराणी जेठाणी झगड़ो लागे देवरियो मनावण जावे रे।

मारो गोरबंध वलतो कर ॥

इण गोरबंधिये रे कारणे, मारी नणदल मोसो[2] देवे रे।

मारो गोरबंध वलतो कर ॥

घुड़लो

[घुड़लो घूमेला जी घूमेला]

यह गीत राजपूताने के सुप्रसिद्ध "गणगोरियाँ के मेलों" के दिनों चैत्र में गाया जाता है। चैत्र बदि ८ को संध्या समय स्त्रियाँ टोली बना कर कुम्भहार के घर पर जाती हैं[3] और वहाँ से एक वहुत से छेदों वाली छोटी मटकी लाती हैं। जिसके

१—भूखी। २—ताना। ३—ज्ञात होता है कि चैत्र बदि ८ से ही घुड़लाखाँ के साथ युद्ध छिड़ा होगा।

बीच में एक जलता हुआ दीपक रख कर "घुड़ल्यो घूमेला" गीत गाती हुई घर लौटती हैं और फिर उसी गीत को गाती हुई अपने कुटुम्बियों के घर पर जाती हैं। यह एक ऐतिहासिक घटना का यादगार है।

सं० १५४८ वि० के चैत्र बदि १ शुक्रवार (ता० २५-२-१४९१ ई०) की बात है कि मारवाड़ के गाँव कोसाणां (पीपाड़ के पास) की बहुत सी क्षत्रिय कन्याएँ बस्ती से बाहर तालाब पर गौरी पूजनार्थ गई थीं। उनमें से १४० को पकड़ कर अजमेर का सूबेदार मल्लूखाँ ले भागा। ख़बर पाकर जोधपुर नरेश राव सातलजी राठोड़ ने उसका पीछा किया और उन मारवाड़ी लड़कियों के साथ कई अमीर-जादियों को भी मय सेनापति घडुलाखां की रूपवती कन्या के ले आये। इस युद्ध में घुड़लेखां रावजी के सेनापति सारंगजी खीची के तीरों से छिद कर मारा गया। खीची सरदार ने घडूले का तीरों से छिदा हुआ सिर काट कर उन १४० तीजणियों के सुपुर्द किया। यह कन्याएँ इस शिर को लेकर सारे गाँव में घूमीं। तुर्क के इन दीन अबलाओं को कष्ट देने और उनके परिणाम की यादगार में ये मेला मारवाड़ में भरने लगा जो चैत्र सुदि ३ तक लगता है। इसी दिन उस घुड़ले (मटका) को तलवार से खंडित करते हैं। क्योंकि सूबेदार मल्लूखाँ के साथ अन्तिम युद्ध चैत्र सुदि ३ रविवार (ई० स० १४९१ ता० १३ मार्च) को हुआ था। यद्यपि रणक्षेत्र राठोड़ों के हाथ रहा परंतु जोधपुर नरेश राव सातलजी घावों

से इतने भरपूर हो गये कि उस दिन को रात को ही वे मर गये। गीत इस प्रकार है:—

घुड़लो घूमेला जी घूमेला, घूड़ले रे बांधो सूत।
घुड़लो घूमेला, सवागण बाहरे आय॥
घुड़लो घूमेला जी घूमेला॥
प्रतापजी रे जायो पूत घुड़लो घूमेला जी घूमेला।
सवागण बारे आय, घुड़लो घूमेला जी घूमेला॥
तेल बले घी लाव, घुड़लो घूमेला जी घूमेला।
मोत्यां रा आखा लाव घुडलो घूमेला जी घूमेला॥

---

(२)

घुड़लो ए सोपारियां छायो, तारां छाई रात।
जोधाणो गज मोत्यां छायो उमेदसिंह सा रो राज॥
मैं घुड़ले री तिजणियां, ओ बीरा थे छो मोटा राव।
मारो घुड़लो, राज बखाण्यो राठोड़ी रजपूत॥
राठोड़ी रजपूत बखाण्यो, पाली रा प्रधान।
पाली रा प्रधान बखाण्यो, सोजत रा सिरदार॥
सोजत रा सिरदार बखाण्यो, जेतारण रा जाट।
जेतारण रा जाट बखाण्यों, कुड़की रा कुम्भार॥

(३)

ए ऊंची मेड़ी उजली रूण-जुणीयो[1] ले ।
बाजणियां किवांड़ जाजो[2] मरवो[3] ले ॥ टेर ॥
एं मांय पोढिया साहेबजी रुण जुणीयो ले ।
वा री मरवण ढोले वाव[4] जाजो मरवो ले ॥ १ ॥
ऐ ढोल ढोलन्ता यूं केयो रुण जुणीयो ले ।
सायब लाल चूड़ो पेराय, जाजो मरवो ले ॥
ए लाल चूड़ो थारी बेन ने रुण जुणीयो ले ।
गोरी थांने नवसर हार जाजो मरवो ले ॥
इतरो केयो ने गोरी रूसणीं रुण जुणियो ले ।
वे दोड़या पीयर जाय, जाजो मरवो ले ॥
एं लारे देवरजी दोड़िया रुण जुणीयो ले ।
भाभी मारे क्यां सूं घर आय, जाजो मरवो ले ॥
थारे मनांयां देवर नहीं मॉनू रुण जुणीयो ले ।
थारे बडोड़ा बीरासा ने मेल जाजो मरवो ले ॥
ए झटपट बाँधी पागड़ी रुण जुणयो ले ।
ऐ दोड़या बागां जाय जाजो मरवो ले ॥

१—बालकों के खेलने का खिलोना विशेष, पंखा ।
२—सुन्दर । ३—सुगन्धी पोधा विशेष ।
४—ढोले वाव=हवा करना, पंखा करना ।

लीली तोड़ी कांबड़ी[1] रुण जुणीयो ले।
सड़काई[2] दोयन चार जाजो मरवो ले ॥ ८ ॥
फेर करोला रूसणो, रुणजुणियो ले।
कोई फेर भागोला पीर[3] जाजो मरवो ले ॥ ६ ॥
कदेयन जांऊ पीया, बाप रे रुण जुणीयो ले।
मने राज रे गले री डोडी आण,[4] जाजो मरवो ले ॥

—*—

आखातीज के गीत

[कोरी तो कुलड़ी राज, दई ए जमायो]

राजपूताने के सार्वजनिक त्योहारों में आखातीज (अक्षय तृतीया-वैशाख सुदि ३) का त्योंहार विशेष भाव से मनाया जाता है। इस का जैसा प्रचार राजपूताने में है वैसा अन्यत्र नहीं है। यही एक ऐसा त्योहार है जिसमें राजा और प्रजा का बर्ताव भाई बान्धवों का सा देखा जाता है। इस दिन राजा, सरदार, उमराव अपने हाथों से प्रत्येक नौकर-चाकर, किसान और छोटे बड़े सभी लोगों को अफ़ीम की मनुहार करते हैं। इस बात को दोनों ही अपने वास्ते वर्ष भर का शुभ शकुन समझते हैं। इसी रोज़ अगले वर्ष के शकुन लिये जाते हैं। और इस दिन ही लड़कियां टोली बना कर और लड़कियों में से एक को तो दुल्हा व दूसरी को दुल्हन का स्वांग भरा कर घर घर मंगलाचरण करती फिरती हैं। वह गीत इस प्रकार है:—

१—लकड़ी, बेंत। २—पीटना। ३—मायका, पीहर।
४—डेढ़ी या अधिक सोगध।

* कोरी तो कुलड़ी राज, दई ए जमायो ।
सासू रो जायो राज, इमरत बोले ॥
बोले बोलावे राज कोयल बोले ।
बोले बोले मारे सुसरोजी री पोल ।
केसरियो राज इमरत बोले ॥

(२)

इस त्योहार पर जिन लड़कियों को अपनी सहेलियों के साथ खेलने का मौक़ा नहीं मिलता है वे इस प्रकार खेद प्रकट करती हुई अपने सुसराल में किये हुवे काम धन्धे का वर्णन करती हैं:—

आई आई ए मां ए मोरी आखा ए तीज ।
मने ने मेली मां सास रे,
साथ सहेलीया मां ए मोरी रमण जा ।
माने भोलायो सासू सोवणो,
सोयो सोयो ए मां ए मोरी छाज दो छाज ।
अदमण सोई मां बाजरी,
पीस्यो पीस्यो ए मां ए मोरी सेर दो सेर ।
अदमण पीसी मां बाजरी,

---

* इस में गृहस्थाश्रम व गर्भाधान संस्कार की शिक्षा गुप्त रूप से लड़कियों को देने का आशय है ।

पोयी पोयी ए मां ए मोरी रोटयां री जेठ।
एकज पोयो बाटीयो,
नेत्या नेत्या ए मां ए मोरी देवर जेठ।
एकज नेत्यो नणदोई,
माँजी माँजी ऐ माँ ऐ मोरी थाल्याँ री जेठ।
एक माँज्यो बाठको॥

बच्चों के गीत

[दीजो श्रो नैनीरी धाय, नैनी ने बुलाय०]

मारवाड़ की छोटी छोटी लड़कियों के गीत भी बड़े सुन्दर हैं। नमूना देखिये:—

दीजो श्रो नैनी री धाय, नैनी ने बुलाय।
एक दीजो लात री, श्रा पड़ी गुलाचां खाय॥
कीकर देऊँ बाई लातरी, म्हारे मोत्यां बिचली लाल।
खांड़ियो खोपरो चिणां के री दाल॥

छोटी छोटी लड़कियाँ "फूँदी" लगाती हुई गाती हैं:—

फूंदी[1] रो फड़ाको[2]।
जीयां बाई रो काको॥

छोटे छोटे बच्चों के खेलों में जो तुकबन्दी तोतली ज़बान में कही जाती है उनके नमूने:—

१—दो लड़कियों का एक दूसरे के दोनों हाथ पकड़ कर गोल चकर में फिरने का खेल। २—फटकारा।

(१)

कान्या मान्या कुर्रर्र ।
जाऊँ जोधपुरर्र ॥
लाऊँ कबूतरर्र ।
उड़ाय देऊँ फर्रर्र ॥

(२)

अतनी पतनी पीपलिये रा पान ।
अपड़ साथण इणरो कान ॥

(३)

[बरसात के समय]

मेह बाबा आजा ।
घी ने रोटी खाजा ॥
आयो बाबो परदेशी ।
अबे जमानो कर देसी ॥
ढांकणी में ढोकलो[1] ।
मेह बाबो मोकलो[2] ॥

(४)

म्हारी म्हारी छालियां[3] ने दूधल दलियो पाऊँ ।
न्हारियो[4] आवे तो लात री मचकाऊँ ॥

॥ समाप्त ॥

१—रोटी विशेष । २—अधिक । ३—बकरियां । ४—सिंह ।

राग रागनियों के नाम

छतीसूँ राग—छः राग और तीस रागनियाँ।

छः राग जैसे—

भैरव मेघ मल्लारो दीपको माल कोशकः।
श्रीरागश्चापि हिंदोलो रागा षट् संप्रकीर्तिताः॥

तीस रागनियाँ यथा—

भैरवी राग की ५—भैरवी, पिंगला, शंकी, लीलावती, आगरी।
मेघ मल्लार की ५—चित्रा, जयजयवंती, विचित्रा, व्रजमल्लारी, अंधकारी।

दीपक राग की ५—कंचुकी, मंजरी, तोड़ी, गुर्जरी, शावरी।
मालकोश की ५—गांधारी, वेद गांछारी, धन्याश्री, स्वर्मणि, गुणकरी।

श्री राग की ५—वैराटी, कर्णाटी, गौरी, गौरावती, चन्द्रकला।
हिंदोल की ५—वसंती, परजी, हेरी, तैलंगी, सुन्दरी।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१६	साता रे	सात
६	१६	सहेल्यां रे	सहेल्यां रो
१०	१	पाणिऐ	हिलमिल
१०	३	रे	+
१०	१७	पीछे	+
१२	१०	भरथार	भरतार
१६	५	जेदव	जेदेव
२१	५	राखानो	राखोनी
२२	१६	रौ	रो
२४	६	गतपति	गत पति
२५	४	ये	यह
२६	१४	आली जो	आलीजो
२६	८	आंगलियाँ	आंगलियाँ री
२६	६	ढोला	ढोला रेख
२६	१६	इकली	एकली
३०	८	अंगन	आंगन
३०	६	बित	बीत
३०	११	पूर्व	पूरब
३८	६	ओणंग२	ओलंग२
३६	१६	साइना	साईना
३६	१७	सीकड़ली	सीखड़ली
४०	१	हीवड़ो	हिवड़ो
४०	१	उबके	ऊबके
४०	१४	चाकरणी	चाकरड़ी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१	६	भांजा	मारा
४१	१३	बे नड़ली	बेनड़लीं
४२	११	मारी	+
४२	१३	देराणीं	देराणी हे
४२	१६	तरह	तरफ
४२	१४	ननदोई	ननदोइ हे
४३	३	मारा	+
४३	६	बहुंज	बहुजी
४६	३	यारी	वारी
४६	३	सैवां	सैयाँ
४६	१२	पेहराउ	पैहराऊं
४७	१३	नीवार	निवार
४७	१७	नीवारं	निवार
४६	६	कीकूं	कूंकूं
४६	६	धतावो	घलावो
४६	१६	के वड़ो	केवड़ो
५०	६	गांधीणो	गांधीड़ो
५०	६	मड़दन	मरदन
५२	४	गोढ	गोठ
५४	१०	सैातीया	सैातिया
५४	१५	जलां	जला
५४	१६	जलां	जला
५५	३	जोधाणां	जोधाणो
५८	८	नां	ने
५६	१	नेवड़ों नां	नेणां ने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	१	नेवड़ोनां	नेणांने ने
५६	५	वेसण	वेसर
५६	६	वसण	वेसर
५६	६	नां	ने
६१	१४	मिरध्यानेणी	मिरगानेणी
६३	११	हरि रा	हरिया
६३	११	रूखन	रूंख ने
६४	१	वई	बाई
६४	२	सोट की	सीटकी
६४	३	खिनाये	खीनाय
६४	६	परणधां	धरणा सां
६४	६	भैणड़ी	भैनड़ी
६४	६	वैठया	वैठ्या
६४	६	तख्त	तख़त
६५	७	बाप रणया	वा पररणयाँ
६५	८	लोढिये	लोड़िये
६५	१४	रा	रे
६८	५	कपूत	सपूत
६८	६	धड़ुके	धड़ूके
७८	२	अनख	अखन
८२	२	नैनजी	नैणजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९५	१३	फल्का	फलका
९९	६	भजड़	बजर
९९	१०	बजड़	बजर
१००	८	कंवर	कंवरजी
१००	८	बजड़	बजर
१०२	१०	प्रित	प्रीत
१०४	१५	मरा	मरण
११२	७	रूच	रुच
११२	८	रूच	रुच
११३	८	धूमर	घूमर
११९	११	धड़ायजो	घड़ायजो
१२०	१७	हेथ	हेत
१२१	११	गासियो	घासियो
१२२	१३	भाला	बहाला
१२२	१६	हस्ति	हस्ती
१२२	१६	बगसे	बगसे हो
१२२	१६	हस्ति	हसती
१२७	१७	भींत	भीत
१३२	५	सवाये	सवावे
१३२	९	भाभज	भावज
१३३	१०	पिलो	पीलो

१३४	८	हाल	हालर
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	३	आनद	आनंद
१४२	१६	भारी	मारी
१४८	२	मंसा	मनसा
१४८	१२	तूटो	तूठो
१४८	१४	गली	गली में
१४८	१६	१०	७
१४८	१६	११	८
१४६	१	फल	फूल
१५०	६	सिवरू	सिवरूँ
१५३	५	रीझाते	रिझाते
१५४	२	किजो	कीजो
१५४	१४	सीलसा	सीलसाँ
१५४	१७	स्वाद	सवाद
१५५	७	कीरच कीरच	किरच किरच
१५५	७	हु	हुय
१५७	१	मध	मद
१५७	१०	बाकें	बाँके
१५८	८	मारू	×
१५८	६	जल्ला	जलाल रे
१५८	१२	कूड़िये	कुवड़िये

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५९	१	पेचा	पेचाँ
१६५	१४	आवे	आवे रे
१६६	१०	बीली	बोली
१७१	९	पूरुसों	पुरुषों
१७१	१०	पूरुष	पुरुष
१७१	१५	भल	हद
१७२	७	मांजे	मारा
१७२	१०	भली	हद
१७२	१०	॥	×
१७४	४	चाकण	चाखण
१७४	६	ढोलाजी	ढोलाजी ने
१७४	७	।	×
१७६	५	ओ लखाय	ओलखाय
१७८	७	भाभज	भावज
१८२	३	पज	॥पंजर

Printed by Baboo Ram Dass at the Union Press, Allahabad, and published by Th. Kishorsingh Gahlot "Sainik", Proprietor The Hindi Sahitya Mandir Jodhpur.